इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

नई दिल्ली

अंतर–विषयक एवं परा–विषयक अध्ययन विद्यापीठ **बीपीवाईसी–134**

खण्ड 3

अनुभववाद

खण्ड परिचय

(ब्रिटिश) अनुभववाद ग्रेट ब्रिटेन में 18वीं शताब्दी के उस दार्शनिक आन्दोलन को संदर्भित करता है, जिसके अनुसार समस्त ज्ञान अनुभव से आता है। कॉन्टिनेन्टल बुद्धिवादियों का मानना है कि ज्ञान सहज बुद्धि से ज्ञात आधारभूत अवधारणाओं, यथा– जन्मजात प्रत्ययों से निःसृत होता है। अन्य अवधारणाएं इन आधारभूत अवधारणों से निगमित होती हैं। ब्रिटिश अनुभववादियों ने जन्मजात प्रत्ययों को सिरे खारिज़ कर दिया और तर्क किया कि ज्ञान इन्द्रियानुभव और आन्तरिक मानसिक अनुभवों, यथा– भावनाओं और स्व–प्रतिबिम्बन दोनों पर आधारित होता है। बुद्धिवाद की तरह ही अनुभववाद अतिवादी विचार है। इसका मत है कि विश्व के बारे में समस्त आधारीय सत्य अनुभवजन्य है। इस प्रकार, बुद्धि का प्रतिस्थापन, अनुभव या इन्द्रियानुभव से कर दिया गया। इस खण्ड में प्रमुख ब्रिटिश अनुभववादी दार्शनिकों; लॉक, बर्कले और ह्यूम का अध्ययन किया जायेगा।

इकाई 8 "लॉक" के दर्शन पर है। लॉक को अनुभववाद का संस्थापक कहा जाता है। अनुभववाद का मानना है कि इन्द्रियानुभव ज्ञान का एकमात्र स्रोत है। लॉक के समय में पदार्थ की अवधारणा महत्वपूर्ण थी, और लॉक ने भी इसे पूर्णतः नकारने का प्रयास नहीं किया। उसने वृहद् अमूर्त की बजाय मूर्त विस्तार में सोचा। वह शब्दों, गलत पद्धति और इस प्राक्कल्पना कि दार्शनिक का काम अभिकल्पना है, के बन्धन से मुक्ति चाहता था।

इकाई 9 "बर्कले" ब्रिटिश दार्शनिक जॉर्ज बर्कले के मुख्य विचारों का वर्णन करती है। जॉर्ज बर्कले ने जॉन लॉक का अनुसरण किया। उनका ज्ञान–सिद्धान्त आलोचना का केन्द्रीय मुद्दा रहा है। इस इकाई में आप ज्ञानमीमांसा और तत्त्वमीमांसा के मुख्य और व्याकुल करने वाले मुद्दों के समाधान हेतु बर्कले द्वारा प्रस्तुत युक्तियों का अध्ययन करेंगे। यह इकाई उनके अनुभववाद और विषयीनिष्ठ प्रत्ययवाद को उद्घाटित करती है और उनकी प्रसिद्ध उक्ति 'एस्से एस्ट पर्सिपी" (होना अर्थात् प्रत्यक्ष का विषय होना) के अर्थ की व्याख्या का प्रयास करती है।

इकाई 10 "ह्यूम" के दर्शन पर है। ह्यूम का मानना था कि मानव प्रकृति का विज्ञान न केवल नीति, सौन्दर्य और राजनीति, अपितु गणित, प्राकृतिक दर्शन, और प्राकृतिक धर्म के क्षेत्रों में भी मूलभूत अंतःप्रज्ञा प्रदान करता है। मानवीय प्रकृति विज्ञानों का 'केन्द्र' है। प्राऋतिक विज्ञान में सफलतापूर्वक प्रयुक्त प्रायोगिक पद्धति का उपयोग मानव के अध्ययन में भी होना चाहिए।

इकाई 11 "अनुभववाद की आलोचनाएं" इस बात की परीक्षा करती है कि अनुभववाद किस तरह विज्ञान की मान्यताओं और पद्धतियों का बचाव करता है और किस तरह मन के बारे में पूरक सिद्धान्त को विकसित करता है। समस्त ज्ञान का स्रोत इन्द्रियानुभव मानते हुए और यह मानते हुए कि अनुभव बाह्यार्थ (बाह्य जगत) का एकमात्र प्रतिनिधि अथवा दर्पण है, अनुभववाद

देकार्त के प्रथम–व्यक्ति के दृष्टिकोण और इस अवधारणा कि व्यक्ति की अपनी स्वयं के इन्द्रियों तक विशिष्ट पहुँच है, का पोषण करता है। बुद्धिवादी दार्शनिक बहुधा दावा करते हैं कि अनुभववादी अनुभवों के मध्य कालिक एकता और आन्तरिक सम्बन्धों की उपेक्षा करते हैं, और वे अनुभव और उनके सम्भावित संचय की यदृच्छा सीमित अवधारणा स्वीकारते हैं।

अनुभववाद जिसका यह मानना है कि सभी ज्ञान अनुभव से निःसृत होता है, एक अतिवादी दार्शनिक विचार है। सभी प्रमुख ब्रिटिश अनुभववादी– लॉक, बर्कले और ह्यूम इस विचार को मानते हैं।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 8 लॉक*

रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 परिचय

8.2 अन्तर्जात प्रत्ययों का खण्डन

8.3 प्रत्ययों का सिद्धांत

8.4 प्रत्यक्ष का प्रतिनिधिक सिद्धांत

8.5 ज्ञान का सिद्धांत

8.6 आलोचनाएँ

8.7 सारांश

8.8 कुंजी शब्द

8.9 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

8.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

अनुभववाद के प्रवर्तक जॉन लॉक के दर्शन से परिचित करवाना इस इकाई का उद्देश्य है। इस इकाई की समाप्ति पर छात्र सक्षम होंगे;

* प्रो. जलालु हक़, दर्शन विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय। (यह इकाई बीपीवाई–008 की "लॉक" इकाई का संशोधित संस्करण है)। अनुवाद– वेदप्रकाश सिंह, फरीदाबाद।

- बुद्धिवाद और अनुभववाद में विभेद करने में, और
- इंद्रिय–अनुभव के महत्व पर लॉक द्वारा बल क्यों दिया गया, इसे समझने में।

8.1 परिचय

जॉन लॉक 1632 ई. में पैदा हुए थे। वे 1688 की क्रांति, जिसने इंग्लैण्ड में सफलतापूर्वक सुधार किए, के अग्रदूत थे। लॉक के अधिकतर कार्य 1688 के बाद के कुछ वर्षों में दिखाई पड़े। सैद्धांतिक दर्शन से सम्बधित उनकी प्रसिद्ध रचना *एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अन्डरस्टेण्डिग* है। यह कृति 1690 में प्रकाशित हुई।

लॉक अनुभववाद, जिसके अनुसार दर्शनिक ज्ञान का स्रोत केवल इंद्रिय अनुभव हो सकता है, के संस्थापक माने जा सकते हैं। द्रव्य का संप्रत्यय लॉक के समय मुख्य एवं प्रभावशाली विषय था। लॉक ने इसे अस्पष्ट एवं अनुपयोगी समझ कर नकार दिया। यद्यपि लॉक ने इसे पूर्णतः नकारने का भी प्रयास नहीं किया। उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व हेतु तत्वमीमांसक तर्क की वैधता को स्वीकार किया। लॉक ने अत्यधिक अमूर्तिकरण के स्थान पर मूर्त विवरण पर अधिक चिंतन किया। लॉक शब्दों, गलत विधियों और इस धारणा को कि दार्शनिकों का कार्य परिकल्पनाएं करना है, तोड़ना चाहते थे। इस प्रकार लॉक अपने प्रसिद्ध निबंध में पाठकों से कहते हैं, यह आकांक्षा ही बहुत है कि किसी निम्न श्रमिक की भांति ज्ञान के रास्ते में नीचे जमी गंदगी को साफ कर दिया जाए। आगे निबन्ध की पुस्तक 1 में वे कहते हैं कि यह कार्य धारणा, मत और सहमति के आधार और मात्रा का परीक्षण करना है।

8.2 अन्तर्जात प्रत्ययों का खण्डन

लॉक निबंध में अपने दर्शन का आरंभ अंतर्जात प्रत्ययों के सिद्धांत की आलोचनात्मक समीक्षा से करते हैं। पुस्तक–1 के अध्याय 2 में लॉक अंतर्जात प्रत्ययों के विरुद्ध अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं। वे प्लेटो. देकार्त और स्कालिस्टिक दार्शनिकों के विरुद्ध तर्क करते हैं। लॉक ने स्कालिस्टिक दार्शनिक सिद्धांत विशेषकर तादात्म्यता का सिद्धांत (जो है, वह वही है) और अंतर्विरोध का नियम (जो है, वह दोनों; हैं और नहीं हैं, नहीं हो सकता) पर प्रहार किया। चूँकि

ये सिद्धांत स्वयंसिद्ध होते हैं, अतः अंतर्जात प्रत्ययों के प्रतिपादकों ने अनुभूत किया कि वे अंतर्जात हैं या मन के आरम्भिक उपकरण हैं। लॉक ने तर्क दिया कि स्वयंसिद्ध एवं अंतर्जात होना एक बात नहीं है। लॉक कहते हैं कि ज्ञान विशेषों से आरंभ होता है और स्वयं का प्रसार धीरे–धीरे सामान्यों की ओर करता है। देकार्त एक बुद्धिवादी की तरह अतर्जात प्रत्ययों में विश्वास करते थे, जो प्रागनुभविक या संदेह से परे होते हैं। लॉक देकार्त के अंतर्जात प्रत्यय का निषेध यह कह कर करते हैं कि यदि ऐसा होता तो इनका ज्ञान सभी को होता। परंतु बच्चे और मूर्ख ऐसे ज्ञान का दावा कभी नहीं करते। कुछ बुद्धिवादी इस सिद्धांत में सुधार करके कहते हैं कि वैसे तो ये सभी मानवों में होते हैं किन्त सम्भव है कि कछ मानवों में इनका ज्ञान न हो। लॉक इसे भी नकार देते हैं और कहते हैं कि "कोई तर्कवाक्य तब तक मन में स्थित नहीं माना जा सकता जब तक कि उसे जाना न गया हो, जब तक कि उसकी चेतना न हो।" *(एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 1, अध्याय 1, खण्ड 5)। वे आगे कहते हैं कि यदि यह कहा जाय कि प्रत्यय होते हैं पर बिना बुद्धि के हम जान नहीं पाते, तो वे अंतर्जात कैसे हैं?

लॉक इस सिद्धांत के विरुद्ध थे कि कुछ प्रत्यय मन में ईश्वर या प्रकृति प्रदत्त होते हैं। इस सिद्धांत के प्रतिपादक कहते हैं कि अंजात प्रत्यय विशिष्ट प्रकार के सत्य होते हैं, एक विशेष प्रकार के सत्य होते हैं जो बाहर से आने वाले आकस्मिक प्रत्ययों से भिन्न होते हैं। इसे नकारते हुए लॉक कहते हैं कि न तो कोई अंतर्जात परिकल्पित सिद्धांत होते हैं और न ही अंतर्जात व्यवहारिक सिद्धांत होते हैं। वह सार्वभौमिक सहमति तर्क का खण्डन करते हैं। हमारे अधिकांश नैतिक सिद्धांत प्रथाओं और आदतों का परिणाम है। हमारे सभी प्रत्यय अनुभव जनित हैं। हम केवल यह कह सकते हैं कि मन में जान लेने की क्षमता हाती है, यह नहीं कि तर्कवाक्य उसमें पहले से विद्यमान रहते हैं। अंतर्जात सिद्धांत को नकारने के बाद लॉक ने अपने सिद्धांत प्रस्तुत किए। वे कहते हैं कि मन एक श्वेत पत्र के जैसा है; मन रिक्त होता है। यह टेबुला रासा है, एक रिक्त पटिटका है। अब प्रश्न है कि ज्ञान की सम्पूर्ण सामग्री और बुद्धि कहां से आती है? लॉक इसका एक शब्द में उत्तर देते हैं–अनुभव

8.3 प्रत्ययों का सिद्धांत

'प्रत्यय' लॉक के दर्शन का मुख्य विषय है। श्प्रत्ययश् पर उनके विचार निबंध की पुस्तक–प्प् में उद्धृत हैं। लॉक कहते हैं, "मैं इसके (प्रत्यय) द्वारा कल्पना, भावना या जाति अथवा वह सभी कुछ जिसे मन सोचने के लिए प्रयुक्त कर सकता है को अभिव्यक्त करता हूँ।" (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, परिचय, खण्ड 8)। लॉक के अनुसार प्रत्यय मानव के चिन्तन में प्रयुक्त बोध के विषय है। चिंतन में सभी संज्ञानात्मक क्रियाएं सम्मिलित हैं। प्रत्यय ज्ञान की समग्री तैयार करते हैं। प्रत्यय का अर्थ इस प्रकार से समझ सकते हैं–

1. बोध के त्वरित विषय
2. विश्व की वस्तुओं के संकेत या प्रतिनिधित्व
3. मन का रूपान्त्रण
4. अनुभव जनित

हमारे प्रत्यय दो स्रोतों से आते हैं (अ) संवेदन से और (ब) हमारी स्वयं की मानसिक संक्रियताओं, जिसे आंतरिक अनुभूति कह सकते हैं, के अनुचिन्तन या प्रत्यक्ष से। हमारी इंद्रियाँ मन तक कई विशिष्ट अनुभूतियाँ पहुँचाती हैं। इसे संवेदना कहते हैं। यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मन बाह्य वस्तुओं से प्रत्यय प्राप्त करता है। आंतरिक बोध या आत्मविश्लेषण में मन उपस्थित वस्तुओं से नहीं बल्कि स्वयं की आन्तरिक क्रियाओं के मंथन से प्रत्यय ग्रहण करता है। चिन्तन संशय, विश्वास और इच्छा करने की यही प्रक्रिया है।

लॉक सरल और जटिल प्रत्ययों में अंतर करते हैं। वे एक समान इंद्रिय अनुभव को सरल प्रत्यय कहते हैं। रंग, गंध, ध्वनि, संख्या, आदि सरल प्रत्यय हैं। ये वास्तविक अनुभव की चीजें हैं। लॉक कहते हैं कि सरल प्रत्यय की तुलना में, जिसमें मन अक्रिय रहता है, जटिल प्रत्यय बनाने में मन सक्रिय रूप से कार्य करता है। परंतु वे इस अंतर को स्पष्ट नहीं कर पाए। वे कहते हैं कि कुछ जटिल प्रत्यय अनुभव जनित होते हैं। कुछ प्रत्यय विभिन्न समन्वित संयोजनों

से निर्मित होते हैं। (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 2, अध्याय 12, खण्ड 1)। वे आगे फिर कहते हैं कि कुछ सरल प्रत्यय जैसे कि विस्तार जटिल अंतर्वस्तु से बने होते हैं। वे फिर अपने इस अन्तर में सुधार करते हुए कहते हैं कि कुछ प्रत्यय सरल होते हैं परंतु वे आणविक नहीं होते, जैसे देश और काल का प्रत्यय। लॉक कहते हैं कि प्रत्ययों की तुलना से मन सम्बन्धों के प्रत्यय पाता है और अमूर्तीकरण से सामान्य प्रत्यय पाता है। जटिल प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं–द्रव्य, पर्याय और सम्बन्ध के प्रत्यय। जटिल प्रत्यय सरल प्रत्ययों के संयोजन होते हैं। द्रव्य आधारभूत प्रत्यय है जिसमें सरल चीजें रहती हैं। द्रव्य का प्रत्यय एक तार्किक अनिवार्यता है। गुणों के आधार के लिये द्रव्य का होना अनिवार्य है। पर्याय का प्रत्यय द्रव्य पर निर्भर है। उदाहरणतः दर्जन या अंकों का प्रत्यय इकाई के प्रत्यय पर आधारित है और इसमें योग की संक्रिया होती है। हम इसे एक नाम देकर स्थिरता देते हैं। जटिल प्रत्यय सरल प्रत्ययों से निगमित होते हैं। मन में किसी वस्तु विशेष से परे देखने की क्षमता हाती है और मन तुलनात्मक क्रिया करता है। सम्बन्धों के सभी प्रत्ययों में कार्य–कारण का प्रभाव सबसे महत्वपूर्ण है। लॉक तादात्म्यता के संप्रत्यय को वस्तु और उसके सत के बीच का सम्बन्ध कहते हैं। विशेषण 'समान' और 'तद्रूप' विभिन्न वस्तुओं हेतु भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। हम सरल भौतिक तत्व की तादात्म्यता देश और काल में खोजते हैं। जटिल प्रत्यय के प्रकरण में हम जटिल प्रत्यय के संघटक तत्वों की तद्रपता के आधार पर तादात्म्यता स्थापित करते हैं। यंत्रों में तादात्म्यता उसके अंगों के संगठन या संरचना से निर्मित होती है। लॉक जब मानवों में व्यक्तिगत तदात्म्यता की बात करते हैं तो वे पारंपरिक दृष्टिकोण कि यह आत्मा की तदात्म्यता है को त्याग देते हैं। लॉक के अनुसार, व्यक्तिगत तादात्म्यता चेतना की तादात्म्यता से बनती है।

सामान्य प्रत्यय के बारे में लॉक कहते हैं कि कोई सामान्य प्रत्यय इंद्रिय अनुभव से प्राप्त नहीं होते हैं। हम ये प्रत्यय अमूर्तीकरण द्वारा बनाते हैं। जब हम किसी का अमूर्तीकरण करते हैं तो हम प्राप्त संप्रत्यय को सम्पूर्ण विशिष्ट वस्तुओं का मानक मान लेते हैं।

लॉक 'प्रत्यय' शब्द के कई अर्थ प्रस्तुत करते हैं इसलिये लगता है कि वे इसका उपयोग अस्पष्टता के साथ करते थे। तथापि यह अस्पष्टता अधिक महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि लॉक इन

सबका अर्थ एक ही मानते हैं। वे सभी ऐसे संकेत हैं, जो बाह्य विश्व के भौतिक वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। लॉक के प्रत्यय के विचार पर गिब्सन कहते हैं, ''उनके लिए प्रत्यय एक ही साथ अंतर्वस्तु का बोध है और बोधित अन्तर्वस्तु दोनों हैं'' (*लॉक'स थ्योरी ऑफ नॉलिज*, गिबसन, पृ. 19) प्रत्ययों की प्रकृति को ठीक से तथा और अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से प्राप्त करने के लिए और एक भेद पर विचार किया जाना चाहिए। यह भेद प्राथमिक और द्वितीयक गुणों के बीच का है। निबंध की दूसरी पुस्तक में लॉक प्राथमिक और द्वितीयक गुणों की परिभाषा देते हैं–भौतिक पदार्थ के प्राथमिक गुण वे हैं जो पदार्थ से किसी भी प्रकार से पृथक नहीं हो सकते। (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 2, अध्याय 8, बिन्दु 9, पृ. 161)। ऐसे गुण हैं– ठोसता, आकार, गति, विराम और संख्या। द्वितीयक गुण स्वयं में कोई विषय नहीं है बल्कि प्राथमिक गुणों की सहायता से प्राप्त संवेदन हैं। (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 2, अध्याय 8, खण्ड 10)। इसमें रंग, श्रवण, स्वाद, गंध आदि आते हैं। ये वस्तु से स्वयं सम्बन्धित नहीं होते। इन्हें हम प्राथमिक गुणों से प्राप्त करते हैं। प्राथमिक गुणों के हमारे प्रत्यय वस्तु से मिलते हैं। वे वास्तविक गुण हैं। प्राथमिक और द्वितीयक गुणों में एक अंतर यह है कि प्राथमिक गुण एक से अधिक इंद्रियों से अनभूत होते हैं, जबकि द्वितीयक गुण केवल एक इन्द्रिय से।

लॉक के अनुसार, वस्तुओं में एक तीसरे प्रकार का गुण भी होता है, जिसे शक्तियाँ कहते हैं। इन गुणों से पदार्थ प्राथमिक गुणों के गुण धारण करने की क्षमता पाते हैं। यह शक्ति विग्रह, बनावट और गति में परिवर्तन करती है और यह हमारी इन्द्रियों को ऐसे प्रभावित करती है कि हम विभोदों को समझ सकें। उदाहरण के लिए, आग की शक्ति ज्वलनशीलता शीशे को द्रवित कर देती है। इसे तृतीयक गुण कहते हैं।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणीः

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) अंतर्जात प्रत्ययों के सिद्धांत की लॉक द्वारा खंडन की समीक्षा करें।

.....

.....

.....

.....

2) लॉक के प्रत्यय सिद्धांत का संक्षिप्त विवरण दें।

.....

.....

.....

.....

8.4 प्रत्यक्ष का प्रतिनिधिक सिद्धांत

लॉक के प्राथमिक और द्वितीयक गुणों के भेद ने उनके प्रत्यक्ष के प्रतिनिधिक सिद्धांत को जन्म दिया। वे कहते हैं कि प्राथमिक गुणों के प्रत्यय इन्हीं गुणों की प्रतिलिपि होते हैं और इन्हीं गुणों के कारण होते हैं। ऐसा द्वितीयक गुणों के साथ नहीं है। प्राथमिक गुणों के बारे में लॉक लिखते हैं, प्राथमिक गुणों के प्रत्यय इन गुणों के प्रतिरूप होते हैं और उनके होने के ढंग स्वयं पदार्थ में वास्तविक रूप से उपस्थित होते हैं। (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 2, अध्याय 8, खण्ड 15)। प्रत्यय प्रत्यक्ष के तात्कालिक विषय है। व्यक्ति के चिंतन के समय यह बोध के विषय है। इंद्रिय अनुभूति सभी प्रत्ययों का स्रोत है। लॉक के अनुसार, भौतिक पदार्थ निष्क्रिय है और मन भी निष्क्रिय है। तब किस प्रकार भौतिक पदार्थ मानव से संपर्क करते हैं? लॉक इस समस्या का समाधान अपने प्रत्यक्ष के प्रतिनिधिक सिद्धांत से करते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, बाह्य वस्तु अथवा भौतिक पदार्थ अपनी प्रतिलिपि को सम्बन्धित

इंद्रियों द्वारा मन में भेजते हैं। यह प्रतिलिपि प्रत्यय कहलाती है और बाह्य वस्तु की प्रतिलिपि या प्रतिनिधि के रूप में कार्य करती है। प्रत्यय, मन और पदार्थ के बीच तीसरी वस्तु के रूप में जाने जाते हैं। प्रत्यय वस्तु का प्रतिनिधि होता है। फलस्वरूप मन बाह्य वस्तु को प्रत्यय के माध्यम से, जो कि एक प्रतिलिपी है, अनुभूत करता है। अतः संवेदना बाह्य वस्तुओं का प्रतीक रूप होती है। संवेदना भौतिक प्रदार्थ से उद्‌भूत होती है और वास्तविक वस्तु का प्रतिनिधित्व करती है।

प्रत्ययों की सत्य प्रतिलिपि के रूप में जाँच करने के लिए हमें वास्तविक स्वरूप को देखना अनिवार्य है, जो कि इस सिद्धांत में असंभव है। यदि हम गुणों को प्रत्यक्ष देखते हैं तो प्रत्यय अनावश्यक हो जाते हैं। इसलिए प्रतिनिधिक सिद्धांत नितांत कमजोर सिद्धांत है। यह प्रतिनिधित्व किन्हीं दो में से एक निष्कर्ष की ओर ले जाता है;

1. यह व्यक्तिपरक प्रत्ययवाद की ओर (बर्कले के समान) ले जाता है। जिसके अनुसर जब हमारा 'प्रतिलिपि' से तात्पर्य सादृश्यता से होता हैं तब केवल प्रत्यय ही ज्ञान के विषय होते हैं। तब फिर कैसे कोई प्रत्यय, जो प्रत्यय नहीं है, उसकी प्रतिलिपी हो सकता है।

2. दूसरा निष्कर्ष यथार्थवादियों द्वारा प्रस्तुत किया गया है। यथार्थवादी कहते हैं कि प्रतिनिधि के सिद्धांत ठीक नहीं है क्योंकि मन विषय को सीधे जान लेता है और प्रत्यय की इसमें आवश्यकता ही नहीं है।

प्रतिनिधिक सिद्धांत से उत्पन्न एक अन्य स्थिति संशयवादीयों की है। संशयवादी कहते हैं कि हम यह तो जानते हैं कि वस्तु है परंतु यह नहीं जानते कि वह क्या है। ह्यूम यही तर्क प्रस्तुत करते हैं।

एक प्रतिनिधिक सिद्धांत जैसा सिद्धांत वास्तव में क्या कहता है? प्रथमतः, यह कि हमारी अनुभूति उस दशा पर निर्भर है जिस दशा में हमने निणर्य लिए हैं। दूसरे, यह तथ्य कि किसी व्यक्ति को किन्हीं कारण से भ्रम हो सकता है भी दार्शनिकों को पुनः प्रतिनिधिक प्रत्यक्ष के सिद्धांत की ओर लेकर आता है। प्रत्यय यहां पदार्थ और मन के बीच की खाई को भर देता

है। वास्तव में, लॉक का प्रत्यय का सिद्धांत देकार्त के मन और शरीर के द्वैत को पूर्वकल्पित करके चलता है, यद्यपि लॉक ने इसे ज्ञान मीमांसक रूप दे दिया।

8.5 लॉक का ज्ञान–सिद्धांत

लॉक कहते हैं कि केंद्रीय समस्या मानव ज्ञान की प्रकृति और संभावित सीमा को जानने की है। लॉक के लिए जानना और निश्चितता को अलग नहीं किया जा सकता है। यदि कोई कुछ जानता है, इसका आशय है कि वह उसके बारे में निश्चित भी है। और यदि कोई किसी के बारे में निश्चित है, इसका अर्थ है कि वह उसे जानता है। पुस्तक–4 में वे कहते हैं, ष्मेरे लिए जानना और निश्चित होना एक ही बात है। जो मैं जानता हूँ, उस पर निश्चित हूँ और जिस पर निश्चित हूँ वह मैं जानता हूँ। जो ज्ञान मुझ तक पहुँचता हूँ, मैं सोचता हूँ कि वह निश्चितता है, जो निश्चितता से कम है मैं सोचता हूँ कि वह ज्ञान नहीं हो सकता। (जॉन लॉक, *द वर्क्स ऑफ जॉन लॉक*, वोल्यूम, 4, पृ. 145)। लॉक के लिए ज्ञान का सामान्य तत्व निर्णय अथवा चिंतन की वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी तथ्य को स्वीकार या अस्वीकार करने का निर्णय लिया जाता है। लॉक इस बात पर निश्चित हैं कि ज्ञान में संदेह जैसा कुछ नहीं होता है। जो हम एक बार जान लेते हैं, उस पर हम निश्चित होते हैं, और हम सुनिश्चित रह सकते हैं कि यहाँ ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है जो कि हमारे सारे ज्ञान को असत्य बना देगा या हमें संशय में डाल देगा। (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 4, अध्याय 16, खण्ड 3)।)

लॉक की प्रसिद्ध परिभाषा के अनुसार, प्रत्ययों के बीच संगति या असंगति या विरोधिता के सम्बन्ध के प्रत्यक्ष को ज्ञान कहते हैं। (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 2, अध्याय 21, बिन्दु 5)। इस शक्ति और हमारे मन में प्रत्ययों को स्वतः अनुभव करने की शक्ति और संकेतों के महत्व को समझने की शक्ति को हम अवबोध कहते हैं (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 2, अध्याय 21, खण्ड 5)। प्रत्यक्ष की शक्तियों को निर्मित करने वाले इस विशिष्ट प्रकार के अनुभव में लॉक परम निश्चितता पाते हैं, ''जहाँ यह अनुभूति है वहाँ ज्ञान है और जहाँ यह नहीं है, यद्यपि हम सोच सकते हैं, अनुमान कर सकते हैं फिर भी

वहाँ ज्ञान नहीं है।'' (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 4, अध्याय 1, खण्ड 2)। विभिन्न प्रकार के निर्णयों के माध्यम से हम अपने प्रत्ययों के बारे में सोचते, मानते, पूर्वकल्पित करते तथा सहमत–असहमत होते हैं, परंतु हम उनकी सहमति या असहमति का प्रत्यक्ष नहीं करते हैं।

लॉक दो प्रकार के ज्ञान की बात करते हैं– सहज ज्ञान और प्रदर्शनात्मक ज्ञान। सहज ज्ञान हम अपने प्रत्ययों के अवधान मात्र से प्राप्त करते हैं। यह ज्ञान स्वयंसिद्ध होता है। दूसरी ओर प्रदर्शनात्मक ज्ञान परोक्ष होता है। यह कुछ प्रमाणों पर निर्भर करता है। ''यदि हम अपने चिन्तन के ढंग पर विचार करें तो पाएंगे कि हम कभी किन्हीं दो प्रत्ययों में बिना किसी दूसरे प्रत्यय की सहमति देखते हैं तो कभी असहमति और मेरे विचार में हम इसे सहज ज्ञान कह सकते हैं। यह मन द्वारा वैसे ही अनुभूत होता है जैसे आँखें प्रकाश देखती हैं।'' (एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग, पुस्तक 4, अध्याय 2, खण्ड 1)। ज्ञान के इस रूप में संदेह, हिचकिचाहट या परीक्षण की कोई गुंजाइश नहीं होती है।

प्रदर्शनात्मक ज्ञान की बात करें तो, यह उतना विश्वसनीय नहीं होता जितना सहज ज्ञान। प्रदर्शनात्मक ज्ञान प्रत्येक स्तर पर बौद्धिक चिन्तन पर निर्भर रहता है। इसमें स्मृति का योगदान होता है। यह ज्ञान अधिकांशतः सहज अर्न्तदृष्टि की श्रृंखला पर आधारित होता है, जिसमें प्रत्येक की तुरन्त प्रत्यय आगे आने वाले प्रत्यय से सहमति अथवा असहमति होती रहती है। एक माध्यमिक सम्बन्ध प्रथम और द्वितीयक ज्ञान के बीच बना रहता है। लॉक हमारे सम्पूर्ण भ्रामक ज्ञान का कारण स्मृति में पाते हैं।

लॉक के अनुसार, प्रत्ययओं के मध्य सहमति ओर असहमति चार प्रकार से होती है।

1. तादात्म्यता और विभिन्नताः मन एक प्रत्यय और उसके सत् के बीच सहमति अनुभूत करता है और अन्य सभी के बीच असहमति। उदाहरण के लिए– श्वेत है काला नहीं।

2. सम्बन्धः मन अपने प्रत्ययों के मध्य सम्बन्ध देखता है, जैसे दो समानांतर भुजाओं पर बने कि समान आधार वाले दो त्रिभुज बराबर होते हैं।

3. सहअस्तित्वः समान विषयों में मन सहअस्तित्व और अ–सहअस्तित्व दोनों देखता है, – उदाहरण के लिए, सोने का विशिष्ट गुरुत्व और जलीय माध्यम में उसकी घुलनशीलता।

4. वास्तविक अस्तित्वः किसी प्रत्यय से सहमत होकर मन वास्तव में यथार्थ अस्तित्व देखता है। जैसे ईश्वर है।

लॉक कहते हैं कि हमारे ज्ञान की वस्तु सदैव किसी एक प्रतिज्ञप्ति या अनुमिति में होती है। यथार्थ अस्तित्व का ज्ञान वस्तुतः यथार्थ ज्ञान होता है परंतु ज्ञान बिना किसी यथार्थ अस्तित्व के निर्धारण के भी यथार्थ हो सकता है। द्रव्य के अपवाद को छोड़कर, हमारे ज्ञान की यर्थाथता सुनिश्चित है यदि प्रत्यय का संभव अस्तित्व हैं तो, लॉक के अनुसार, सभी सरल प्रत्ययों की यर्थाथता उनके सरल होने से ही सुनिश्चित है। इनमें से प्रत्येक प्रत्यय यर्थाथ भौतिक जगत के किसी न किसी तत्व या लक्षण से मिलता है।

जटिल प्रत्ययों की यर्थाथता के सम्बन्ध में द्रव्य के प्रत्यय को छोड़कर लॉक कोई भी कठिनाई नहीं पाते हैं। सम्बन्धों और पर्यायों के प्रत्यय मन की स्वतंत्र क्रिया से बिना किसी आद्यरूप से अनुरूपता के संदर्भ में बनते हैं। जो अव्याघाती नहीं है वह यथार्थ अस्तित्व रखने में सक्षम होते हैं।

लॉक का मानना है कि द्रव्य का यथार्थता का हम आसानी से प्रागनुभव नहीं कर सकते हैं। द्रव्य का हमारा ज्ञान वास्तविक है, यह हम केवल तभी कह सकते हैं जब द्रव्य का प्रत्यय हमारे अनुभव से निर्मित हों। लॉक कहते हैं कि हमारे पास यथार्थ अस्तित्व के तीन प्रकार के ज्ञान हैं। हमारे अपने अस्तित्व का सहज ज्ञान, ईश्वर के अस्तित्व का प्रदर्शनात्मक ज्ञान और उपस्थित विषय का हमारा इंद्रिय ज्ञान (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 4, अध्याय 3)।

सरल प्रत्ययों के सह–अस्तित्व से बने जटिल प्रत्ययओं के बारे में बात करते हुए लॉक कहते हैं कि हमें ज्ञान केवल (1) सहज ज्ञान द्वारा (2) बुद्धि द्वारा दो प्रत्ययों के मध्य सहमति असहमति के परीक्षण द्वारा (3) वस्तु विशेष के अस्तित्व की संवेदना द्वारा ही प्राप्त होता है (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 4, अध्याय 3, खण्ड 2)। ।

लॉक का नीतिशास्त्र बेंथम को आधार मानकर आगे बढ़ता है। यह सुखवादी है क्योंकि यह सुख–दुख के सम्बन्ध में शुभ और अशुभ की बात करता है। वह कहते हैं कि नैतिकता का प्रदर्शनात्मक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

लॉक उपदेशात्मक और तुच्छ या गौण प्रतिज्ञप्ति में भेद करते हैं। यहाँ लॉक काण्ट के विश्लेषणात्मक और संश्लेषणात्मक निर्णय के वर्गीकरण का पूर्वाभास करते हुए प्रतीत होते हैं।

गौण प्रतिज्ञप्ति में लॉक पूर्णतः तद्रूप (तत् रूप; उसी के रूप वाला) प्रतिज्ञप्ति को रखते हैं जिसमें पद स्वयं व्यक्त होते हैं। यद्यपि ऐसी प्रतिज्ञप्तियाँ निश्चित होती हैं, फिर भी उसमें केवल वाचिक निश्चितता होती है निर्देशन नहीं। तद्रूप प्रतिज्ञप्ति बस उतना ही बताती है जितना एक व्यक्ति जानने में सक्षम होता है। उदाहरण के लिये, समान पद समान होते हैं और समान प्रत्यय समान होते हैं। पुनः विश्लेषणात्मक प्रतिज्ञप्ति किसी नाम के अर्थ की व्याख्या किसी अज्ञानी को कर सकती है किन्तु यह व्याख्या केवल शाब्दिक होती है।

वाचिक निश्चितता से पृथक लॉक सभी उपदेशात्मक प्रतिज्ञप्तियों के संश्लेषणात्मक गुणों का निर्धारण करते हैं। ''हम सत्य जान सकते हैं और ऐसी प्रतिज्ञप्ति के सम्बन्ध में निश्चित हो सकते हैं जो किसी अन्य तथ्य का निर्धारण करती हैं जो कि अनिवार्य रूप से विशिष्ट जटिल प्रत्यय का परिणाम होता है, परंतु उसमें निहित नहीं होता है। यही वास्तविक सत्य है और इसके साथ उपदेशात्मक सत्य ज्ञान संप्रेषित होता है।'' (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 4, अध्याय 8, खण्ड 8)। ऐसी ही प्रतिज्ञप्तियों द्वारा हमें उसका ज्ञान होता है जो शब्द के सामान्य अर्थ से अधिक होता है।

हमें यथार्थ ज्ञान प्रदान करने के लिए हमारी प्रतिज्ञप्तियों के विधेय को उसके विषय के प्रत्यय के परे के तत्व को भी अभिव्यक्त करना चाहिए। प्रत्ययों का उनका परीक्षण तर्क और मनोविज्ञान का मिश्रण है, जिसमें तत्वमीमांसा का भी समावेश है। इस प्रकार लॉक मानव ज्ञान की सीमा तक पहुंचने हेतु कई रास्ते अपनाते हैं।

लॉक न हल होने वाली तीन समस्याओं के उदाहरण देते हैं

1. असीम वस्तु का ज्ञान हमारे सामर्थ्य से बाहर हैं। अर्थात सीमित मन असीमित वस्तुओं को नहीं जान सकता।

2. सारगर्भित वस्तुओं के सार भी हमारे ज्ञान के बाहर हैं।

3. प्रकृति कैसे कई घटनाओं को जन्म देती है और प्रजातियाँ चलती रहती हैं। तार्किक दृष्टि से हम किसी तथ्य को अबूझ नहीं कह सकते हैं, परंतु व्यावहारिक रूप से हम जानते हैं कि कुछ तथ्य आने वाले समय तक भी अबूझ बने रहेंगे।

8.6 आलोचनात्मक मूल्यांकन

1. अंतर्जात प्रत्ययों का विवाद, विशेष कर सार्वभौमिक एवं अनिवार्य सिद्धांत, अनुभववादियों के लिए समस्या है। आधुनिक मनोविज्ञान ने भी प्रदर्शित किया है कि कुछ प्रत्यय हमारे अवचेतन मन में हो सकते हैं।

2. द्रव्य के विचार ने लॉक के लिए कई समस्याएं खड़ी की। यह स्वीकारने पर कि द्रव्य कुछ है, पर वह क्या है हम यह नहीं जानते, वास्तव में हम यह स्वीकार कर रहे हैं कि मन या द्रव्य के सारतत्व के बारे में हम नहीं जानते। उदाहरण के लिए, जब हम कहते हैं कि 'यह एक सेब है' का आशय यह होता है कि वह लाल है, गोल है, रसदार है आदि। परंतु यह इन विशेषताओं के अतिरिक्त और क्या है? सामान्य बुद्धि के अनुसार यह वह वस्तु अथवा द्रव्य है, जिसमें ये सारे गुण आश्रय पाते हैं। अब, चूँकि हम ज्ञान इंद्रिय से पाते हैं, लॉक विवश होकर यह मानते हैं कि द्रव्य कुछ और नहीं बल्कि प्राथमिक गुणों के प्रत्ययों का एक संयोजन है। लॉक के पास साहस नहीं है कि वे दृढ़ता से भौतिक द्रव्य को स्वीकार या अस्वीकार करें। आध्यात्मिक द्रव्य के बारे में भी वे असहज हैं। परम्परागत धर्मशास्त्र के विरुद्ध न जाते हुए वह यह मानते हैं कि कुछ वस्तु है जिसके पास सोचने, जानने, संदेह करने, चलने, आदि की शक्ति है। यह कहने के कारण कि हमारे सभी प्रत्यय संवेदनाओं तथा चिंतन से आते हैं. द्रव्य के प्रत्यय ने लॉक के लिए बड़ी समस्या खड़ी की है। लॉक की द्रव्य के प्रत्यय को नकार पाने की अक्षमता ने उन्हें संगत अनुभववादी नहीं रहने दिया। फिर भी, लॉक को द्रव्य की

तत्वमीमांसक व्याख्या को निरस्त करने का श्रेय दिया जाना चाहिए। उन्होंने अपने मापनीय प्राथमिकत गुणों के विचार के द्वारा यथार्थ विश्व से व्यक्तिवादी घटकों को निकाल फेंका। वे पुस्तक 3, अध्याय 6 के 'ऑफ द नेम ऑफ सव्स्टेन्स' में सारतत्व के स्कालेस्टिक सिद्धांत का खण्डन करते हैं। हम इस इकाई को बर्ट्रेंड रसेल को उद्धृत करते हुए समाप्त कर सकते हैं कि उनके ख्लॉक के, दर्शन की अच्छाईयों और कमियों के उपरान्त भी उनके विचार महत्वपूर्ण है, न केवल उनके वैध विचार, वरन् उनकी गलतियाँ भी उपयोगी हैं।" (बर्ट्रेंड रसेल, *हिस्ट्री ऑफ वेस्टर्न फिलोसॉफी*, पृ. 585)

बोध प्रश्न 2

टिप्पणीः

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) लॉक के अनुभूति के प्रतिनिधिक सिद्धांत की आलोचनात्मक विवेचना करें।

.....

.....

.....

.....

2) लॉक के ज्ञान के सिद्धांत का परीक्षण करें तथा संगत अनुभववादी के रूप में उनकी समीक्षा करें।

.....

.....

.....

.....

8.7 सारांश

लॉक को अनुभववाद का संस्थापक कहा जा सकता है। अनुभववाद के अनुसार ज्ञान इंद्रिय अनुभव से उत्पन्न होता है। लॉक अपने से पूर्व के दार्शनिकों के इस विचार से कि प्रत्यय अंतर्जात होते हैं, सहमत नहीं थे। लॉक के अनुसार, मन सादा कागज़ है। मन में समझने की शक्ति है परंतु यह कहना गलत है कि इसमें पहले से कुछ होता है। ज्ञान की सामग्री अनुभव से आती है। जब मनुष्य सोचता है तब प्रत्यय उसके बोध के विषय होते हैं। हमारे प्रत्यय दो स्रोतों से आते हैं–संवेदन और चिंतन। लॉक सरल और जटिल प्रत्ययों में भेद करते हैं। सरल प्रत्यय सर्वाधिक आधारभूत भाव होते हैं और मन में इन प्रत्ययों को संयुक्त करके जटिल प्रत्यय बनाने की क्षमता होती है। जटिल प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं–द्रव्य, प्रयाय और सम्बन्ध । गुणों के आश्रय के रूप में द्रव्य का प्रत्यय अनिवार्य है। पर्याय का प्रत्यय द्रव्य पर निर्भर है। सम्बन्ध का प्रत्यय तुलना के द्वारा निर्मित होता है। सामान्य प्रतिज्ञप्तियों का प्रत्यय अमूर्तन से आता है। एक और भेद जो लॉक ने सझाया वह है प्राथमिक और द्वितीयक गण का। ठोस, आकार, गति, विराम, और संख्या प्राथमिक गुण हैं और इनका पाप संभव है तथा ये द्रव्य से पृथक नहीं किये जा सकते। ये वस्तुनिष्ठ होते हैं। रंग, श्रवण, स्वाद, गंध आदि द्वितीयक गुण हैं। ये व्यक्तिनिष्ठ होते हैं। प्राथमिक गुणों के प्रत्यय नहीं गुणों की सत्य प्रतिलिपि होती है। ये प्रत्यय बाह्य वस्तुओं की नकल या प्रतिनिधि होते हैं। इस प्रकार लॉक प्रत्यक्ष के प्रतिनिधि क सिद्धांत में विश्वास करते हैं। ज्ञान मीमांसा के सन्दर्भ में लॉक कहते हैं कि जो ज्ञान की शर्तों को पूरा करता है वही निश्चित होता है। हमारे विचारों से सहमति–असहमति और प्रत्यक्ष के सम्बन्ध में ज्ञान निहित होता है। ज्ञान तीन प्रकार का होता है–(1) सहज ज्ञान; जो आदर्श, सत्य और स्वतरूसिद्ध होता है, (2) प्रदर्शित ज्ञान जो सम्बन्धात्मक, विश्लेषणात्मक और अमूर्त हैं। इस श्रेणी में नैतिकता, ईश्वर का अस्तित्व और गणीतिय ज्ञान आता है। (3) संवेदनात्मक ज्ञान। इसका सम्बन्ध सम्वेदना के सरल प्रत्यय और जटिल प्रत्यय पर आधारित सह–अस्तित्व

से है। ज्ञान की सीमा बताते हुए लॉक कहते हैं कि हम प्रत्ययों से परे कोई ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते।

8.8 कुंजी शब्द

अनुभववाद : यह मान्यता कि सभी ज्ञान इंद्रिय अनुभव से उत्पन्न होते हैं।रू

प्रत्यय : एक विचार जो केवल मन में होता है या एक मानसिक बिम्ब जो यथार्थ को चित्रित करता है।

8.9 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

कॉनर, डी.जे.ओ., ऐडि., *ए क्रिटिकल हिस्ट्री ऑफ वेस्ट्रन फिलोसॉफी*, न्यूयार्क, द फ्री प्रेस, 1994.

गिब्सन, जेम्स, *लॉक्स थ्योरी ऑफ नॉलिज एण्ड इट्स हिस्टोरिकल रिलेसन्स*, केम्ब्रिज, कम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1917.

लॉक, निडिच, पी.एच., एडि., *एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अन्डरस्टेडिंग*, आक्सफोर्ड, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1975.

आर.आई. एरोन, *जॉन लॉक*, सेक. ऐडि., आक्सफोर्ड, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1955.

8.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) लॉक अपने दर्शन का आरंभ अपनी पुस्तक में अंतर्जात प्रतययों के सिद्धांत की आलोचनात्मक समीक्षा से करते हैं। पुस्तक–1 के अध्याय 2 में लॉक अंतर्जात प्रत्ययों के विरुद्ध तीन तर्क देते हैं। (अ) यदि मन में अर्न्तजात प्रत्यय है, जैसा कि बुद्धिवादी दावा करते हैं, तब सभी को उनका ज्ञान होना चाहिए। किन्तु बच्चों, मूर्ख ऐसे किसी ज्ञान का दावा कभी

नहीं करते। (ब) लॉक कहते हैं कि बुद्धिवादी इस आक्षेप से केवल यह कह कर नहीं बच सकते कि यद्यपि ये सभी में पाये जाते हैं कि किन्तु कुछ को इनका ज्ञान नहीं होता। यह कहना गलत है कि मन में कुछ है किन्तु उसका ज्ञान नहीं है। (स) यदि बुद्धीवादी यह कहे कि अनर्तजात प्रत्यय मन में होते हैं किन्तु उन्हें बुद्धि के द्वारा ढूंढ़ना पड़ता है तब उन्हें अंतर्जात नहीं कहा जा सकता। अतः अंतर्जात प्रत्यय जैसा कुछ नहीं होता है।

2) ज्ञान की सामग्री अनुभव से आती है। मानव चिंतन में प्रत्यय बोध का विषय होते हैं। हमारे प्रत्यय दो स्रोतों से आते हैं–संवेदन और चिंतन (जिसे हम आंतरिक इंद्रिय कह सकते हैं)। लॉक सरल और जटिल प्रत्ययों में भेद करते हैं। सरल प्रत्यय सर्वाधिक आधारभूत भाव होते हैं और मन में इन प्रत्ययों को संयुक्त करके जटिल प्रत्यय बनाने की क्षमता होती है। जटिल विचार तीन प्रकार के होते हैं– द्रव्य, पर्याय और सम्बन्ध। गुणों को आश्रय होने से द्रव्य का प्रत्यय अनिवार्य प्रत्यय है। प्रयाय का प्रत्यय द्रव्य पर निर्भर है। सम्बन्ध का प्रत्यय तुलना के द्वारा निर्मित होता है। प्रतिज्ञप्तियों का प्रत्यय अमूर्तन से होता है। एक और भेद जो लॉक ने सुझाया वह है प्राथमिक और द्वितीयक गुण का। ठोसता, आकार, गति, विराम और संख्या प्राथमिक गुण हैं और उनका माप संभव है तथा ये द्रव्य से पृथक नहीं किये जा सकते। वे वस्तुनिष्ठ होते हैं। रंग, श्रवण, स्वाद, गंध, आदि द्वितीयक गुण हैं। ये व्यक्तिनिष्ठ होते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) लॉक के अनुसार, भौतिक पदार्थ अक्रिय है और मन भी अक्रिय है। मन मानव के अन्दर होता है। भौतिक पदार्थ मानव मन से बाहर होते हैं। अब, मन निष्क्रिय होने से मानव से बाहर नहीं जा सकता और न ही बाह्य पदार्थ सीधे मन तक पहुंच सकते हैं तब फिर किस प्रकार भौतिक पदार्थ मानव मन से संपर्क करते हैं? लॉक इस समस्या का समाध न अपने प्रतिनिधिक सिद्धांत से करते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, बाह्य वस्तु अपनी छाया को अपनी प्रतिनिधि इंद्रियों द्वारा मन में भेजती है। यह छाया प्रत्यय कहलाती है और बाह्य वस्तु की छाया या प्रतिनिधि के रूप में कार्य करती है। अतः प्रत्यक्ष ज्ञान अपरोक्ष ज्ञान है। यह सिद्धांत वस्तुतः मन–शरीर के मध्य ज्ञानमीमांसात्मक द्वैत को स्वीकार करके आगे बढ़ता है।

2) ज्ञान मीमांसा के सम्बन्ध में लॉक प्रतिनिधिक सिद्धांत में विश्वास करते हैं। हमारे विचारों में सहमति–असहमति और उनके सम्बन्ध में ज्ञान निहित होता है। ज्ञान तीन प्रकार का होता है–(1) सहज ज्ञान; जो आदर्श, सत्य और स्वःसिद्ध होता है (2) प्रदर्शित जान; जो सम्बंधात्मक, विश्लेषणात्मक और अमूत होता है (3) संवेदनात्मक ज्ञान। इसका सम्बन्ध सम्वेदना के सरल प्रत्यय और जटिल प्रत्यय पर आधारित सह–अस्तित्व से है। ज्ञान की सीमा बताते हुए लॉक कहते हैं कि हम प्रत्ययों से परे कोई ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 9 बर्कले*

रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 परिचय

9.2 भौतिकवाद का खण्डन

9.3 अमूर्त विचारों का निरसन

9.4 दृश्यते इति वर्तते

9.5 ईश्वर और वस्तुओं का अस्तित्व

9.6 द्वैतवाद, निरीश्वरवाद और संशयवाद का खण्डन

9.7 सारांश

9.8 कुंजी शब्द

9.9 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य है,

- ब्रिटिश दार्शनिक जार्ज बर्कले के मुख्य विचारों के बारे में जानना।

* डॉ. सुधा गोपीनाथ, कोरामंगला, बैंग्लोर। (यह इकाई बीपीवाई–008 की "बर्कले" इकाई का संशोधित संस्करण है)। अनुवाद– वेदप्रकाश सिंह, फरीदाबाद।

- उनके अनुभववाद और व्यक्तिनिष्ठ प्रत्ययवाद का विवरण देना।
- उनके प्रसिद्ध कथन 'दृश्यते इति वर्तते' (esse est percipi) अर्थात् 'होने का अर्थ है अनुभूत होना' की व्याख्या करना।
- यह देखना कि बर्कले कैसे निरीश्वरवाद, भौतिकवाद, द्वैतवाद और संशयवाद का खण्डन करते हैं तथा कैसे सिद्ध करते हैं कि एकमात्र और सर्वव्यापी ईश्वर ही बाह्य विश्व के अस्तित्व का अकेला निर्धारक है।

8.1 परिचय

जान लॉक के आलोचक के रूप में तथा डेविड ह्यूम के पूर्ववर्ती के रूप में जार्ज बर्कले ने ज्ञानमीमांसा और तत्वमीमांसा के महत्वपूर्ण प्रश्नों के सम्बन्ध में एक सर्वथा मौलिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उल्लेखनीय मौलिकता से पदार्थ के अस्तित्व को नकारते हुए बर्कले ने दर्शन का एक प्रभावी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। जार्ज बर्कले एक आइरिस व्यक्ति थे जिनका जन्म 1685 में हुआ था। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा किलकैनी में लेने के बाद सोलह वर्ष की अवस्था में उन्होंने ट्रिनिटी कॉलेज में प्रवेश किया। यहां वे अपने कैरियर की पराकाष्ठा पर पहले स्नातक छात्र के रूप में और इसके बाद एक शिक्षक और शोधार्थी के रूप में पहुंचे। उन दिनों ट्रिनिटी बड़े स्तर पर न्यूटन–विज्ञान और देकार्त, लॉक, मिल, मैलब्रास के नये दर्शन से प्रभावित था। बर्कले अपनी प्रखर बुद्धि के साथ वैज्ञानिक व दार्शनिक क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। उन्होंने 1713 में लंदन की यात्रा की। यहाँ उन्होंने अपने समय के महान विद्वानों स्वीफ्ट, स्टिले, ऐडिसन और पॉप आदि पर विशेष प्रभाव छोड़ा। उन्होंने बरमूडा में कॉलेज की स्थापना की योजना बनाई। इस उद्देश्य से बाद में वे अमेरिका चले गये। तीन वर्ष (1728–31) रॉड आइसलैण्ड में व्यतित करने के बाद उन्होंने अपनी योजना को छोड़ दिया और इंग्लैण्ड लौट आये। उन्होंने नयी दुनिया की संभावनाओं को उद्वेलित किया। यहां उन्होंने कवितायें लिखीं। उनकी कविता की यह पंक्ति कि साम्राज्य (अमेरीका) पश्चिम के अन्वेषण और विस्तार की ओर पूर्व निर्दिष्ट रूप से अग्रसर है, बहुसंदर्भित है, जिसके कारण उनके नाम पर कैलीफोर्निया के एक कस्बे का नाम रखा गया।

1734 ई.वी. में वह दक्षिणी आयरलैण्ड में क्लोपने के बिशप बने। यहाँ उन्होंने सेवानिवृत्ति का जीवन जिया और एक विद्वान के रूप में पढ़ते हुए पुस्तकों को प्रकाशित किया और समय–समय पर अपने अभिलेखों को भी प्रकाशित किया। किसानों की निम्न आर्थिक स्थिति में सुधार लाने का प्रयास किया। 67 वर्ष की उम्र में जब बर्कले का स्वास्थ्य बिगड़ गया तो वे क्लायने से आक्सफोर्ड चले गये। एक वर्ष पश्चात् 1753 में अपने परिवार के साथ चाय पीते हुए उनकी मृत्यु हुई। उन्हें क्राइस्ट चर्च चोपेल आक्सोड में दफना दिया गया। उनके कुछ प्रसिद्ध लेखन कार्य हैं;

कॉमन पलेस बुक (1706–1708)

ए न्यू थ्योरी ऑफ बिजन (1709)

द प्रन्सिपल ऑफ ह्यूमन नॉलिज (1710)

द डायलॉग ऑफ हायलास एण्ड फिलोनाउस (1713)

एलिसिफ्रोन (1732) और साइरिस (1744)

अठ्ठाईस साल के बाद के उनके लेख कम प्रभावशाली थे। बर्कले ने सुन्दर और स्पष्टता के साथ लिखा।

बर्कले उस युग से सम्बन्ध रखते थे जबकि विज्ञान का विकास, भौतिकतावादी प्रवृत्ति, और नास्तिकतावाद अपनी जड़े जमाने लगा था। बर्कले एक धार्मिक पुरूष थे। बर्कले ने इस प्रवत्ति के विरूद्ध घोषणा की कि भौतिक जगत मूलतः आध्यात्मिक है और यह आत्म की क्रियात्मकता और ईश्वर की अच्छाई की अभिव्यक्ति है। यह आध्यात्मवाद उन्हें इतना स्पष्ट प्रतीत हुआ कि उन्होंने इसका बचाव तक करना आवश्यक नहीं समझा। इसके विपरीत भौतिकतावाद का निराकरण करना उनके लिए आवश्यक हो गया और उन्होंने लॉक के अनुभववाद में सम्मिलित विसंगतियों को दूर करने और उसे तार्किक निष्कर्ष तक पहुंचाने वाले कार्यों का निष्पादन किया।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणीः

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) बर्कले के जीवन और उनके कार्यों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

2) बर्कले की प्रमुख दार्शनिक समस्याओं को प्रकाशित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

9.2 भौतिकवाद का खण्डन

लॉक के सामान्य ज्ञान को दर्शन का प्रस्थान बिन्दु मानते हुए बर्कले ने दर्शन का सबसे विचारोत्तेजक दृष्टिकोण विकसित किया। इसे विषयीनिष्ठ आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद नाम दिया गया। इसके अनुसार, कोई भौतिक पदार्थ या कोई भौतिक वस्तु यथार्थ नहीं है। केवल मन और मन के प्रत्यय ही यथार्थ है। यह आश्चर्य जनक वाद लॉक के सिद्धांत की तीन सरल

बातों से आता है। प्रथम, लॉक का यह विचार कि द्रव्य का प्रत्यय निर्मित नहीं किया जा सकता क्योंकि वस्तु के केवल गुणों का ही सम्वेदन होता है। दूसरे, प्राथमिक व द्वितीयक गुणों के अन्तर केवल मन सापेक्ष होते हैं न कि वस्तु सापेक्ष। तीसरे के अनुसार, एक बार यह स्थापित होने पर कि ईश्वर के अतिरिक्त सम्पूर्ण ज्ञान मनुष्य से प्राप्त होता है अनुभव के अतिरिक्त किसी अन्य के अस्तित्व का प्रश्न ही नहीं उठता है। बर्कले ने तर्क दिया कि एक सुसंगत अनुभववादी को न केवल प्रत्यक्ष कारण के सिद्धांत की अवधारणा को निरस्त कर देना चाहिए बल्कि भौतिक वस्तुओं की धारणा को भी नकार देना चाहिए क्योंकि जो हम अनुभव करते हैं वह न तो वस्तु का करते हैं और न ही कारण का। हम केवल वस्तु द्वारा उत्पन्न प्रभावों (प्रत्ययों) का अनुभव करते हैं।

लॉक द्वारा निर्धारित अनुभववाद के मूल सिद्धांतों का उपयोग करते हुए बर्कले ने भौतिकवाद और निरीश्वरवाद को निरस्त करके आदर्शवाद को स्थापित किया। लॉक के इस दावे कि सम्वेदन और चिन्तन सभी ज्ञान का मूल है, और हम केवल प्रत्यय को ही जानते है का अनुसरण करने से वस्तु–जगत अग्राह्य हो जाता है। हमारी चेतना हम तक ही सीमित है और हमारे प्रत्ययों की इस मूर्त जगत से तुलना नहीं की जा सकती है। क्योंकि हम उनके स्वभाव और अस्तित्व से अनभिज्ञ हैं। बर्कले आगे कहते हैं कि यदि एक स्वतंत्र द्रव्य, जैसे कि भौतिक पदार्थ, और देश में स्थित जगत का अस्तित्व सम्भव हो तो अनन्त, शाश्वत और अपरिवर्तनीय वास्तविकता ईश्वर के साथ सह अस्तित्व में आ जायेगी और ईश्वर न केवल सीमित हो जाएगा बल्कि उसका अस्तित्व ही निषेधित हो जायेगा। भौतिक द्रव्य में विश्वास भौतिकवाद और निरीश्वरवाद को जनम देता है। इन्हें इस आधार वाक्य कि भौतिक द्रव्य का अस्तित्व है का निषेध करके के ही रोका जा सकता है।

9.3 अमूर्त विचारों का निरसन

पूर्ववर्ती आधुनिक दार्शनिकों के व्यवहार के अनुरूप बर्कले ने *प्रिन्सिपल ऑफ ह्यूमन नॉलिज* का आरम्भ अतीत की झूठी अवधारणाओं के निराकरण से किया। लॉक ने सहज विचारों को निरस्त किया था और बर्कले ने, अनुभववाद को आगे बढ़ाते हुए अमूर्त प्रत्ययों का खण्डन

किया। लॉक ने कहा कि केवल विशेष वस्तुओं का ही अस्तित्व है। फिर वे कहते हैं कि इन वस्तुओं की एक दूसरे के साथ तुलना करके सामान्य गुण जैसे विस्तार, रंग, गति, मानव, जानवर आदि को प्राप्त किया जा सकता है। लॉक विविध गुणों और भौतिक वस्तुओं को एक साथ बाँधे रखने वाले एक आधार का अस्तित्व स्वीकार करते हैं। यद्यपि उनका मानना था कि ऐसे आधार का प्रत्यक्ष अनुभव संभव नहीं है और न ही इस आधार तत्व के स्वरूप और इसमें उपस्थित हमारे अनुभव के प्रत्ययों के सत्य सम्बंधों को खोजा जा सकता है। बर्कले जोर देकर कहते हैं कि हम किसी भी तरह के अमूर्त प्रत्ययों का कभी अनुभव नहीं कर सकते हैं, और शब्द, जिसके द्वारा अमूर्त प्रत्ययों को निर्देशित किया जाता है, केवल नाम है क्योंकि वहाँ वास्तव में उनके अनुरूप कुछ भी नहीं है।

बर्कले ऐसे दार्शनिकों से क्षुब्ध थे जो वैज्ञानिकों के साथ मिलकर सरल वस्तुओं को कठिन बनाकर सामान्य लोगों में यह कर कि प्रत्यक्ष वास्तविकता को पकड़ने का प्रमाणिक ढंग नहीं है बल्कि उसे सार्वभौमिक अवधारणाओं की अनतर्दष्टि द्वारा ही जाना जा सकता है संदेह उत्पन्न करते थे। इस प्रकार के मत से ज्ञान की निश्चितता के प्रति संदेह उत्पन्न हुआ और इसने सन्देहवाद को जन्म दिया।

प्रचलित विज्ञान के द्वारा सत्य को जानने के बुद्धिवादी दृष्टिकोण पर बल देने से और लॉक के अज्ञेय द्रव्य के विचारों ने बर्कले को उकसाया। बर्कले नैतिकता व धर्म के कट्टर रक्षक थे। विज्ञान के देकार्तिय ढ़ग में विज्ञान निश्चित ज्ञान प्राप्त कराने में इन्द्रियों की दक्षता का विरोध करता है और इस तरह वैज्ञानिक नियम बुद्धि को सत्य प्राप्ति के एक मात्र साधन के रूप में स्वीकार करते हैं। बर्कले ने इस विचार के प्रति पूर्णतः असहमति व्यक्त की और तर्क दिया कि वैज्ञानिक स्वयं अनुभविक विधि का प्रयोग करते हैं और फिर भी निरन्तर उसके प्रति असन्तोष व्यक्त करते हैं। वह कहते हैं कि प्रत्यक्ष और सत्य के अपने बोध से वह (वैज्ञानिक) इन्द्रिय जगत द्वारा धारित निश्चित प्रत्यक्ष और असत्य की खोज के लिये अग्रसर होते हैं। इस अवस्था में, वास्तव में, वे अप्रत्यक्ष और असत्य के वास्तविक अस्तित्व को स्वीकार करते हैं और प्रत्यक्ष और सत्य के अस्तित्व की वास्तविकता, जिसके बोध से वे प्रारम्भ करते हैं, को नकारते हैं और इस प्रकार विरोधाभास को जन्म देते है। बर्कले वैज्ञानिकों के बुद्धिवादी दृष्टिकोण का विरोध

करते हैं क्योंकि निरिक्षण के बिना भौतिक विज्ञान का अस्तित्व असम्भव है। बर्कले सन्देहवादियों और नास्तिकों द्वारा धर्म और नैतिकता को पहुंचाई गयी हानी को अमूर्त प्रत्यय और भौतिक पदार्थ सम्बंधि विश्वासों में असंगति दिखाकर दूर करना चाहते थे।

ह्यूम ने बर्कले के द्वारा अमूर्त प्रत्यय के विचार के खण्डन को उस समय के बौद्धिक जगत की सबसे बड़ी और सबसे महत्वपूर्ण खोजों में से एक खोज माना है। स्वयं बर्कले ने अपने अमूर्त प्रत्यय के खण्डन को अभौतिकवाद के समर्थन में एक महत्वपूर्ण घटक के रूप से इसलिये स्वीकार किया क्योकि यदि हम (अदृश्य वस्तुओं में विश्वास का) व्यापक रूप से परीक्षण करें तो स्पष्ट होता है कि इसके मूल में अमूर्त प्रत्यय का सिद्धांत ही कार्य करता है।

बर्कले दो लक्ष्यों, तत्कालिक लक्ष्य व दूरस्थ लक्ष्य से संचालित थे। तत्कालिक लक्ष्य लॉक के निर्धार्य अथवा सामान्य वस्तुओं, जैसे किसी विशिष्ट लाल रंग, के विपरीत सामान्य लाल रंग, अथवा समकोण त्रिभुज व समबाहु त्रिभुज के विपरीत सामान्य त्रिभुज का खण्डन करना था। उनका दरस्थ लक्ष्य किसी भी प्रकार के सामान्य प्रत्यय के सिद्धांत का खण्डन करना था। बर्कले मूल रूप से विशेष प्रत्यय को स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। इस विचार के अनुसार, ऐसी वस्तुएं जो हमारे मन में या बाहर रहती हैं विशिष्ट होती हैं। ऐसा करने के पीछे उनका उद्देश्य स्कालिस्टिक तत्वमीमांसा में किसी न किसी ढंग से महत्वपूर्ण रही सामान्य की शाश्वत समस्या से अपने दर्शन को बाहर निकालना था। बर्कले ने घोषणा की कि न केवल आकारों, प्रजातियों अथवा सामान्यों का अस्तित्व नहीं होता है बल्कि स्वयं प्रत्यय भी शुद्ध रूप से विशिष्ट होते हैं। बर्कले के अनुसार, लॉक ने भी विशिष्टतावादी सिद्धांत का पालन किया किन्तु उनके सिद्धांत में विसंगति अन्तर्निहित थी। लॉक का विशिष्टता सिद्धांत, उदाहरण के लिये, लाल के प्रत्यय को लेकर एक दुविधा में था। परिभाषानुसार लाल का प्रत्यय अपने अन्दर अनेक वस्तुओं को अन्तर्निहित किये रहता है, अतः यह विशिष्ट हो ही नहीं सकता। इस सम्बन्ध में लॉक का प्रत्युत्तर है कि "सामान्य प्रत्ययों के प्रतिकों से निर्मित होने के कारण शब्द (लाल) सामान्य हो जाते हैं।'' (लॉक, *एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 3, अध्याय 3, खण्ड 6)। उन्होंने सभी मानसिक विषयों प्रत्यय सहीत. को एक साथ रखकर प्रत्यय का निर्माण किया और प्रत्यय को मानसिक चित्र के रूप में समझा। अधिक स्पष्ट शब्दों में,

मानसिक चित्र स्पष्टतः विशिष्ट है, किन्तु विशेष सामान्य प्रत्यय जैसे कि लाल या त्रिभुज को समाहित करने में सक्षम नहीं है। बर्कले के अनुसार, लॉक की इस सम्बन्ध में व्याख्या यह है कि इस प्रकार के चित्र में अपरिभाष्यता का गुण होता है। ''क्या त्रिभुज के सामान्य प्रत्यय को बनाने में कौशल और कठिन क्रिया की आवश्यकता नहीं होती... क्योंकि यह प्रत्यय न तो आयत होना चाहिए न समबाहु और न ही चतुर्भुज होना चाहिए वरन् इसे सब कुछ होना चाहिए किन्तु किसी एक को सब कुछ नहीं होना चाहिए। वास्तव में, यह अपूर्ण है जिसका अस्तित्व नहीं हो सकता है। यह एक ऐसा प्रत्यय है जहाँ अनेक विभिन्न और असंगत प्रत्यय एक साथ रखे होते हैं।'' (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 4, अध्याय 7, खण्ड 9; एवं द्रष्टव्य– बर्कले, *ए ट्रीटाइज कन्सर्निंग द प्रिन्सिपल ऑफ ह्यूमन नॉलेज*, परिचय (संक्षेपण– *पीएचक*), खण्ड 13)। इसलिए इसमें एक प्रकार की अन्तर्निहित अपरिभाष्यता दो ढ़गों से चली आती है। एक और त्रिभुज का चित्र विषमबाहु त्रिभुज या समबाहु त्रिभुज से पृथक एक त्रिभुज है और दूसरी ओर यह इन सब विरोधी गुणों के साथ एक त्रिभुज है। इस प्रकार, विशेष विषय–चित्र सभी विशिष्ट आकारों का अपवर्जन करता है और साथ ही साथ यह विशिष्ट आकारों का अध्यारोपित रूप भी है। इस पर बर्कले की आपत्ति यह है कि विशेष आकार से हटकर कोई अनिर्धारित विशेष नहीं होते और न ही विभिन्न विरोधी आकारों वाला कोई सामान्य प्रत्यय होता है। इस प्रकार, लॉक का चित्रवाद को आन्तरिक सामान्यता से संयुक्त करने का प्रयास विफल रहता है।

और अधिक स्पष्ट शब्दों में, बर्कले के अनुसार देश अथवा शुद्ध विस्तार जिसमें से न कोई रेखा, न कोई सतह, न कोई ठोसता का प्रत्यक्ष एक असम्भव घटना है और हम ऐसे किसी प्रत्यय का निर्माण नहीं कर सकते। ऐसे त्रिभुज के प्रत्यय का जो न समबाहु, न विषमबाहु न आयत और न ही समान्तर हो फिर भी सब हो और न इनमें से कोई एक हो अबोधगम्य है। त्रिभुज की परिभाषा, तीन रेखाओं वाला समतल सभी विशिष्ट त्रिभुजों की विशष्टिताओं को नकारते हुए सभी त्रिभुजों पर लागू होती है किन्तु इससे यह बिल्कुल भी आपादित नहीं होता है कि हमारे पास त्रिभुज का एक सामान्य अमूर्त प्रत्यय होता है। समान रूप से किसी रंग के अमूर्त प्रत्यय का निर्माण असम्भव है। संक्षेप में, सामान्य अमूर्त प्रत्यय एक असम्भव घटना

अनुभववाद का क्ड़ाई से पालन करते हुए बर्कले ने अर्मूत प्रत्यय को पूर्णतः निरस्त कर दिया। वह कहते हैं कि विभिन्न विशेष वस्तुओं के लिये किसी एक सामान्य प्रत्यय का निरूपण करना एक नाम मात्र प्रदान करना है। सामान्य प्रत्यय किसी तथ्य का वर्णन नहीं करता है। वह अपने इस सिद्धांत को नामवाद कहते हैं। नामवाद के अनुसार, अमूर्त प्रत्यय अथवा सामान्य प्रत्यय केवल नाम मात्र है। ऐसे शब्दों का प्रयोग करना जिनके अनुरूप कोई वास्तविक अनुभव न हो केवल शब्दों को यर्थाथ सत् के साथ मिलाकर भ्रम उत्पन्न करना है। वह कहते हैं कि केवल प्रत्ययों पर ध्यान लगाने से ही हम भटकाव से बच सकते हैं। (*पीएचके,* परिचय, खण्ड 25)।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणीः

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) बर्कले द्रव्य की अभौतिकता को कैसे स्थापित करते हैं?

.....

.....

.....

.....

2) बर्कले अमूर्त प्रत्यय के खण्डन से क्या प्राप्त करना चाहते थे?

.....

.....

.....

.....

9.4 दृश्यते इति वर्तते

दृश्यते इति वृत्ते बर्कले का आश्चर्यचकित करने वाला विचारोत्तेजक कथन है। इस कथन के अनुसार, अस्तित्वमान होने का अर्थ है प्रत्यक्ष होना अर्थात जिसका प्रत्यक्ष नहीं होता उसका अस्तित्व भी नहीं होता। स्पष्टतः यहाँ प्रश्न उठता है कि यदि अनुभूत न हो तब भी क्या वस्तुएं अस्तित्वमान रहती है। बर्कले के अनुसार, यह पूरा प्रकरण हमारी अस्तित्व शब्द की व्याख्या पर निर्भर करता है। वह कहते हैं; ''यह मेज जिस पर मैं लिख रहा हूँ और मानता हूँ कि अस्तित्वमान है अर्थात मैं इसे देखता हूँ और अनुभव करता हूँ; अब यदि मैं अपना अध्ययन समाप्त करके कमरे से बाहर आ जाता हूँ तब मैं कहता हूँ कि वह अभी भी अस्तित्वमान है; अर्थात यदि मैं अध्ययन कर रहा होता तो मैं उसका प्रत्यक्ष कर रहा होता अथवा कोई अन्य आत्मा उसका निरन्तर प्रत्यक्ष कर रही है।'' (पीएचके, भाग 1, खण्ड 3)। इस प्रकार बर्कले का मानना है कि हम 'अस्तित्व' शब्द के प्रयोग की ऐसी स्थिति की कल्पना नहीं कर सकते जबकि कोई न कोई आत्मा सतत रूप से उसका प्रत्यक्ष न कर रहा हो।

किसी अदृश्यमान विषय की असम्भावना लॉक के विषय के प्रत्यय से निगमित होती है। लॉक के अनुसार, भौतिक विषय ठोस, विस्तारवान, आकृतिमय, गति की शक्ति से सम्पन्न, रंगीन, भारी, स्वाद, घ्राण, ध्वनि सम्पन्न होता है। ये सभी गुण मूलतः विषय के प्रभाव है। भौतिक विषय ये गुण प्रत्यक्ष कर्ता विषयी में उत्पन्न करते हैं और इसलिये प्रत्यक्षकर्ता में निर्वतमान रहते हैं और स्वयं विषय में उपस्थित नहीं रहते हैं। चूँकि ये गुण विषयों में अन्तर्निहित नहीं होते हैं इसलिये द्वितीयक गुण कहलाते हैं। दूसरी ओर, ऐसे गुण भी है जो द्रव्य/विषय में अन्तर्निहित होते हैं। ये प्राथमिक गुण कहलाते हैं। विस्तार, आकृति, ठोसता, गति और स्थिति आदि ऐसे ही प्राथमिक गुण हैं। बर्कले लॉक के इस विभाजन का खण्डन करते हैं और कहते हैं कि तथा कथित प्राथमिक गुण भी वास्तव में द्वितीयकगुणों के समान ही हैं। वह कहते हैं कि प्राथमिक गुण जैसे कि ठोसता और विस्तार की उपलब्धि मूलतः स्पर्श से होती है और द्वितीयक गुणों के समान ही हमारे मन में इनके सम्वेद बन जाते हैं। विस्तार के प्रत्यय को रंग

आदि अन्य द्वितीयक गुणों से पृथक नहीं किया जा सकता। फिर, कोई भी विस्तारवान वस्तु बिना रंग के दृष्टिगम्य नहीं हो सकती है। अतः प्राथमिक गुण अपृथक ढंग से द्वितीयक गुणों से जुड़े हुए हैं। यदि हम किसी ज्ञेय पदार्थ जैसे कि मेज का परीक्षण करे तो हमें यह अनुभव नहीं होता है कि इसकी आकृति बाहर पृथक रूप से अस्तित्वमान है और इसका रंग अन्दर मन में अस्तित्व मान है। अतः, लॉक का प्राथमिक और द्वितीयक गुणों का भेद निरर्थक है। प्रत्यक्ष किसी रंग और विस्तार का नहीं होता वरन् विस्तारित रंगीन विषय का होता है।

लॉक का मानना था कि द्रव्य, या पदार्थ, संवेदित गुणों का आधार होता है। बर्कले के हायलास और फिलोनाउस के मध्य के फर्स्ट डायलॉग में हायलास लॉक के विचारों को प्रस्तुत करते हुए कहता है कि भौतिक आधार मुझे अनिवार्य प्रतीत होता है, जिसके बिना गुणों के अस्तित्वमान होने को नहीं समझा जा सकता। फिलोनस उत्तर देता है कि मुझे आधार शब्द कोई स्पष्ट अर्थ प्रदान नहीं करता और मुझे और स्पष्ट करके समझाइये कि आप इस शब्द से अक्षरशः अथवा लाक्षणिक अर्थ में क्या समझते हैं। हायलास, आधार शब्द की कोई निश्चित परिभाषा देने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं और कहते हैं; ''मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे नहीं पता कि मुझे क्या उत्तर देना चाहिए। फलतः निष्कर्ष निकलता है; अविचारणीय विषय (पदार्थ) का परम अस्तित्व एक निरर्थक शब्द है।'' (*पीएचके*, भाग 1, खण्ड 24) इसका यह अर्थ नहीं है कि संवेदित वस्तुओं का अस्तित्व नहीं है बल्कि यह अर्थ है कि संवेदित वस्तुओं का अस्तित्व अनुभूति सापेक्ष है। दूसरे शब्दों में, केवल प्रत्यय का ही अस्तित्व है। इसमें बर्कले यह जोड़ते हैं कि हम जो कुछ भी अनुभूत करते हैं, सुनते हैं या समझते हैं वह सदैव संरक्षित रहता है और पूर्णतः सत् होता है। (*पीएचके*, भाग 1, खण्ड 34) प्रश्न है कि तब फिर वह यह क्यों कहते हैं कि वस्तुएं नहीं प्रत्यय सत् है। बर्कले का उत्तर है कि ऐसा पदार्थ के अनुपयोगी प्रत्यय का निराकरण करने के लिये कहा जाता है; ''मैं किसी इन्द्रिय अथवा अनुचिन्तन से बोधित वस्तु के अस्तित्व का खण्डन नहीं करता हूँ... मैं केवल दार्शनिकों द्वारा प्रस्ताविक पदार्थ अथवा भौतिक द्रव्य के अस्तित्व का खण्डन करता हूँ।'' (*पीएचके*, भाग 1, खण्ड 35)

चूंकि बर्कले के समय का विज्ञान, विशेष रूप से भौतिक विज्ञान, पदार्थ की अवधारणा पर बड़े स्तर पर निर्भर था, इसलिये उन्होंने उसकी मूलभूत परिकल्पनाओं और प्रविधियों को चुनौती

देने की अनिवार्यता का अनुभव किया। बर्कले वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोग में लाये जा रहे, विभिन्न सामान्य और अमूर्त प्रत्ययों, जैसे कि ये किसी वास्तविक सत् को निर्देशित करते हो, विशेषरूप से प्रकृति के मूल में स्थित किसी भौतिक तत्व (पदार्थ) के स्वीकार किये जाने को लेकर, सर्वाधिक दुखी थे। उन्होंने ऐसे किसी आधारभूत (अमूर्त) तत्व का भ्रामक रूप से अवलोकित गुणों से अनुमित होने के कारण खण्डन किया। वह कहते हैं कि ऐसा अनेक गुणों के एक साथ साहचर्य की अनुभूति होने के कारण है। अतः, उदाहरण के लिये, एक निश्चित रंग, गन्ध, स्वाद, आकृति और विभिन्न गुणों की नियत साहचर्यता को एक विशिष्ट वस्तु, जैसे कि सेव, का नाम दे दिया जाता है। इसी प्रकार अन्य वस्तुएं भी भिन्न गुणों के संग्रह मात्र है। (*पीएचके*, भाग 1, खण्ड 1) उनकी आकांक्षा वैज्ञानिक भाषा के विभिन्न पदों जैसे कि बल, गुरुत्व, कारणता को स्पष्ट करने की थी। वह कहते हैं कि ये पद प्रत्ययों के संग्रह से अधिक कुछ नहीं हैं और इन्हें हमारा मन सम्वेदों से प्राप्त करता है।

बर्कले ने जितना अधिक अपने मन की क्रियाविधि का परीक्षण किया और उसके प्रत्ययों का बाह्य विषयों से सम्बध का विश्लेषण किया वह उतना ही अधिक प्रत्ययों से स्वतन्त्र विषयों के अस्तित्व को खोजने में असफल हुए। वह कहते हैं कि जब भी हम पूर्ण प्रयास से बाह्य विषयों के अस्तित्व को ग्रहण करने का प्रयास करते हैं हम सदैव केवल अपने प्रत्ययों पर ही विचार कर रहे होते हैं। बाह्य जगत में ऐसा कुछ नहीं है जिसकी हमें अनुभूति न हो सके। अन्त में, बर्कले कहते हैं कि प्रत्यय केवल प्रत्यय के समान ही हो सकता है और इसलिये जब लॉक यह कहते हैं कि प्रत्यय और वास्तविक विषय भिन्न–भिन्न होते हैं; मानसिक होने से प्रत्यय और वास्तविक होने से पदार्थ तथा मानसिक और भौतिक दोनों प्राकृतिक रूप से एक दूसरे से भिन्न होने से लॉक के विचारों में एक विरोधाभास चला आता है। बर्कले कहते हैं कि यदि मन और विषय एक दूसरे से भिन्न है और फिर यदि यह माना जाए कि ज्ञान विभिन्नताओं की समानता पर आधारित है तो यह एक तार्किक विसंगति है। यदि मेरे प्रत्यय मेरे मन से बाहर विषयों के अनुरूप हैं तब इसे किसी अन्य मन में किसी अन्य प्रत्यय के रूप में होना चाहिए। अब, बर्कले लॉक के प्राथमिक और द्वितीयक गुणों के भेद का खण्डन करके वास्तव में सम्पूर्ण प्रतिनिधिकात्मक यर्थाथवाद के तन्त्र का खण्डन कर देते हैं।

9.5 ईश्वर और वस्तुओं का अस्तित्व

बर्कले कहते हैं कि वस्तुओं को अस्तित्वमान होने के लिए उनका अनुभव होना अनिवार्य है। वस्तुएं मेरे प्रत्यक्ष के अनुरूप होती हैं। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि जब मैं वस्तुओं को नहीं देख रहा होता तो मैं कैसे जानता हूँ कि वे तब भी अस्तित्व में है, या नहीं। अब चूँकि बर्कले ने न तो वस्तुओं के अस्तित्व को नकारा है और न ही उनकी आपसी स्थिति और क्रम को नकारा है तब बिना अनभति के वस्तओं के अस्तित्व को सत कसे माना जा सकता है? इसके उत्तर में बर्कले कहते हैं कि जब मैं अपने मन से बाहर वस्तुओं के अस्तित्व को नकारता हूँ... तब वह अन्य मनों... में प्रत्यक्ष हो रही होती है। (*थ्री डायलॉग बिटवीन हायलस एण्ड फिलोनस,* डायलॉग 3)। और यदि वस्तुएँ किसी भी अन्य मन द्वारा प्रत्यक्ष नहीं हो रही हो तो उन्हें देखने के लिये एक सर्वशक्तिशाली, अनन्त मन (ईश्वर) होता है। ईश्वर सभी वस्तुओं के बारे में जानता है और समझाता है, और उन्हें हमारे सम्मुख कुछ इस ढंग से, कुछ नियमानुसार रखता है जैसे कि उसने उन्हें ऐसे ही अस्तित्वमान होने के लिये बाध्य किया है और जिन्हें हमने प्रकृति के नियम नाम दे दिया है। (*थ्री डायलॉग बिटवीन हायलस एण्ड फिलोनस,* डायलॉग 3)।

वस्तुतः, वस्तुओं का अस्तित्व ईश्वर के अस्तित्व पर निर्भर है और ईश्वर ही प्रकृतिक में उपस्थित क्रमबद्धता का कारण है।

बर्कले कहते हैं कि अस्तित्व को अनुभूति के रूप में व्याख्यायित करके मुझे ज्ञान होता है कि जगत में मेरे समान ही अन्य व्यक्ति भी अस्तित्वमान है और उनके पास भी मन है। वे भी मेरे समान ही प्रत्ययों को धारण करते हैं। लेकिन मेरे और मेरे जैसे अन्य सीमित मनों से ऊपर एक भिन्न असीमित मन, ईश्वर है। प्रकृति में नियमबद्धता मूलतः ईश्वर के प्रत्ययों के कारण ही है। फिर, मानव मन में ईश्वर–प्रत्यय होता है जिसे वह अन्य मानवों को सम्प्रेषित करता है। अतः, मनुष्यों के दिन–प्रतिदिन के अनुभवों का कारण ईश्वर है न कि पदार्थ अथवा द्रव्य। यह ईश्वर ही है जो सीमित मनों के सभी अनुभवों को संयोजित करते हैं और अनुभव में नियतता और निर्भरता सुनिश्चित करते हैं। फलतः, हम प्रकृति के नियमों के अन्तर्गत ही सोचते हैं।

यद्यपि, सीमित मन और दिव्य मन भिन्न होने के कारण ईश्वर मन के तर्कसंगत और स्पष्टता से व्यवस्थित प्रत्ययों और ईश्वर मन द्वारा मानव–मन में संचारित प्रत्ययों में अन्तर होता है। अतः, परम सत् स्वभावतः आध्यात्मिक है, न कि भौतिक और विषयों का निरन्तर अस्तत्व ईश्वर के उनके निरन्तर प्रत्यक्ष पर आधारित है। बर्कले प्रत्ययों के ईश्वर–मन से मानव–मन में उत्पन्न होने की व्याख्या करने में कारणता की विशिष्ट व्याख्या करते हैं। वह इस तथ्य का विरोध नहीं करते कि हमारे अन्दर कारणता की अन्तर्दृष्टि है, वरन् यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारे इन्द्रिय सम्वेद किसी विशिष्ट कारणता शक्ति को हमारे सम्मुख उपस्थित नहीं करते। केवल हमारी मानसिक संक्रियाओं के द्वारा हम इन कारण–सम्बन्धों को समझते हैं।

9.6 द्वैतवाद, निरीश्वरवाद और संशयवाद का खण्डन

बर्कले कहते हैं कि उनका प्रत्ययवाद दर्शन के विभिन्न प्रकार के अस्पष्ट व गूढ प्रश्नों को समाप्त कर देता है। मानव ज्ञान को प्रत्ययों और आत्मा के ज्ञान के स्तर पर लाने के साथ–साथ बर्कले मन में उपस्थित विषय (अबोधगम्य विषयों) और मन से बाहर के विषय (वास्तविक विषयों) के मध्य के द्वैतवाद का खण्डन करते हैं। यह द्वैतवाद ही संदेह की जड़ होती है, क्योंकि हम यह कैसे जान सकते हैं कि ज्ञात (प्रत्यक्ष) वस्तुएं अज्ञात (अप्रत्यक्ष) वस्तुओं को कैसे सिद्ध कर सकती हैं। यदि रंग, आकृति, गति, विस्तार आदि मन से स्वतंत्र वस्तुओं को निर्देशित करती हैं, तो केवल प्रतीति का ही प्रत्यक्ष होता है न कि वस्तुओं के वास्तविक गुणों का। इन्द्रियों की यही अविश्वसनीयता संशयवाद को जन्म देती है और यह संदेहवाद ही प्रत्ययवादी सिद्धांत से खंडित होता है।

बर्कले कहते हैं कि द्रव्य का सिद्धांत ही निरीश्वरवाद के प्रसार के लिये उत्तरदायी है। भौतिकतावाद के खण्डन से निरीश्वरवाद का सम्पूर्ण ढांचा धराशायी हो जाता है। वह कहते हैं कि यदि स्व अस्तित्व, निष्क्रिय, अविचारित द्रव्य सभी विषयों का मूल है तब स्वाभाविक रूप से स्वतंत्रता, बौद्धिकता ओर अभिकल्प को ब्रह्माण्ड निर्माण से बाहर रखना पड़ेगा। बर्कले ने यह भी अनुभव किया कि भौतिक पदार्थ को स्थायी सत् मानने के कारण ही मूर्ती पूजा अस्तित्व में आती है। यदि सम्वेदित विषय केवल सम्वेदनाओं के समूह मात्र हो तो मनुष्य के लिये अपने

ही प्रत्ययों की पूजा करना हास्यास्पद होगा। यदि भौतिक पदार्थ के वास्तविक सत् को उजागर कर दिया जाये तो केवल ऐसा भौतिक तत्व उभर कर सामने आता है जो प्रत्ययों अथवा गुणों का संयोजन मात्र है, तब भौतिक पदार्थ को पुर्नस्थापित करना असम्भव हो जाता है। इससे बर्कले पूर्णतः सहमत थे कि यदि पदार्थ, निरीश्वरवाद, मूर्तिपूजा और अधर्मिकता की परिकल्पनाओं को ध्वस्त कर दिया जाये तो वे बिना किसी प्रमाण के स्वतः ही नष्ट हो जाएंगे। बर्कले पूर्ण रूप से आश्वस्त थे कि अपने दृश्यते इति वृतते के सिद्धांत के द्वारा दार्शनिक भौतिकवाद और धार्मिक संशयवाद कि स्थिति को उन्होंने कमजोर बना दिया है। लॉक के अनुभववाद पर खड़े होकर बर्कले इस निर्णायक बिन्दू पर पहुंचे कि मानव मन सदैव अनुभवों पर ही कार्य करता है और अमूर्त प्रत्यय किसी यथार्थ सत्ता को निर्देशित नहीं करते। ह्यूम, जिन्होंने अनुभववाद को शीर्ष पर पहुचाया, बर्कले के बारे में कहते हैं कि बर्कले ने एक महान दार्शनिक के रूप में अपने से पूर्व के विवादास्पद मुद्दों को खण्डित किया और निश्चित किया कि सामान्य प्रत्यय विशेष प्रत्यय के अतिरिक्त और कुछ नहीं है... मैं इसे सतरहवीं और अठ्ठारहवीं शताब्दी के बौद्धिक समुदाय के दार्शनिकों में सबसे महत्वपूर्ण और मूल्यवान उपलब्धि मानता हूँ। (ह्यूम, *ए ट्रीटाइज ऑफ ह्यूमन नेचर*, पुस्तक 1, भाग 1, खण्ड 7)।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणीः

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) क्या बर्कले ने लॉक के प्राथमिक व द्वितीयक गुणों के अन्तर को स्वीकार किया?

.....

.....

.....

.....

2) बर्कले के अनुसार दृश्यते इति वृतते क्या है?

.....

.....

.....

.....

9.7 सारांश

इस इकाई में हमने बर्कले के दर्शन के मुख्य सिद्धांतों को समझने का प्रयास किया है। बर्कले एक अनुभववादी थे और उनके दर्शन को विषयीनिष्ठ आदर्शवाद कहा जाता है। उन्होंने अमूर्त प्रत्ययों व भौतिक वस्तुओं के वास्तविकता के सिद्धांतों का खण्डन किया है। उन्होंने प्रसिद्ध सिद्धांत दृश्यते इति वृतते का प्रतिपादन किया। इसके अनुसार, वस्तुएं मानव अनुभूत जगत में बाह्य रूप से विद्यमान नहीं है वरन् मानव की अनुभूति में है। दूसरे शब्दों में, मानव–मन में उपस्थित प्रत्यय ही वास्तविक सत् है। बर्कले का ईश्वर के अस्तित्व के प्रति दृष्टकोण इसलिये चर्चा का विषय बना क्योंकि उनका मानना है कि बाह्य जगत का अस्तित्व ईश्वर द्वारा उसे शाश्वत रूप से प्रत्यय करते रहने से है। बर्कले ने इसे द्वैतवाद, निरीश्वरवाद और संशयवाद के खण्डन के द्वारा स्थापित किया।

9.8 कुंजी शब्द

अनुभववाद : ज्ञानमीमांसा में वह सिद्धान्त जिसका मानना है कि ज्ञान के स्रोत हमारी पांच ज्ञानेन्द्रियां (आंख, नाक, कान, जीभ, त्वचा) हैं, और अनुभव के पूर्व या परे कोई ज्ञान सम्भव नहीं।

विषयीनिष्ठ (व्यक्तिनिष्ठ) प्रत्ययवाद : वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसका मानना है कि साधारण भौतिक वस्तुओं के अस्तित्व की शर्त है उनका आनुभविक होना। सभी सत मन–सापेक्ष (मन पर निर्भर) है, जिसका आशय है कि वस्तु या तो मनुष्य के मन में या फिर ईश्वर के मन में अस्तित्ववान है।

9.9 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

ऐयरस, एम., *लॉक,* वोल्यू–2, चंदन, राउटलेज एण्ड केगन पॉल, 1991.

बन्नेट, जे., *लॉक, बर्कले, ह्यूमः सेन्ट्रल थीम्स,* आक्सफोर्ड, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1971.

जेन्सी, जे., *बर्कलेः एन इन्ट्रोडक्शन,* आक्सफोर्ड, ब्लैकवैल, 1987.

फ्लेज, डी.ई., *बर्कलेस डाक्ट्राइन ऑफ नोशनस,* बकेनहेम, क्रूम हेम, 1987.

फोस्टर, जे., *द केस ऑफ आइडियलिज्म,* राउटलेज एण्ड केगन पाल, 1982.

ग्रेयलिंग, ए.सी. *बर्कलेः द सन्ट्रल आरग्यूमेन्ट्स,* लन्दन, डाकवर्थ, 1986.

मारटिन, सी.बी. एण्ड आर्मस्ट्रोंग डी.एम., एडि., *लॉक एण्ड बर्कले,* चंदन, मेक्मिलन, 1968.

पिचर, जी. *बर्कले,* लंदन, राउटलेज एण्ड केगन पाल, 1977.

आर्मसन, जे.ओ., *बर्कले,* आक्सफोर्ड, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1982.

वार्नोक, जी.जे., *बर्कले,* हारमोण्डसवर्थ, पेन्यून बुक्स, 1953.

वाइलड, जान, *जॉर्ज बर्कले,* मेसेच्यूसेट, हावर्ड यूनिवर्निटी प्रेस, 1936.

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) जार्ज बर्कले एक आइरिस व्यक्ति थे। उनका जन्म 1685 में हुआ था। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा किलकैनी में सम्पन्न करने के बाद वह ट्रिनिटी कॉलेज पहुंचे। सोलह साल की अवस्था में ही वे पहले स्नातक के रूप में और इसके बाद एक शिक्षक और तेरह सालों तक शोधकर्ता के रूप में अपने कैरियर की पराकाष्ठा पर पहुँचे। 1934 में वह क्लोयने के विशप बने। यहाँ उन्होंने विद्वतपूर्ण कार्य किए। उनके मुख्य लेखन कार्यों में कामनप्लेस बुक, ए न्यू थ्योरी ऑफ विजन, प्रन्सिपलस ऑफ ह्यूमन नालिज, द डायलोग्स ऑफ हायलास एण्ड फिलोनस, ऐलिसिफ्रोन डन सिनस सम्मिलित है। स्वास्थ्य बिगडने से वे आक्सफोर्ड चले गये, जहाँ 1753 में उनकी मृत्यु हो गई। वे सभी के द्वारा बड़े विद्वान और सहाचारी पुरुष के रूप में स्वीकृत किये गये।

2) बर्कले के समय में वैज्ञानिक विकास के चलते भौतिकवाद और निरीश्वरवाद का प्रभाव बड़ता जा रहा था। बर्कले एक धार्मिक व्यक्ति थे। उन्होंने निरीश्वरवादी विचारों का यह कह कर खण्डन किया कि भौतिक जगत स्वभावतः आध्यात्मिक है और यह सृष्टि ईश्वरीय अच्छाई की अभिव्यक्ति सम्मत भावना है। उन्होंने लॉक के अनुभववाद की विसंगतियों को भौतिक द्रव्य का खण्डन करके दूर किया और अपने विशिष्ट दर्शन को विकसित किया।

बोध प्रश्न 2

1) बर्कले ने भौतिक द्रव्य की असम्भावना को यह कह कर नकार दिया कि केवल अनुभूत वस्तुओं को ही जाना जा सकता है और द्रव्य का प्रत्यय यह योग्यता पूरी नहीं करता है। फिर उन्होंने लॉक के प्राथमिक गुणों और द्वितीयक गुणों के भेद का भी खण्डन किया। बर्कले ने स्वीकार किया कि सम्पूर्ण ज्ञान का आधार केवल अनुभव ही है और अनुभव से परे किसी वस्तु का अस्तित्व सम्भव नहीं है।

2) बर्कले अमूर्त प्रत्यय का खण्डन दोहरे उद्देश्य से करते हैं। प्रथम, वे लॉक के सामान्य प्रत्यय सिद्धांत जैसे कि लाल वस्तुओं से प्रथक सामान्य लाल रंग अथवा विशिष्ट त्रिभुजों से प्रथम सामान्य प्रतिनिधिक त्रिभुज का खण्डन करना चाहते थे। दूसरे, वे यह सिद्ध करना चाहते थे कि सबकुछ विशेष है। इसके लिये उन्होंने पूराने अन्तर्निहित सामान्यता के प्रत्यय को

असिद्ध किया। उन्होंने कहा कि कोई सामान्य प्रत्यय नहीं होता है सभी प्रत्यय विशिष्ट होते हैं।

बोध प्रश्न 3

1) लॉक के अनुसार भौतिक विषय के कुछ निश्चित गुण होते हैं। कुछ गुण जैसे कि रंग, गन्ध, ध्वनि, स्वाद मूलतः विषयों के वे गुण है जो विषयी में उत्पन्न होते हैं और इसलिये विषयी में रहते हैं न कि विषय में। ये गुण द्वितीयक गुण कहलाते हैं। दूसरी ओर विषय में अन्तर्निहित द्वितीयक गुण जैसे कि विस्तार, आकृति, ठोसता आदि होते हैं। बर्कले इस भेद को स्वीकार नहीं करते हैं क्योंकि द्वितीयक गुण भी प्राथमिक गुण की तरह ही स्पर्श और दृष्टि के द्वारा ही प्राप्त होते हैं और रंग, स्वाद आदि की तरह ही सम्वेद बन जाते हैं। फिर, प्राथमिक और द्वितीयक गुण एक दूसरे से अपृथकनीय ढंग से संयुक्त होते हैं। हम रंग और विस्तार का प्रत्यक्ष नहीं करते हैं बल्कि रंगीन विस्तारित विषय का प्रत्यक्ष करते हैं।

2) बर्कले का दृश्यते इति वर्तते के सिद्धांत से यह तात्पर्य था कि विषय प्रत्यय/ अनुभव सम्मत होते हैं। किन्तु यदि मैं विषयों का प्रत्यक्ष नहीं करूं तब विषय कैसे अस्तित्वमान होते हैं। बर्कले का उत्तर हैं कि तब इसे कोई अन्य मन अनुभूत कर रहा होता है और – यदि कोई दूसरा मानव मन भी उपलब्ध न हो तो शाश्वत ईश्वर इनका प्रत्यक्ष कर रहा होता है। इससे विषयों का सदैव अस्तित्व बना रहता है।

इकाई 10 ह्यूम*

रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 परिचय

10.2 ह्यूम का मानव प्रकृति विज्ञान

10.3 मानव प्रकृति विज्ञान के तत्व

10.4 कारणता (कारण–कार्य) सम्बन्ध

10.5 आधारभूत सूक्तियां

10.6 संशयवाद

10.7 आवेग

10.8 संकल्प

10.9 धर्म

10.10 नैतिकता

10.11 सारांश

10.12 कुंजी शब्द

10.13 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

* प्रो. जोस कन्ननैक्कल, सुविद्या कॉलेज, बैंग्लोर। (यह इकाई बीपीवाई–008 की "ह्यूम" इकाई का संशोधित संस्करण है)। अनुवाद– वेदप्रकाश सिंह, फरीदाबाद।

10.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरान्त छात्र डेविड ह्यूम के दर्शन के मुख्य आयामों के निम्नलिखित विचारों को समझने में सक्षम हो जायेगा;

- मानव प्रकृति का विज्ञान;
- कारणता (कारण–कार्य) सम्बन्ध;
- दो आधारभूत विश्वासों के बारे में ह्यूम की समझ,
- संशयवाद; और
- आवेग, संकल्प, धर्म, राजनीति और नैतिकता की उनकी धारणा।

10.1 परिचय

डेविड ह्यूम 26 अप्रैल 1911 में एडिनबर्ग, स्काटलैण्ड में पैदा हुए थे और एडिनवर्ग विश्वविद्यालय में ग्यारह से पन्द्रह वर्ष की आयु तक रहे और इसी नगर में विधि का अध्ययन किया। अपनी रूचि के अनुकूल नहीं होने से उन्होंने विस्तृत रूप से प्राचीन और आधुनिक साहित्य को पढ़ा, विज्ञान और भाषा के ज्ञान को बढ़ाया, और मुख्य रूप से अपने आप को दर्शन के प्रति समर्पित कर दिया। वह अपनी पहली दो पुस्तकों *ऑफ द अण्डरस्टेण्डिग ऑफ द पेशन्स* को अपने प्रसिद्ध निबंध *ए ट्रिटिस ऑफ ह्यूमन नेचर* में ऑफ मोरलस के साथ संकलित करके प्रकाशित कराने के उद्देश्य से 1737 में इग्लैंण्ड वापस आये। लेकिन, समीक्षकों ने इसे विरोधाभाषी और अस्पष्ट पाया। परिणाम स्वरूप, ह्यूम ने शीघ्र ही विभिन्न निबन्धों के संकलन के द्वारा पुनः अपने विचारों को प्रस्तुत किया। वस्तुतः, उन्होंने अपने पूर्व में अप्रकाशित महत्वपूर्ण विचारों को *फिलोसॉफीकल एससेस कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेण्डिग* (1783) के रूप में प्रकाशित किया। ह्यूम के सिद्धांत को विशेष महत्व 1783 में तब मिला जब इमैनुअल काण्ट

ने यह कहा कि कारण और प्रभाव के ह्यूम के स्पस्टीकरण ने उसे हठधर्मिता की नींद से जगाया।

10.2 ह्यूम का मानव प्रकृति विज्ञान

ह्यूम विश्वास करते थे कि मानव प्रकृति का विज्ञान केवल नैतिकता, सौंदर्यशास्त्र और राजनीति में ही फलित नहीं होता बल्कि गणित, प्राकृतिक दर्शन, और प्राकृतिक धर्म में भी होता है। इस प्रकार, मानव प्रकृति ही सभी विज्ञानों का केन्द्र है। उनका कहना था कि प्राकृतिक विज्ञान में सफलतापूर्वक अपनायी गई प्रायोगिक विधियां मानव के अध्ययन में भी लागू की जानी चाहिए।

10.3 मानव प्रकृति विज्ञान के तत्व

10.3.1 प्रत्यक्ष

ह्यूम ने मानव प्रकृति को सदैव प्रत्यक्ष की दृष्टि से देखा। प्रत्यक्ष का सम्बन्ध उन सभी उपस्थित विषयों जैसे कि संवेदना, चिन्तन, अथवा विचार आदि से है जो चेतना द्वारा तात्कालिक प्रभाव से उतपन्न होते हैं।

अनुचिन्तन ह्यूम का ध्यानाकृषित करने वाला शब्द है। यह आंतरिक संवेदनाओं या आंतरिक मनोवृत्तियों जैसे सामान्यतः भावावेशों, भावनाओं, इच्छाओं, संकल्प शक्तियों और मानसिक क्रियाओं आदि को प्रस्तुत करता है। ह्यूम ने मन के सम्पूर्ण विषयों को अनुभव से उत्पन्न बताया और प्रत्यक्ष को संस्कार और प्रत्यय में विभाजित किया।

10.3.2 संस्कार और प्रत्यय

संस्कार अनुभव, जैसे संवेदना, के मूल तत्व है। प्रत्यय संस्कार की चिन्तन और तर्क करने में प्रयुक्त प्रतिलिपि या धुंधली नकल/छाप है। यदि मैं अपने कमरे को देखता हूँ, मैं इसका संस्कार प्राप्त कर लेता हूँ। ह्यूम संस्कार और प्रत्यय में अन्तर की व्याख्या स्पष्टता के आधार पर करते हैं। संस्कार के आधार पर हम अपनी संवेदनाओं, आवेगों और भावनाओं को समझते

हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि प्रत्यक्ष सदैव सशक्त संस्कार बनाते हैं। वास्तव में वे इतने हल्के हो सकते हैं कि ध्यान में आए ही नहीं। इसका यह भी अर्थ नहीं है कि वे सामान्यतः स्पष्ट होते हैं क्योंकि काले रंग में हल्के भूरे धब्बे का संस्कार (दृश्य संदेवन) स्वपन में स्पष्टता से देखी गयी प्रतिमा (दृश्य प्रत्यय) से कहीं अधिक स्पष्ट होता है।

10.3.3 संवेदना और अनुचिन्तन (प्रतिबिम्बन) का संस्कार

संस्कारों को संवेदना के संस्कार और अनुचिंतन के संस्कार में विभाजित किया जा सकता है। पहला मूल रूप से बिना किसी ज्ञात कारण से जीवात्मा में उत्पन्न होता है। अनुचिंतन के संस्कार मूल रूप से प्रत्यय से व्युत्पन्न होते हैं। मान लिजिए कि मेरे पास पीड़ा के साथ ठंढ का संस्कार हे। इस संस्कार की एक प्रति संस्कार के समाप्त होने के उपरान्त मन में बनी रहती है। इस प्रति को प्रत्यय कहते हैं। अब, यह प्रत्यय पीड़ा और ठंड के प्रति विरूचि, उदाहरण के लिए, अनुचिन्तन से उत्पन्न संस्कार, का नया संस्कार उत्पन्न कर सकता है। अतः मूल रूप से संस्कार प्रत्यय से पहले होते हैं।

10.3.4 सरल और जटिल प्रत्यक्ष

ह्यूम ने सरल और जटिल प्रत्यक्षों में अन्तर किया है। एक लाल धब्बे का प्रत्यक्ष सरल प्रत्यक्ष है और लाल धब्बे का विचार (छाप) सरल प्रत्यय है। लेकिन यदि मैं हिमालय की पहाड़ी पर खड़ा हो जाँऊ और किसी शहर का निरीक्षण करूँ तो, मैं नगर, छत, चिमनी, मीनारों और गलियों का जटिल संस्कार ग्रहण करूँगा। और जब मैं बाद में शहर के विषय में सोचूगा और मन में संरक्षित जटिल संस्कार की याद करूँगा तो मेरे मन में एक जटिल प्रत्यय बन जायेगा। इस प्रकरण में जटिल प्रत्यय कुछ अंशों में जटिल संस्कार के अनुरूप है किन्तु तब भी यह उतना सटीक और उचित नहीं है। लेकिन हम एक दूसरा प्रकरण लेते हैं। 'मैं अपने आप किसी नये शहर की कल्पना कर सकता हूँ जिसका फर्श खोने का है, और दीवारें माणिक की है, जबकि मैंने ऐसा कुछ कभी नहीं देखा है' इस प्रकरण में मेरा जटिल प्रत्यय जटिल संस्कार के संगत नहीं है। इसलिए हम सत्यता पूर्वक यह नहीं कह सकते कि प्रत्येक प्रत्यय के अनुरूप एक निश्चित संस्कार होता है।

10.3.5 द्रव्य का प्रत्यय

ह्यूम कहते हैं कि द्रव्य का प्रत्यय संवेदन छाप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। यदि यह आँखों द्वारा ग्रहण किया जाता है, तो इसे अवश्य ही रंग; यदि कानों के द्वारा तो ध्वनि; यदि जिव्हा से तो स्वाद होना चाहिए। लेकिन कोई भी यह नहीं कहेगा कि द्रव्य रंग है, या ध्वनि है या एक स्वाद है। यदि, इस प्रकार, द्रव्य का कोई प्रत्यय है तो उसे अनुचिन्तन के संस्कार से प्राप्त होना चाहिए लेकिन ये हमारे भावावेशों और भावनाओं में सम्मिलित किये जा सकते हैं। इसलिए द्रव्य का प्रत्यय न तो संवेदनाओं के संस्कार से और न ही अनुचिन्तन के संस्कार से प्राप्त होता हैं। इस प्रकार ह्यूम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि विशेष गुणों के एक समूह के अतिरिक्त हमारे पास द्रव्य के प्रत्यय जैसा कुछ नहीं है। उदाहरण के लिए, कोई बच्चा गगनचुंबी इमारत पद को देखकर अपने पिता से इसका अर्थ पूछता है। पिता इसके अर्थ को परिभाषा या व्याख्या के माध्यम से बता सकता है। अर्थात् वह बच्चे को शब्द गगन चुंबी इमारत के अर्थ को घर, लम्बाई, भूतल आदि शब्दों के द्वारा बता सकता है। लेकिन बच्चा तब तक इस व्याख्या को नहीं समझ सकता जब तक कि वह व्याख्या में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ भलीभाँति न समझता हो। ह्यूम के शब्दों में, बच्चे के अन्दर इन शब्दों के संस्कारों का होना अनिवार्य है।

10.3.6 अमूर्त प्रत्ययों का निरसन

प्रथमतः, अमूर्त प्रत्यय अपने आप में व्यक्तिगत या विशेष होते हैं।

उदाहरण के लिए, किसी रेखा कि वास्तविक लम्बाई स्वयं रेखा से अलग नहीं की जा सकती। हम किसी रेखा का सामान्य प्रत्यय बिना लम्बाई के प्रत्यय के नहीं बना सकते। न ही हम किसी ऐसी रेखा का सामान्य प्रत्यय बना सकते हैं जिसमें सम्पूर्ण लम्बाईयों के प्रत्यय समाहित हो। दूसरे, प्रत्येक संस्कार निर्धारित और निश्चित होता है। चूँकि प्रत्यय संस्कार की छाप या प्रतिरूप होता है इसलिये स्वयं प्रत्यय को भी निर्धारित और निश्चित होना चाहिए। फिर चाहे यह मूल संवेदन–छाप से हल्का ही क्यों न हो। तीसरे, प्रत्येक अस्तित्वमान विषय को विशिष्ट होना चाहिए। उदाहरण के लिए, अपने विशिष्ट गुणों से पृथक कोई त्रिभुज नहीं हो सकता।

एक ऐसे त्रिभुज के अस्तित्व को स्वीकार करना, जो सभी सम्भावित प्रकारों और आकरों के त्रिभूजों का प्रतिनिधित्व करता हो और साथ ही किसी भी प्रकार और आकार के त्रिभूज का प्रतिनिधि त्व न करता हो, एक मूर्खता है। जो भी वास्तविक और तथ्यात्मक रूप में विसंगतिपूर्ण है वह प्रत्ययात्मक रूप में भी विसंगतिपूर्ण है। अतः ह्यूम बर्कले के इस विचार से सहमत है कि अमूर्त प्रत्ययों का अस्तित्व नहीं होता है।

10.4 कारणता सम्बन्ध

कारणता सम्बन्ध ह्यूम के ज्ञान सिद्धांत का केन्द्रबिन्दु हैं। वास्तव में, प्रत्यय को अनुभव से जोड़ने वाले सारे सम्बन्धों में से कोई भी कारणता तक नहीं पहुँचता और कारण कार्य में विश्वास उत्पन्न करने वाली शक्ति की व्याख्या नहीं करता। यदि मैं कमरे में धुंआ आता देखता हूँ तो मेरा न देखी गयी आग में विश्वास उतना ही प्रबल होता जितना की स्वयं धुंआ में। ध्यान रहे सामीप्य, अनुक्रम और नित्य संयोग के कारण कारणात्मकता उस सीमा तक एक दार्शनिक सम्बन्ध है जब तक यह (कारणता) प्रकृतिक सम्बन्ध है और हमारे प्रत्यय में एकता उत्पन्न करता है, जिसके आधार पर हम तर्क करते हैं या निष्कर्ष निकालते हैं।

10.4.1 कारणता एक प्राकृतिक सम्बन्ध के रूप में

सम्बन्ध शब्द उन गुण या गुणों को बताता है जिनके द्वारा दो प्रत्यय कल्पना में जुड़ते हैं। ये गुण सादृश्यता, सामीप्य और कारणात्मक सम्बन्ध है; और हम उन्हें प्राकृतिक सम्बन्ध कहता है। प्राकृतिक सम्बन्ध में प्रत्यय एक दूसरे से सहचर्य की प्राकृतिक शक्ति द्वारा जुड़े रहते हैं। फलतः, हम प्राकृतिक रूप से या परम्परागत रूप से कारण–कार्य कि नियतता में विश्वास करते हैं। प्राकृतिक सम्बन्ध के रूप में कारणता, अवश्य ही, प्रत्ययों में पृथक न किये जा सकने वाला सम्बन्ध है।

10.4.2 कारणता एक दार्शनिकता के सम्बन्ध के रूप में

प्राकृतिक और दार्शनिक सम्बन्ध में एक निश्चित अतिव्यापन दिखायी पड़ता है और यह ह्यूम की ओर से किसी असावधानी के कारण नहीं है। ह्यूम कहते हैं, उदाहरण के लिए, किन्हीं दो

वस्तुओं की तुलना तब तक नहीं की जा सकती जब तक उनमें कुछ सादृश्यता न हो। सादृश्यता इसलिए एक ऐसा सम्बन्ध है जिसके बिना कोई भी दार्शनिक सम्बन्ध अस्तित्व में नहीं रह सकता। ह्यूम सात प्रकार के दार्शनिक सम्बन्ध गिनाता है; सादृश्यता, तादात्म्यता, स्थान और समय का सम्बन्ध, मात्रा या संख्या में अनुपात, किसी गुण में मात्रा, विरोधी प्रतियोग और कारणता। दार्शनिकता सम्बन्ध के रूप में कारणात्मकता को समय और स्थान के सम्बन्धों जैसे सामीप्य, समय सम्बन्धी अनुक्रम और नित्य संयोग या साथ–साथ रहना में अपघटित किया जा सकता है।

10.4.3 सामीप्य

कारण–कार्यगत विषयों में समीपता का गुण होता है। समीपता से यहां यह तात्पर्य नहीं है कि कारण–कार्य सदैव त्वरित रूप से एक दूसरे के समीप रहते हैं। क्योंकि वस्तु अ (कारण) और वस्तु द (कार्य) के मध्य अनेक कारणों की शृंखला या क्रम हो सकते हैं। किन्तु कारणों की इस शृंखला में यद्यपि अ और द एक दूसरे के समीप नहीं है किंतु अ–ब, ब–स, स–द अवश्य ही एक दूसरे के समीप है। ह्यूम स्थानिक सामीप्यता कारणता के प्रत्यय के लिए अनिवार्य नहीं मानते।

10.4.4 सामयिक पूर्ववर्तीता

ह्यूम कहते हैं कि कारण को सामयिक रूप से सदैव कार्य से पहले होना चाहिए। अनुभव से यह सिद्ध भी है। लेकिन यदि समस्त प्रभाव पूर्ण रूप से कारण के साथ घटित हो तो स्पष्ट है कि अनुक्रम जैसा कुछ नहीं होगा, और समस्त वस्तुएं सह अस्तित्व में हो जायेगी। यह पूर्ण रूप से विसंगतिपूर्ण है। इसलिए, प्रभाव पूर्ण रूप से कारण के समकालिक नहीं हो सकता और कारण को सदैव प्रभाव (कार्य) के पहले होना चाहिए।

10.4.5 सतत साहचर्य का प्रत्यय

सतत साहचर्य का प्रत्यय दो प्रकार की समान घटनाओं की सामीप्य और अनुक्रम की स्थिर पद्धति के अनुसार निरन्तर पुनरावृत्ति होना है। लेकिन, ह्यूम की दृष्टि से, हम निरन्तर

पुनरावृत्ति अथवा कारण–सम्बन्ध के निरीक्षण से अनिवार्य नित्य सम्बन्ध का प्रत्यय प्राप्त नहीं कर सकते। अतः, हम कह सकते हैं कि या तो कारणता जैसा कोई प्रत्यय नहीं है या फिर इसे किसी विषयी से उत्पन्न होना चाहिए। ह्यूम पहले विकल्प को स्वीकार नहीं कर सकते; क्योंकि वह पहले ही अनिवार्य नित्य सम्बन्ध के प्रत्यय के महत्व पर जोर दे चुके हैं। इसलिए उन्हें दूसरे विकल्प को ही अपनाना चाहिए और वह यही करते हैं। यह कहना कि अनिवार्य नित्य सम्बन्ध का प्रत्यय विषयी से प्राप्त किया गया है यह कहने के समान है कि यह अनुचिन्तन (प्रतिबिम्बन) के संस्कार से प्राप्त किया गया है। पुनरावृत्ति के निरीक्षण से मन नया संसार बनाता है।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणीः

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) अनुचिन्तन के अर्थ की व्याख्या करो।

.....

.....

.....

.....

2) ह्यूम ने अमूर्त प्रत्ययों को क्यों अस्वीकार कर दिया?

.....

.....

.....

.....

10.5 आधारभूत सूक्तियाँ

ह्यूम के अनुसार, कुछ विशेष मूल पारंपरिक विश्वास होते हैं जो मानव जीवन में प्रभावी होते हैं और विशेषीकृत विश्वासों को उत्पन्न करते हैं; सतत और स्वतंत्र रूप से अस्तित्वमान वस्तुओं में विश्वास और प्रत्येक कार्य का एक निश्चित कारण सम्बंधि विश्वास ऐसे ही विश्वास है।

10.5.1 प्रत्येक कार्य का एक कारण होता है

यह सूक्ति न तो अन्तःप्रज्ञात्मक रूप से निश्चित है और न ही प्रदर्शनात्मक रूप से सिद्ध है। यदि यह सिद्धांत न तो अन्तः प्रज्ञा से निश्चत है और न प्रदर्शनात्मक है तब इसमें हमारा विश्वास अनुभव व निरीक्षण से उत्पन्न होना चाहिए। इसका यह अर्थ है कि हम प्रायः दो वस्तुओं के संयोजन का अनुभव करते हैं, जैसे, अग्नि कहने से हमें उसकी गरमाहट की संवेदना होती है और हम स्मृत करते हैं कि ये दोनों सदैव नियत अनुक्रमिक ढंग से प्रकट होते हैं। हम सदैव अचेतन भाव से दोनों की एक रूपता को पूर्वकल्पित कर लेते हैं। यह मानना कि भविष्य भूत के समान होता है किसी प्रकार के तर्क पर आधारित नहीं होता बल्कि यह पूर्णतः मानसिक आदत और प्रथागत होता है।

10.5.2 स्वतंत्र और सतत रूप से अस्तित्वमान वस्तुओं में विश्वास

ह्यूम के अनुसार, हम प्रत्यक्ष तक सीमित हैं। अतः हम अपने प्रत्यक्ष से स्वतन्त्र वस्तु के स्वरूप को ग्रहण नहीं कर सकते। यह समझना महत्वपूर्ण है कि ह्यूम हमारे प्रत्यक्ष से स्वतंत्र वस्तु के अस्तित्व का खण्डन नहीं करते हैं बल्कि ऐसे किसी अस्तित्व को सिद्ध करने में हमारी अयोग्यता की बात करते हैं। प्रथमतः, संवेदनाएं इस धारणा की स्रोत नहीं हो सकती है कि वस्तु तब भी अस्तित्व में रहती है जब उसका प्रत्यक्ष नहीं हो रहा होता है। ऐसा सम्भव होने के लिये संवेदनाओं को तब भी कार्यरत रहना होगा जब कि वे कार्य करना बन्द कर चुकी हो

और यह एक विरोधाभास है। हमारे प्रत्यक्ष से भिन्न वस्तुओं को सम्वेदनाएं हमारे सम्मुख प्रस्तुत नहीं करती हैं। दूसरे, बुद्धि हमें वस्तुओं के सतत और पृथक अस्तित्व में विश्वास के लिये भी प्ररित नहीं करती है। दार्शनिक चाहे कितने भी युक्ति–युक्त तर्क प्रस्तुत करें किन्तु वे मन से स्वतंत्र वस्तुओं के अस्तित्व को सिद्ध नहीं कर सकते। यह सर्वविदित तथ्य है कि बच्चे, किसान और अधिकांश लोग वस्तुओं को संस्कारों और प्रत्ययों के माध्यम से ही जानते हैं।

10.5.3 कल्पना

अतः, वस्तुओं के सतत और स्वतंत्र अस्तित्व सम्बंधि हमारे विश्वास न तो संवेदनाओं से ओर न ही बुद्धि अथवा बोध से उत्पन्न होते वरन् यह कल्पना से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार, प्रश्न यह उठता है कि विशेष संस्कारों के वे लक्षण क्या है जो कल्पना को वस्तुओं के सतत और पृथक अस्तित्व को मानने के लिए तैयार करते हैं? इस प्रश्न का उत्तर हमें कहीं ओर जाकर खोजना होगा।

10.5.4 सततता और संगति

ह्यूम के अनुसार, ऐसे दो लक्षण है; सततता और संगति। अपने सम्पूख उपस्थित पर्वत, घर और वृक्ष आदि को मैं सदैव एक समान क्रम में देखता हूँ। यदि मैं अपनी आँखें बन्द कर लूँ या फिर अपना चेहरा दूसरी ओर घुमा लूँ तो भी मैं पुनः देखने पर इन सभी वस्तुओं को उसी क्रम में पाता हूँ। यहाँ पर हमारे पास निरन्तर पुनरावृत्त होने वाले समान संस्कार हैं। लेकिन, स्पष्टतः, वस्तुएँ प्रायः अपनी स्थिति में ही नहीं बल्कि गुणों में भी बदल जाती हैं। तथापि, उनके परिवर्तन में संगति होती है। जब मैं एक घण्टे की अनुपस्थिति के बाद अपने कक्ष में आता हूँ तो मेरे अपने कमरे में जल रहीं आग उसी अवस्था में नहीं होती जिसमें मैंने उसे छोड़ा था। लेकिन अभ्यस्त होने के कारण मैं उपस्थित रहूँ या अनुपस्थित रहूं, निकट रहूं या दूर, समान समय में होने वाले समान परिवर्तनों का अनुभव नहीं कर पाता हूँ। यह वस्तुओं की विशेषता है कि उनके परिवर्तनों में संगति के साथ सततता समान रूप से होती है। तथापि, संगति वस्तुओं के सतत अस्तित्व की कल्पना को उत्पन्न कर सकती है, वस्तुओं के पृथक अस्तित्व की कल्पना द्वारा व्याख्या करने के लिए सततता आवश्यक है। यद्यपि अनुचिन्तन से

पता चलता है कि अनुभूतियां समान नहीं होती। अतः, हम असत्य रूप से वस्तुओं का एक सतत अस्तित्व पा सकते हैं। हम असत्य रूप से एक सतत अस्तित्व को प्राप्त ही नहीं करते वरन् ऐसे अस्तित्व में विश्वास भी करते हैं।

10.5.5 स्मरण शक्ति (स्मृति)

ह्यूम के अनुसार, वस्तुओं के सतत और स्वतंत्र अस्तित्व में विश्वास और यह विश्वास कि प्रत्येक कार्य का एक कारण होता है की स्मरण शक्ति के संदर्भ में व्याख्या की जा सकती है। स्मरण शक्ति हमारे समक्ष अनेक समान अनुभूतियों, जो भिन्न–भिन्न समय पर बड़े अन्तरालों के बाद आती हैं, को प्रस्तुत करती है। यहाँ पर ह्यूम मूलतः यह कह रहे हैं कि हमारे पास सतत और स्वतंत्र और स्वतंत्र रूप से अस्तित्वमान वस्तुओं में विश्वास करने कि एक अनिवार्य और न समाप्त होने वाली प्रवृत्ति होती है। यह प्रवृत्ति विश्वास उत्पन्न करती है और इस विश्वास को बौद्धिक तर्कों से सिद्ध करने के सभी प्रयास असफल रहते हैं। निष्कर्षतः, प्राकृतिक विश्वास अनिवार्य रूप से, और सत्य रूप में, प्रबल हो जाते हैं।

10.6 संशयवाद

क्या ह्यूम संशयवादी थे? यदि संशयवादी वह होता है जो संदेह करता है अथवा सत्य–प्राप्ति में बुद्धि को अनुपयोगी मानता है तब ह्यूम संश्यवादी नहीं थे। तथापि, ह्यूम ने अनेक मान्यताओं को संदेह से परे माना क्योंकि उन पर तार्किक रूप से अविश्वास नहीं किया जा सकता अथवा उन्हें स्वतः ही तार्किक रूप में संदेहास्पद नहीं माना जा सकता। इन संदेह से परे विषयों में दार्शनिक रूप से विवादास्पद विषय जैसे कि बाह्य–जगत, आत्म, प्रत्येक कार्य का एक अनिवार्य कारण सम्मिलित है। ह्यूम की यह मान्यता है कि किसी व्यक्ति के दृढ़ संशयवादी विश्वास इसलिये अरक्षणीय नहीं है क्योंकि वे तर्क सम्यक हैं और उन्हें संदेहवादी तर्कों से हटाया नहीं जा सकता, बल्कि वे इसलिये अरक्षणीय है क्योंकि वे बिल्कुल भी तर्क पर आधारित नहीं हैं।

10.6.1 आत्मा की अमूर्तता

ह्यूम कहते हैं कि यह प्रश्न कि अनुभूति का आधार भौतिक तत्व है या अभौतिक एक अर्थहीन प्रश्न है, क्योंकि हम इसका कोई स्पष्ट अर्थ नहीं बता सकते और इसलिए इसका उत्तर भी नहीं दे सकते। यह कहा जा सकता है कि हमारे पास तत्व द्रव्य का प्रत्यय है क्योंकि हम इसे वह जो स्वयं अस्त्वि में रह सकता है के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। फिर भी यह परिभाषा द्रव्य को गुण से और जीव–आत्म को अनुभूति से भिन्न करने में सहयोग नहीं कर सकती। अनुभूतियाँ शरीर में अतभूत नहीं हो सकती। क्योंकि इसके लिए उन्हें स्थानीय रूप में उपस्थित रहना पड़ेगा। लेकिन यह कहना अतार्किक है कि भावावेश, उदाहरण के लिए, नैतिक चिन्तन सम्बन्धित होकर उसके साथ स्थित रहता है। इसके ऊपर या नीचे होता है, इसके दायें या बायें रहता है। यद्यपि इससे यह भी सिद्ध नहीं होता कि अनुभूतियाँ अभौतिक द्रव्यों में निहित हो सकती हैं। इससे ह्यूम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि आत्म का द्रव्य सम्बन्धित प्रश्न पूर्णतः अबोधगम्य है।

10.6.2 आत्म (स्व) का प्रत्यय

ह्यूम स्पष्टतः यह न मानने के लिए बाध्य है कि हमारे पास अनुभूतियों से पृथक आत्म का कोई प्रत्यय है। हमारी समस्त अनुभूतियां विशिष्ट एवं पृथक हैं और हम इन आधारभूत अनुभूतियों से पृथक कोई आत्मा नहीं खोज सकते। ह्यूम के अनुसार, किन्हीं सम्बन्धित वस्तुओं के अनुक्रम और तादात्म्यता के दो प्रत्ययों को लेकर हम भ्रमित हो जाते हैं। उदाहरण स्वरूप, किसी प्राणी का शरीर एक समूह है, और इसे बनाने वाले भाग निरन्तर परिवर्तित होते रहते हैं। दृढ़ शब्दों में कहें तो यह स्वयं से तादात्म्य की स्थिति में नहीं रहता। लेकिन परिवर्तन धीरे–धीरे होता है इसलिये क्षण–क्षण इनकी अनुभूति नहीं की जा सकती। फिर, सभी भाग एक दूसरे से सम्बन्धित और निर्भर होते हैं, तथा एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। अतः, मन व्यवधानों को अनदेखा कर देता है और समूह को सतत स्व–तादात्म्यता प्रदान कर देता है। फिर, मानव मन में सम्बन्धित अनुभूतियों का एक अनुक्रम होता है। आगे, हमारी अनुभूतियां कारणता के सम्बन्ध से आपस में सम्बन्धित रहती है। हम स्मरण–शक्ति के द्वारा अपनी अनुभूतियों के बीच कारणता के सम्बन्ध से अवगत होते हैं। इसलिए समरण–शक्ति ही व्यक्तिगत पहचान के प्रत्यय का मुख्य स्रोत होती है।

10.7 आवेग

ह्यूम ने भावावेश शब्द का प्रयोग सभी भावनाओं और प्रभावों को समाहित करने के लिए किया है। ह्यूम ने भावावेशों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष भावावेशों में विभाजित किया है।

10.7.1 प्रत्यक्ष भावावेश

प्रत्यक्ष भावावेश वे हैं जो प्रसन्नता या पीड़ा से तुरन्त उत्पन्न होते हैं। ह्यूम ने इच्छा, द्वेष, शोक, हर्ष, आशा, भय, नैराश्य और सुरक्षा आदि को इस श्रेणी में रखा है। उदाहरण के लिए, गठिया की पीड़ा प्रत्यक्ष भावावेश उत्पन्न करती है। ह्यूम ने ऐसे भावावेशों के बारे में भी बताया है जो प्राकृतिक आवेगों या प्रवृत्तियों से उत्पन्न होते हैं। इनका आकलन करना सम्भव नहीं है। इसके अन्तर्गत शत्रुओं के लिए दण्ड की इच्छा और मित्रों के लिए प्रसन्नता, भूख, लिप्सा, और कुछ अन्य शारीरिक इच्छाएं आती हैं।

10.7.2 अप्रत्यक्ष भावावेश

अप्रत्यक्ष भावावेश साधारणतया प्रसन्नता और पीड़ा के अनुभव से उत्पन्न नहीं होते बल्कि जिसे ह्यूम संस्कार और प्रत्यय का दोहरा सम्बन्ध कहते हैं, से उत्पन्न होते हैं। सबसे मूल अप्रत्यक्ष भावावेश गर्व, विन्रमता, प्रेम और घृणा हैं लेकिन वे महत्वाकांक्षा, दम्भ, ईष्या, दया और दुर्भावना को भी समाहित करते हैं। साधारणतया भावावेश के विषय प्रेम और घृणा को गर्व और विन्रमता से पृथक करते हैं। जैसे मैं अपने शरीर और मन या कोई अन्य वस्तु को लेकर गर्व का अनुभव करता हूँ, क्योंकि यह कुछ प्रसन्न करने वाले गुणों जैसे मेरा रूप, मेरी बुद्धिमत्ता मेरा बड़ा घर, मेरे द्वारा बनाया गया सुंदर रंगीन चित्र, मेरे सुन्दर कार्यालय आदि को धारण करता है। मैं उन्हीं कारणों से किसी को प्रेम या सम्मान देता हूँ अन्यथा, ये भावावेश समान दोहरे सम्बन्ध की संरचना प्रकट करते हैं। गर्व और विनम्रता का विषय आत्मा है।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणीः

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) दो मूल विश्वास क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

2) क्या ह्यूम संशयवादी थे? व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

10.8 संकल्प

ह्यूम संकल्प (इच्छा) को प्रसन्नता और पीड़ा का त्वरित प्रभाव बताते हैं। वह इसकी हमारे सचेत होकर शरीर को गति प्रदान करने या मन में नया संस्कार ग्रहण करने से उत्पन्न आन्तरिक संस्कारों की चेतना या अनुभूति के रूप में व्याख्या करते हैं। ह्यूम के अनुसार, संकल्प–शक्ति अनुभव है, मानसिक या शारीरिक क्रिया के परिणाम स्वरूप अनुभूत उत्तेजनाएं हैं। वे पूर्णरूपेण अनुभूतियां (अनुचिन्तन के संस्कार) है जो अन्य से पृथकता के सिद्धांत से पृथक हैं, पूर्ण रूप से पृथक रहने योग्य हैं। इस रूप में, वे पूर्णतः अपरिभाष्य है; जैसे सुगन्ध। ह्यूम के अनुसार, भावावेश, संकल्प के लिए प्रेरित करता है। बुद्धि कभी भी सीधे तौर पर

भावावेश द्वारा इच्छा को प्रेरित करने का विरोध, अवरोध या किसी प्रकार से इसे कम नहीं कर करती है। यह केवल कुछ नये भावावेश उत्पन्न करके अप्रत्यक्ष रूप से ऐसा कर सकती है, जैसे तब जब यह व्यक्ति को सूचित करती है कि इच्छा का विषय अप्राप्य है, या फिर एक दूसरे ढ़ंग से क्रिया करने से ही प्राप्य है, जिसके उपरान्त व्यक्ति वर्तमान भावावेश के अनुकूल या प्रतिकूल क्रिया करता है। इसलिए भावावेश स्वयं में बौद्धिक नहीं होते; और चूँकि अनुभव बताता है कि केवल भावावेश ही इच्छा को प्रेरित करता है, बुद्धि भावावेश की दास है या उसे भावावेश का दास होना चाहिए।

10.8.1 स्वतंत्र संकल्प का खंडन

ह्यूम के अनुसार, स्वतन्त्र संकल्प वह होता है जो बिना सोचे–समझे और अनियमित रूप से कार्य करे और किसी अन्य की इच्छा और विश्वास से स्वतंत्र हो। इस प्रकार, उसके अनुसार, यह सौभाग्य है कि अनुभव यह बताता है कि कोई स्वतन्त्र संकल्प नहीं है, बल्कि सभी भावावेशों के आधीन रह कर कार्य करते हैं। फिर चाहे वे भावावेश शान्तिपूर्ण हो या उग्र, लाभ या हानि कारक, बुद्धि के अनुकूल हो या प्रतिकूल। संकल्प कारण रूप में, जहाँ तक शरीर और मन इच्छा से नियंत्रित होते हैं, स्वतन्त्र है। यदि यह शरीर और मन इच्छा के अनुरूप प्रतिक्रिया न दे या किन्हीं बाह्य कारणों से संचालित हो तो व्यक्ति स्वतंत्र नहीं कहला सकते। इसके विपरीत, संकल्प तभी मुक्त है जब यह किसी कारण, जिसमें किसी के अपने भावावेश और विश्वास भी सम्मिलित है, से संचालित न हो और ये अनिश्चित ढंग से कार्य करता हो। दूसरे प्रकार की स्वतंत्रता की इच्छा कोई नहीं करेगा और अनुभव सिद्ध है कि ऐसा है भी नहीं।

10.8.2 स्वतंत्रता की समस्या

ह्यूम स्वीकार करते हैं कि स्वतंत्रता की समस्या कुछ सीमा तक एक भाषागत समस्या है। इस अर्थ में कि स्वतंत्रता को यदि अनिवार्यता से पृथक करके परिभाषित किया जाय तो स्वतंत्रता नहीं है। तथापि इसे किसी दूसरे ढंग से परिभाषित करके प्राप्त किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप, यदि स्वतंत्रता को स्वच्छन्दता के रूप में समझा जाये तो स्वतंत्रता है। क्योंकि

यह स्पष्ट है कि मानव की नैतिक कर्ता के रूप में बहुत सारी क्रियाएं बिना किसी बाह्य बाध्यता के प्रारंभ होती हैं। ह्यूम कहते हैं कि यदि इस प्रकार की मुक्त क्रियाएं केवल संयोग मात्र हैं और किसी कार्यकता से संचालित नहीं हैं, तब ईश्वर अथवा मानव के लिए किसी मानव को उसके बुरे और निर्मम कृत्यों के लिए दोषी ठहराना और इस आधार पर उसके नैतिक कृत्यों की आलोचना करना अन्यायपूर्ण होगा। स्वतंत्रता को स्वच्छन्दता में परिवर्तित करके ह्यूम ने दो तार्किक कथनों की सत्यता को सिद्ध करने का प्रयास किया है। पहला तार्किक कथन यह है कि बुद्धि अकेले कभी भी संकल्प की क्रिया का प्रयोजन नहीं होती है, और दूसरा यह है कि बुद्धि कभी भी भावावेश के इच्छानुरूप होने में विरोध नहीं करती है। यह स्पष्ट है कि जब कोई वस्तु प्रसन्नता या पीड़ा उत्पन्न करती है तो हम उसके प्रति आकर्षण या द्वेष की भावना का अनुभव करते हैं और उसे प्राप्त करने के लिये लालायित होते हैं। किन्तु जो आवेग क्रिया को संचालित करता है वह बुद्धि द्वारा निर्देशित होता है; वह इससे उत्पन्न नहीं होता है। इस प्रकार ह्यूम निष्कर्ष निकालते हैं कि यदि बुद्धि का अपना कोई त्वरित प्रभाव नहीं है तो यह किसी ऐसे सिद्धांत, जैसे कि भावावेश; जो प्रभावोत्पादकता रखता है, का प्रतिरोध भी नहीं कर सकती। इस दृष्टिकोण को दृढ करने के लिये कि बुद्धि भावनाओं की दासी है ह्यूम बताते हैं कि अकेली बुद्धि व्यवहार को प्रभावित नहीं कर सकती बल्कि यह भावनाएं या अनुराग हैं जो क्रियाओं के आधार स्तंभ हैं।

10.9 धर्म

ह्यूम ने किशोर अवस्था में पढाये गये धर्म के काल्विनवादी सिद्धांत को स्वीकार नहीं किया। पारंपरिक काल्विनवाद को अस्वीकार करने से धर्म उसके लिए एक बाह्य घटना बन गयी और वह एक अधार्मिक मनुष्य हो गये। इसके अतिरिक्त, वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि धर्म का प्रभाव लाभकारी नहीं है और धर्म ने नैतिकता को विकृत कर दिया है क्योंकि यह व्यक्तियों को सद्‌गुण के प्रति प्रेम से संचालित होने की अपेक्षा किन्हीं अन्य उद्देश्यों से संचालित होने के लिये प्रेरित करता है। ह्यूम के अनुसार, धर्म विपत्ति का भय, लाभ और हानि की प्रत्याशा जैसे आवेगों से उत्पन्न होता है और ये आवेग सदैव किसी अदृश्य और बौद्धिक शक्ति की ओर

संचालित होते हैं। समय के साथ–साथ मनुष्य ने धर्म को बौद्धिक बनाने और इसमें विश्वास के पक्ष में तर्क देने का प्रयास किया। ह्यूम ने ईश्वर के अस्तित्व के लिए तत्वमीमांसीय तर्कों की वैधता को अस्वीकार कर दिया। अर्थात् उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व में प्रदर्शनात्मक तर्कों की प्रस्तुति को अस्वीकार कर दिया। उनके डायलाग्स (संवाद) से स्पष्ट है कि वे ऐसे किसी भी प्रकार के तर्कों को पसन्द नहीं करते थे जो सैद्धान्तिक रूप से मानव की कृत्रिम रचना और जगत की संरचना की सादृश्यता के तर्क पर आधारित थे। वस्तुतः ह्यूम ने एक तटस्थ निरीक्षक के रूप में यह मानते हुए कि धर्म दैवीय प्रकाशन पर आधारित है, जबकि दैवीय प्रकाशन में व्यक्तिगत रूप से उनका निश्चत रूप से कोई विश्वास नहीं था. ईश्वरवाद की बौद्धिक विश्वसनियता का परीक्षण किया। उनकी जाँच का परिणाम यह हुआ कि धार्मिक परिकल्पना एक ऐसे विषय के रूप में सिमट कर रह गयी जिसे जानना या उसे कोई नाम देना कठिन है। अतः, धर्म की विषयवस्तु अनेकार्थक है।

10.9.1 ईश्वर का प्रत्यय

ह्यूम लॉक के इस विचार से सहमत थे कि एक अपरिमित बुद्धिमान, कुशाग्र और शुभ ईश्वर के विचार की उत्पत्ति मानव मन की चिंतन प्रक्रिया से, मानवीय अच्छाईयों और बौद्धिकता को असीमित स्तर तक बढ़ाने से होती है। तथापि उसने यह भी कहा कि एक प्रत्यय के रूप में इस परिभाषा को समझने का प्रयास करना अरूचिकर और कठिन है। इस प्रकार ह्यूम ने उसी तरह से समाप्त किया जैसे अधिकांश धर्मपरायण एकेश्वरवादी दैवीय प्रकृति को न समझने योग्य पर बल देकर करते हैं।

10.9.2 धार्मिक विश्वास

यह स्थापित करने के उपरान्त कि किसी के पास ईश्वर का स्पष्ट प्रत्यय नहीं है जिसके आधार पर धार्मिक विमर्शों अथवा धर्म के तार्किक आधार को स्थापित किया जा सके, ह्यूम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि प्रत्येक व्यक्ति उन्हीं कारणों, जो उन्हें अनुभव निरपेक्ष विश्वासों (अदार्शनिक सम्भाव्यताओं) के निर्माण के लिये प्रेरित करते हैं, के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व में प्रकाशन सम्बंधि प्रमाणों को स्वीकार करते हैं। इसका निहितार्थ यह है कि धार्मिक विश्वास

चाहे कितना भी व्यापक हो, यह स्वयं मानव प्रकृति द्वारा लागू नहीं होता है और यही कारण है कि यह कारणता, सतत पृथक अस्तित्व और आत्मा में विश्वास जितना बाध्य करने वाला विचार नहीं है। ह्यूम इसका खण्डन नहीं करते कि धार्मिक विश्वास कभी भी व्यक्ति या समाज के लिए उपयोगी या स्वीकार्य नहीं हो सकते हैं, लेकिन वह यह विचार रखते प्रतीत होते हैं कि अंधविश्वास या अति उत्साह द्वारा विकृत धार्मिक विश्वास न उपयोगी होते हैं और न ही स्वीकार्य।

10.10 नैतिकता

नैतिक विमर्श के सन्दर्भ में नैतिकता के वस्तुपरक महत्व को लेकर ह्यूम के लिये यह प्रश्न मुख्य था कि क्या किसी का शुभ और अशुभ का अनुभव भावावेशों और इच्छाओं तक ही सीमित हैं, अथवा विशिष्ट नैतिक प्रत्ययों का कोई पृथक स्रोत है। नैतिक प्रत्यय पूर्ण रूप से कल्पना से स्वतंत्र अनुचिन्तन के संस्कारों से उत्पन्न होते हैं। नैतिक प्रत्ययों के अनुचिन्तन के संस्कार के स्रोत स्वयं किसी ऐसे अनुभवों में अन्तर्निहित विशेष सत्ता से प्राप्त नहीं होते हैं। बल्कि उनके कारणात्मकता की विशिष्ट परिस्थितियाँ से और किसी के जीवन में उनके विशेष स्थान, जहाँ से वे प्राप्त किये जाते हैं, से प्राप्त होते हैं।

10.10.1 सद्गुण और अवगुण

ह्यूम सद्गुण को उन सभी मानसिक क्रिया या गुण के रूप में परिभाषित करते हैं जो कर्ता में अनुमोदन के सुखद भाव उत्पन्न करते हैं, और इसके विपरीत भाव उत्पन्न करने वाली क्रिया को वह अवगुण कहते हैं। ह्यूम ने चार प्रकार के (अविशिष्ट) सद्गुणों के बारे में बताया हैरू

अ) मानसिक गुण जो इन्हें धारण करने वाले को तुरंत स्वीकार्य होते हैं; जैसे कौशल, मानसिक महानता, प्रसन्नता, बुरे समय में भी चित्त की स्थिरता, और साहस।

ब) ऐसे गुण जिसे अन्य स्वीकार करते है, जैसे कुशलता, शिष्टाचार, बुद्धिमानी, और अच्छे आचरण।

स) ऐसे गुण जो धारक के लिये उपयोगी हो; जैसे बुद्धिमानी, कर्मठता, कौशल, धैर्य, और अध्यवसाय।

द) ऐसे गुण जो अन्य के लिए उपयोगी हों; जैस कृतज्ञता, स्वामिभक्ति, विश्वसनीयता, और दानशीलता।

10.10.2 न्याय

न्याय स्वरूचि और उपयोग के आशय पर आधारित है। तथापि, अन्याय हमें पीड़ित व्यक्ति की तरह व्यक्तिगत रूप से प्रभावित नहीं करता किन्तु यह हमें अप्रसन्न अवश्य करता है। हम अन्य लोगों की व्याकुलता को सहानुभूति से देखते हैं और जो मानव क्रियाएं व्याकुलता उत्पन्न करती हैं हम उनका अनुमोदन नहीं करते हैं, और उन्हें अवगुण कहते हैं तथा जो संतुष्टि उत्पन्न करती हैं वह सद्गुण कहलाते हैं। हम न्याय को नैतिक सद्गुण और अन्याय को नैतिक अवगुण मानते हैं। इस प्रकार न्याय की स्थापना का मूल मंतव्य स्व–रूचि है; लेकिन लोक रूचि से सहानुभूति होना नैतिक अनुमोदन का विषय है और सद्गुण कहलाता है। ह्यूम न्याय को एक कृत्रिम सद्गुण मानते हैं क्योंकि यह मनुष्य की उत्पत्ति है जिसकी खोज मानव स्वार्थ और लोभ, जो मानव की इच्छा प्राप्ति के लिए प्रकृति द्वारा अल्प मात्रा में अभिपूरित किया गया है, के साथ की गयी है। इसलिए, ह्यूम यह स्वीकार नहीं करते कि न्याय के नियम शाश्वत हैं, जो मनुष्य की स्थिति और लोक–उपयोगिता से स्वतंत्र हैं। मनुष्य ने न्याय के नियमों को अपने स्वयं के और लोक रूचि के अनुसार स्थापित किया है। लेकिन ये अभिरूचि प्रत्ययों के अनिवार्य और शाश्वत तर्क से प्राप्त नहीं हैं बल्कि हमारे अनुभवों के संस्कारों से प्राप्त हैं।

10.11 सारांश

18वीं शताब्दी से प्रद्योगिकी परिवर्तित हो गई है और आधुनिक अनुभववादी ह्यूम की मनोविज्ञान और तर्कशास्त्र को मिलाने की प्रवृत्ति से दूर रहने का प्रयास करते हैं। लेकिन आधुनिक अनुभववादियों का ह्यूम के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ऋणि होने में कोई संदेह नहीं है।

उनकी अन्तर्दृष्टि, जो विभिन्न विज्ञानों के केन्द्र में मनुष्य की आधारभूतता को प्रदर्शित करती है, के विकास का उस जगत में भरपूर स्वागत हुआ जिसमें उन्नति को अव्यक्तिगत रूप में समझा जाता है। तथापि, उनके संस्कार और प्रत्यय के अन्तर को केवल मात्रा के स्तर पर घटाकर दिखाया जाना अनेक प्रश्न खडे करता है। हम इसका खण्डन नहीं कर सकते कि ह्यूम के कारणता के सिद्धांत को खण्डित करने के प्रयास ने बाद के विचारकों में गंभीर चिंतन को जाग्रत किया है। थोड़े में कहें तो, ह्यूम के गम्भीर योगदान को देखते हुए, वह अनुभववाद का पिता कहा जाने योग्य है।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणीः

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) ह्यूम ऐसा क्यों सोचते हैं कि स्वतंत्रता की समस्या केवल एक भाषागत समस्या है?

.....

.....

.....

.....

2) 'दैवीय प्रकृति की अग्राह्यता' की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

10.12 कुंजी शब्द

अनुभूति : अनुभूति उन सभी वस्तुओं को कहते हैं जो किसी के समक्ष त्वरित रूप में चेतना द्वारा उपस्थित होती हैं, जैसे कि संवेदना, अनुचिंतन या विचार।

संस्कार : यह अनुभव का त्वरित सूचना समूह है, जैसे संवेदना।

प्रत्यय : यह चिन्तन प्रक्रिया में उत्पन्न संस्कारों का प्रतिरूप या धुंधला चित्र है।

सम्बन्ध : शब्द सम्बन्ध उन गुण या गुणों को सूचित करता है जिनके द्वारा दो प्रत्यय कल्पना में एक दूसरे से जुड़े रहते हैं।

आवेग/भावावेश : ह्यूम ने शब्द भावावेग का प्रयोग भावनाओं के अनियंत्रित प्रस्फूटन से पृथक सभी भावनाओं और प्रभावों को समाहित करने के लिए किया

संकल्प : यह ज्ञात ढंग से अपने शरीर में गति उत्पन्न करना हैं या हमारे मन को नयी अनुभूति प्रदान करने के कारण रूप में संकल्प वह एक आन्तरिक संस्कार है जिसका हम अनुभव करते हैं और जिसके प्रति हम सचेत रहते हैं।

10.13 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

चेप्पल, वी.सी., *फिलोसॉफी ऑफ डेविड ह्यूम*, न्यूर्याक, माईन लाइबरेरि, 1963.

कापलसटन, फ्रेडरिक, *ए हिस्ट्री ऑफ फिलोसॉफी*, बुक 2, वाल्यू. ट, न्यूयार्क, इमेज बुक्स, 1985.

ह्यूम, डेविड, *ट्रिटाइज ऑफ ह्यूमन नेचर*, इग्लैंण्ड, पेनग्यून बुक्स, 1984.

नोरटन, डेविड फेट, ऐडि., *द केम्ब्रिज कम्पेनियन टु ह्यूम*, केम्ब्रिज, केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993.

पेनलेम, टी., ह्यूम, *मद्रास*, मैक्मिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया, 1975.

10.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) अनुचिन्तन ह्यूम का ध्यानाकृषित करने वाला शब्द है। यह आंतरिक संवेदनाओं या आंतरिक मनोवृत्तिओं जैसे सामान्यतः भावावेशों, भावनाओं, इच्छाओं, संकल्प शक्तियों और मानसिक क्रियाओं आदि को प्रस्तुत करता है।

2) प्रथमतः, अमूर्त प्रत्यय अपने आप में व्यक्तिगत या विशेष होते हैं। उदाहरण के लिए, किसी रेखा कि वास्तविक लम्बाई स्वयं रेखा से अलग नहीं की जा सकती। हम किसी रेखा का सामान्य प्रत्यय बिना लम्बाई के प्रत्यय के नहीं बना सकते। न ही हम किसी ऐसी रेखा का सामान्य प्रत्यय बना सकते हैं जिसमें सम्पूर्ण लम्बाईयों के प्रत्यय समाहित हो। दूसरे, प्रत्येक संस्कार निर्धारित और निश्चित होता है। चूँकि प्रत्यय संस्कार की छाप या प्रतिरूप होता है इसलिये स्वयं प्रत्यय को भी निर्धारित और निश्चित होना चाहिए। फिर चाहे यह मूल संवेदन–छाप से हल्का ही क्यों न हो। तीसरे, प्रत्येक अस्तित्वमान विषय को विशिष्ट होना चाहिए। उदाहरण के लिए, अपने विशिष्ट गुणों से पृथक कोई त्रिभुज नहीं हो सकता। एक ऐसे त्रिभुज के अस्तित्व को स्वीकार करना, जो सभी सम्भावित प्रकारों और आकरों के त्रिभूजों का प्रतिनिधित्व करता हो और साथ ही किसी भी प्रकार और आकार के त्रिभूज का प्रतिनिधित्व न करता हो, एक मूर्खता है। जो भी वास्तविक और तथ्यात्मक रूप में विसंगतिपूर्ण है वह प्रत्ययात्मक रूप में भी विसंगतिपूर्ण है। अतः ह्यूम बर्कले के इस विचार से सहमत है कि अमूर्त प्रत्ययों का अस्तित्व नहीं होता है।

बोध प्रश्न 2

1) ह्यूम के अनुसार दो मूल विश्वास हैं, बाह्य विषय के स्वतन्त्र और सतत् अस्तित्व में विश्वास और प्रत्येक प्रभाव का (कार्य का) कारण होता है।

2) ह्यूम की यह मान्यता है कि किसी व्यक्ति के दृढ़ संशयवादी विश्वास इसलिये अरक्षणीय नहीं है क्योंकि वे तर्क सम्यक हैं और उन्हें संदेहवादी तर्कों से हटाया नहीं जा सकता, बल्कि वे इसलिये अरक्षणीय है क्योंकि वे बिल्कुल भी तर्क पर आधारित नहीं हैं।

बोध प्रश्न 3

1) ह्यूम स्वीकार करते हैं कि स्वतंत्रता की समस्या कुछ सीमा तक एक भाषागत समस्या है। इस अर्थ में कि स्वतंत्रता को यदि अनिवार्यता से पृथक करके परिभाषित किया जाय तो स्वतंत्रता नहीं है। तथापि इसे किसी दूसरे ढंग से परिभाषित करके प्राप्त किया जा सकता है। उदाहरण स्वरूप, यदि स्वतंत्रता को स्वच्छन्दता के रूप में समझा जाये तो स्वतंत्रता है। क्योंकि यह स्पष्ट है कि मानव की नैतिक कर्ता के रूप में बहुत सारी क्रियाएं बिना किसी बाह्य बाध्यता के प्रारंभ होती हैं। ह्यूम कहते हैं कि यदि इस प्रकार की मुक्त क्रियाएं केवल संयोग मात्र हैं और किसी कार्यकता से संचालित नहीं हैं, तब ईश्वर अथवा मानव के लिए किसी मानव को उसके बुरे और निमर्म कृत्यों के लिए दोषी ठहराना और इस आधार पर उसके नैतिक कृत्यों की आलोचना करना अन्यायपूर्ण होगा।

2) ह्यूम लॉक के इस विचार से सहमत थे कि एक अपरमित बुद्धिमान, कुशाग्र और शुभ ईश्वर के विचार की उत्पत्ति मानव मन की चिंतन प्रक्रिया से, मानवीय अच्छाईयों और बौद्धिकता को असीमित स्तर तक बढ़ाने से होती है। तथापि उसने यह भी कहा कि एक प्रत्यय के रूप में इस परिभाषा को समझने का प्रयास करना अरूचिकर और कठिन है। इस प्रकार ह्यूम ने उसी तरह से समाप्त किया जैसे अधिकांश धर्मपरायण एकेश्वरवादी दैवीय प्रकृति को न समझने योग्य पर बल देकर करते हैं।

इकाई 11 अनुभववाद की आलोचनाएं*

रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 परिचय

11.2 जॉन लॉक

11.3 बर्कले

11.4 डेविड ह्यूम

11.5 सारांश

11.6 कुंजी शब्द

11.7 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम ब्रिटिश अनुभववाद का अध्ययन करेंगे। इस अध्ययन का उद्देश्य पहले की ईकाइयों में पढ़े विचारों को और सुदृढ़ बनाना है। इसका मुख्य मन्तव्य दर्शन के छात्रों को विभिन्न दार्शनिक आन्दोलनों का बिना उनसे प्रभावित हुए अध्ययन कराना है। साथ ही छात्र में किसी भी दर्शन के सत्य तत्व को स्वीकार करने तथा उसकी प्रशंसा करने की प्रवृत्ति विकसित

* प्रो. ऑगस्टीन मंगलथु, कार्मेल विद्या निकेतन कॉलेज, बैंग्लोर। (यह इकाई बीपीवाई–008 की "अनुभववाद का पुनर्वलोकन एवं आलोचनात्मक मूल्यांकन" इकाई का संशोधित संस्करण है)। अनुवाद– वेदप्रकाश सिंह, फरीदाबाद।

करना है। अनेक विद्धानों के अनुसार, तीन मुख्य ब्रिटिश अनुभववादी दार्शनिकों ने मानवता के राजनीतिक तथा बौद्धिक इतिहास को प्रभावित किया है। इस इकाई के अंत में छात्र सक्षम होंगे;

- ब्रिटिश अनुभववादियों के योगदान के वस्तुनिष्ठ एवं आलोचनात्मक मूल्यांकन को सीखना,
- लॉक, बर्कले और ह्यूम के दर्शन के समग्र एवं सारगर्भित दृष्टिकोण को समझने में।

11.1 परिचय

अनुभववादी यह मानते हैं कि केवल इन्द्रिय प्रदत्त ज्ञान की वैध है, क्योंकि यह ज्ञान ही विषय प्रदत्त अनुभवों/संस्कारों पर आधारित होता है। क्या वस्तुनिष्ठ तत्वमीमांसा को इन्द्रिय रूपान्तरण के विश्लेषण द्वारा स्थापित किया जा सकता है? हम इस समस्या का परीक्षण उन दार्शनिकों के दार्शनिक शिक्षणों में करेंगे जिन्हें अनुभववादी कहा जाता है।

'ब्रिटिश अनुभववाद' ग्रेट ब्रिटेन में 18वीं शताब्दी के दार्शनिक आंदोलन से सम्बन्ध रखता है। इसके अनुसार समस्त ज्ञान अनुभव से आता है। यूरोपियन बुद्धिवादयों का मत था कि ज्ञान आधारभूत धारणाओं जैसे कि अन्तर्जात प्रत्यय से आता है, जिन्हें बुद्धि के माध्यम से अंतःप्रज्ञा द्वारा जाना जाता है। बाद में प्रत्ययों को इनसे निगमित किया जाता है। ब्रिटिश अनुभववादियों ने दृढ़ता से अन्तर्जात प्रत्यय के सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया और तर्क दिया कि ज्ञान, इन्द्रिय अनुभवों और आंतरिक मानसिक अनुभवों, जैसे भावनाएं और स्वचिंतन, दोनों पर आधारित है।

11.2 जॉन लॉक

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि लॉक ने पारम्परिक दार्शनिक प्रश्नों के सम्बन्ध में, अनेक बिन्दुओं पर त्रुटिपूर्ण होते हुए भी, आधुनिक राजनैतिक दर्शन के विकास में बड़ा योगदान दिया। उदाहरण के लिए, लॉक ने बताया कि अधिकार एक अपरिमित बुद्धिमान सत्ता (ईश्वर)

और एक विवेकपूर्ण लेकिन निर्भर सत्ता (मानव) के मध्य के सम्बन्ध से निश्चित किये जा सकते हैं। इसलिए नैतिक नियम तर्कपूर्ण हैं और दैवीय अधिकार और फिर प्राकृतिक अधि कार के साथ सम्बन्धित किये जा सकते हैं। नैतिक नियमों के पास अनिवार्य रूप से समुचित प्रतिबन्धों (पुरस्कार और दण्ड) को होना चाहिए जो संकल्प पर इस ढंग से लागू हो कि वे मनुष्य को उस प्रवृत्ति से दूर रखें जो उसके अपने कल्याण के लिये घातक होते हैं।

लॉक ने थॉमस हॉब्स के समाजिक सिद्धांत का विरोध यह कहकर किया कि आदिम युग में मनुष्य जंगली नहीं था, जहां अधिकारों को बलपूर्वक प्राप्त किया जाता था। मानव तब भी विवेकी थे और जीवन के आधारभूत अधिकारों, स्वतंत्रता, सम्पत्ति, और इसी प्रकार के अन्य अधिकारों के विचार से परिपूर्ण थे। मनुष्य की प्राकृतिक अवस्था से सामाजिक अवस्था तक की प्रगति एक अवस्था से दूसरी अवस्था तक की प्रगति है; लेकिन इसमें कोई नव परिवर्तन समाहित नहीं है। ऐसी संप्रभु सत्ता जो अपने नागरिक के अधिकारों की रक्षा करने की अपनी वचनबद्धता में असफल होती है वह संप्रभुता की अधिकारी नहीं है और अपने नागरिकों द्वारा उसे हटाया जा सकता हे। लॉक को शास्त्रीय उदारवादी राजनीति का संस्थापक समझा जाता है और अपने जीवन काल से लेकर कई शताब्दीयों तक उनका अत्यधिक प्रभाव रहा था। इसमें अमेरिका गणतंत्र की स्थापना में उनका दार्शनिक योगदान भी सम्मिलित है।

लॉक इस वात के प्रति आश्वस्त थे कि एक बार मनुष्य के मन ने तथ्यों को समझना सीख लिया, एक बार वह अपनी शक्तियों को जान गया और अपनी वास्तविक सीमितताओं को पहचान गया, एक बार वह ज्ञान की प्रकृति और विस्तार के विषय में निश्चित हो गया, तब दर्शन का विकास निर्बाध रूप से होता रहेगा। इस प्रकार, लॉक की विशेष रुचि ज्ञानमीमांसीय प्रश्न में थी। ज्ञान की स्पष्टता में रूचि रखते हुए भी लॉक संवेदनात्मक ज्ञान और बौद्धिक ज्ञान में अन्तर करने से बच नहीं सके और इस प्रकार उन्होंने अपने दर्शन को अस्पष्ट और अधिक जटिल बना दिया। परिणाम स्वरूप, कोई भी न केवल उनसे भिन्न बल्कि विपरीत, मत को उनकी सैद्धान्तिक अवधारणाओं से निकाल सकता है।

11.4.1 ज्ञानमीमांसा

लॉक ने अन्तर्जात प्रत्ययों के देकार्त के मत का कठोर रूप से विरोध किया। उनके अनुसार, समस्त ज्ञान अनुभव से आता है। ज्ञान के तत्व प्रत्यय हैं, और लॉक ने अपने निबंध *एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेण्डिग* में प्रत्यय की निम्न प्रकार से व्याख्या की है; "यह वह पद है जो, मैं सोचता हूँ, जब मनुष्य सोचता है तो उसके बोध के विषय को प्रस्तुत करने के लिए प्रयुक्त होता है, मैं कल्पना, मंतव्य, जाति, या फिर वह सब कुछ जिसे सोचने के लिए मन का उपयोग हो सकता है, को व्यक्त करने के लिये प्रत्यय शब्द का प्रयोग करता हूँ।'' *(एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेण्डिग,* परिचय, खण्ड 8)।

देकार्त ने समस्त इन्द्रिय प्रत्यक्ष को आध्यात्मिक मन में स्थापित किया और इस प्रकार इन्द्रिय प्रत्यक्ष को आध्यात्मिक क्रिया के साथ सम्बन्धित किया। इसके विपरीत, लॉक ने प्रत्ययों को, कम से कम कुछ सीमा तक, इन्द्रिय सम्वेदन (कल्पना, जाति) के स्तर पर लाकर रख दिया। इस प्रकार, उन्होंने स्वच्छिक ढंग से इन्द्रिय प्रत्यक्ष को समाहित करके प्रत्यय की प्रकृति को धुंधला कर दिया और इन्द्रियवाद संवेदनावाद की आधारशिला रखी, जहाँ सभी चिन्तन और कुछ नहीं है बल्कि संवेदना का एक प्रकार है। प्रत्यय की इस परिभाषा का एक अन्य महत्वपूर्ण लक्षण यह है कि श्प्रत्ययश् हमारे बोध का विषय है, न कि वस्तु–सत्।

लॉक के अनुसार, प्रत्यय, दो स्रोतों से निष्पन्न होते हैं– इन्द्रिय प्रत्यक्ष और चिंतन और समस्त ज्ञान प्रत्ययों में सीमित है। चूँकि मनस अपने समस्त विचारों और तर्कों में प्रत्यय, न कि अन्य कोई तत्कालिक विषय, को जानता है, मन केवल प्रत्यय को ही समझ सकता है इसलिये यह स्पष्ट है कि हमारा ज्ञान केवल उनसे ही परिचित है। (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेण्डिग,* पुस्तक 4, अध्याय 1, खण्ड 1)।

लॉक के अनुसार, प्रत्ययों के बीच संगति या असंगति या विरोधिता के सम्बन्ध के प्रत्यक्ष को ज्ञान कहते हैं। (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेण्डिग,* पुस्तक 2, अध्याय 21, खण्ड 5)।

निश्चय ही, इसका अर्थ यह है कि हम वास्तव में वस्तुओं या वस्तुसत् को नहीं जानते बल्कि प्रत्यय या मन की चेतन अवस्था को जानते हैं और यही देकार्त और प्रत्ययवाद का दृष्टिकोण है। यद्यपि, लॉक न तो भौतिक पदार्थों जैसे द्रव्य, न ही आध्यात्मिक पदार्थों, जैसे आत्मा और

ईश्वर के अस्तित्व का खण्डन करते हैं, वह केवल भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के द्रव्यों को अज्ञेय मानते हैं। किन्तु वस्तु सत् के रूप में कुछ तो होना चाहिए, क्योंकि नहीं तो मेरे मन पर पड़े इन्द्रिय सम्वेदनाओं का विश्लेषण नहीं किया जा सकेगा। लॉक अन्तर्जात क्षमताओं के प्रागानुभविक स्वरूप को स्वीकार नहीं करते। लॉक बताते हैं कि मानव मन में ज्ञान के तीन स्तर होते हैं; अन्तःप्रज्ञात्मक, प्रदर्शनात्मक और सम्वेदनात्मक ज्ञान। प्रथम प्रकार साधारणतः और अधिक जटिल प्रत्यय बनाने के लिए दो या अधिक सरल प्रत्ययों का संयोजन है।

जॉन लॉक की कृति, *एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेण्डिग* प्रबोधन काल की प्रथम सीढ़ी है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि उन्होंने यह दावा नहीं किया कि उनका दर्शन सभी निश्चितताओं को खोज सकता है, बल्कि उन्होंने यह कहा कि यह उन वस्तुओं को खोज सकता है जो निश्चित रूप से हमारे बोध से परे हैं। लॉक के लिए ऐसा ज्ञान सर्वाधिक निश्चित होता है और ज्ञान को आधार प्रदान करता है। लॉक के अनुसार, समस्त प्रत्ययों को या सरल या जटिल प्रत्यय में वर्गीकृत किया जा सकता है। जटिल प्रत्यय सरल प्रत्यय की अन्य प्रत्यय से तुलना करके बनाये जाते हैं। लॉक ने इस प्रश्न का उत्तर यह कहते हुए दिया कि प्रत्यय उस स्तर तक जगत की बाह्य वस्तुओं को प्रदर्शित करते हैं जितना ईश्वर चाहते हैं। प्रदर्शनात्मक ज्ञान उस स्तर का ज्ञान है जिसे हम तार्किक चरणों, कतिपय निश्चितताओं की प्रक्रिया द्वारा प्रकाशित कर जान सकते हैं। ये प्रत्यय मन की विभिन्न तीन क्रियाओं द्वारा बनते हैं; मिश्रण करना, तुलना करना और अमूर्तीकरण करना। लॉक के अनुसार, सरल प्रत्यय सबसे आधारभूत मानसिक गुण हैं। उदाहरणार्थ, अंगूर का प्रत्यय गोलपन, लालपन, और कोमलपन के सरल प्रत्ययों से निर्मित होता है।

हमारा द्रव्य का प्रत्यय सा रूप से अस्पष्ट है, मैं नहीं जानता कि वह क्या है अथवा वह है भी या नहीं; किन्तु यह गुणों को धारण करने वाला प्रत्यय है। (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेण्डिग*, पुस्तक 2, अध्याय 23, खण्ड 15)। विस्तारित, आकृतिवान, रंगयुक्त और सभी अन्य अनुभवपरक गुणों का जटिल प्रत्यय ही वह सब है जिसे हम जानते हैं, द्रव्य के प्रत्यय से

हम उतने दूर है, जैसे कि हम इसके बारे में कुछ नहीं जानते। (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेण्डिग*, पुस्तक 2, अध्याय 23, खण्ड 16)।

11.4.2 प्राथमिक और द्वितीयक गुण

लॉक ने भौतिक (शरीरवान) वस्तुओं में इन्द्रिय–संवेद्य गुणों का प्राथमिक एवं द्वितीयक के रूप में भेद किया। ज्ञान के स्वरूप की खोज करने में लॉक को निरन्तर ऐसे प्रश्नों का सामना करना पड़ा कि क्या अनुभव के विषय वास्तव में ऐसे हैं जैसे वे दिखते हैं; घास क्या वास्तव में हरी है; क्या घूमने वाला पहिया वास्तव में गति में है। पत्थर क्या वास्तव में ठोस है? लॉक ने देखा कि कुछ कतिपय गुण अभेद्यता, विस्तार, आकार, स्थिरता, गति सभी पिण्डों में समान हैं। ये प्राथमिक गुण कहलाते हैं और वस्तुनिष्ठ वस्तुओं में अस्तित्व मान होते हैं। किन्तु कुछ ऐसे अन्य गुण भी हैं जो सभी पिण्डों में समान रूप से नहीं पाये जाते जैसे कि रंग ध्वनि, स्वाद, गंध, ताप प्रतिरोध आदि और ये द्वितीयक गुण कहलाते हैं। ये गुण मुख्यतः आत्मनिष्ठ होते हैं।

लॉक द्वारा संवेदित गुणों के प्राथमिक और द्वितीयक के रूप में भेद पर आपत्ति यह आ सकती है कि प्राथमिक एवं द्वितीयक गुणों की वस्तुनिष्ठ वास्तविकता सिद्ध नहीं हो सकती क्योंकि हम प्राथमिक गणों के बारे में पूर्ण रूप से अनभिज्ञ हैं। हम इन्हें केवल गुणों के माध्यम से ही जान सकते हैं और यदि द्वितीयक गुण, आत्मनिष्ठ होने के कारण, सन्दिग्ध होते हैं तो हमारे पास कोई कारण नहीं है कि प्राथमिक गुणों की वास्तविकता पर विश्वास करें। लॉक का संवेदनात्मक–गुणों का सिद्धांत पूर्ण संशयवाद के स्व–अंतर्विरोध के मार्ग को इंगित करता है।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणीः

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) अनुभववाद का आधारभूत विचार क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

2) जान लॉक की ज्ञानमीमांसा की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

11.3 बर्कले

जॉन लॉक ने ज्ञान का एक ऐसा सिद्धांत प्रस्तुत किया जिसमें द्रव्य स्वयं में ही बद्ध था। ऐसे ज्ञान का उद्देश्य परिणामतः प्रत्यय (विषयगत प्रभाव) होते है न कि वस्तुएँ। यदि प्रत्यय हमारे ज्ञान की त्वरित वस्तु है, तो यह सदैव सम्भव है कि ऐसे प्रत्ययों के समान कोई बाह्य यथार्थ हो ही नहीं।

जॉर्ज बर्कले ने इस सिद्धांत को नकार दिया और बाह्य–विश्व के यथार्थ को सीमित और असीमित आत्मा (ईश्वर) तक सीमित कर दिया। बर्कले के अनुसार, कोई भौतिक जगत नहीं है। यहाँ तक की लॉक का द्रव्य का सम्प्रत्यय मात्र एक नाम है, जिसमें कोई सत्य नहीं है। यह केवल आत्माओं का विश्व है, जिसे उच्चतम आत्मा (ईश्वर) नियंत्रित करती है।

बर्कले के दर्शन का आरम्भिक बिंदु लॉक का भाषा सिद्धांत है। लॉक के अनुसार, शब्दों में अर्थ उनके अनुरूप उपस्थित प्रत्ययों द्वारा आता है और सामान्य शब्द, जैसे कि विधेय, अमूर्त

सामान्य प्रत्ययों के संगत अर्थग्रहण करते हैं। ऐसे प्रत्ययों का निर्माण करने की क्षमता ही मानव और पशु में भेद करती है।

बर्कले लॉक के निबंध से सामान्य शब्दों के दो भिन्न अर्थ निकालते हैं। प्रथम को हम प्रतिनिधित्व सिद्धांत तथा दूसरे को निष्कर्षात्मक सिद्धांत कह सकते हैं। प्रथम के अनुसार, सामान्य प्रत्यय विशिष्ट प्रत्यय है। विशिष्ट प्रत्यय को सामान्य प्रत्यय विशिष्ट वस्तुओं के सभी प्रकारों के लिये एक आदर्श प्रकार को प्रस्तुत करके बनाया जाता है। जैसे कि अध्यापक सभी त्रिकोणों को प्रदर्शित करने के लिये एक त्रिकोण को श्यामपट्ट पर बनाता है। द्वितीय के अनुसार, एक सामान्य प्रत्यय ऐसा विशिष्ट प्रत्यय है जिसे वस्तुओं में उपस्थित समान गुणों को एक नाम देकर बनाया जाता है। जैसे मनुष्य का अमूर्त प्रत्यय पीटर, राम और रहीम की विशिष्टता को परे रख उनके केवल सामान्य गुणों को संचित करता है।

11.3.1 ज्ञान का सिद्धांत

बर्कले का ज्ञान सिद्धांत लॉक की इस अनुभववादी शिक्षा को स्वीकारता है, जिसके अनुसार हमारे ज्ञान की त्वरित विषय–वस्तु प्रत्यय (विषयीनिष्ठ संवेदन) है। यद्यपि बर्कले लॉक द्वारा प्रस्तुत प्राथमिक (वस्तुगत) और द्वितीयक (विषयीगत) गुणों के विभाजन को नकार देते हैं।

प्राथमिक गुण (समय, स्थान, गति) द्वितीयक गुण (रंग, ध्वनि) के बिना अनुभूत नहीं हो सकते। वास्तव में, हम प्राथमिक गुणों को द्वितीयक गुणों के संयोजन और उनके द्वारा ही जान पाते हैं। यदि हम विषयीगत प्रभाव को अनुभूत करने के ढंग जानते हैं तो ऐसे प्रभाव दो कोटियों में, एक विषयीगत और दूसरा वस्तुगत, विभाजित नहीं हो सकते। सभी संवेदन केवल विषयी द्वारा अनूभूत होने चाहिए, अतः सभी गुण विषयीगत हैं।

बर्कले रहस्यात्मक वस्तुनिष्ठ आधार के रूप में लॉक के द्रव्य के प्रत्यय का निषेध करते हैं। बर्कले पूछते हैं कि क्या ऐसा कोई भौतिक आधार, हमारी संवेदनाओं से पृथक अस्तित्वमान हो सकता है। यदि यह हमारे संवेदनों से पृथक हैं, तो अनुभूतिगम्य नहीं हो सकता। यदि वह

हमारे संवेदनों से सम्बन्धित है, तो वह विषयी में स्थित हैं और इस प्रकार भौतिक पदार्थ संज्ञानात्मक परिघटनाएं सिद्ध होते हैं और इसका प्रकार विषयनिष्ठ ठहरता है।

अतः, यह असम्भव है कि पदार्थ स्वः अस्तित्वमान, वस्तुनिष्ठ, अक्रिय और चिन्तन रहीत हो। जब हम कहते हैं कि वस्तु है तो इसका अर्थ है कि वह हमारे द्वारा अनुभूत है। वस्तुओं का अस्तित्व प्रत्यक्ष आधारित होना है; अर्थात अनुभूत होना ही अस्तित्वमान होना है; (दृश्यते इति वर्तते) है।

प्राथमिक और द्वितीयक गुण, पदार्थ और संवेदन प्रत्यक्ष क्रिया के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं। ये मानसिक तथ्य हैं। इस प्रकार बर्कले का ज्ञान का सिद्धांत सभी यथार्थ वस्तुओं को प्रतिभासित सत् के स्तर पर ले आता है। अतः, भौतिक जगत केवल संज्ञानात्मक, निर्मित और मानसिक सिद्ध होता है। अतः सभी कुछ विषयीनिष्ठ रूप से अस्तित्वमान हैं।

बर्कले सामान्य और सार्वभौमिक प्रत्ययों का खण्डन करते हैं। मन एक सामान्य रंग, जो न तो लाल है न सफेद है, का प्रत्यय नहीं बना सकता। अतः केवल विशेष, निर्धारित प्रत्यय होते हैं और तथाकथित सामान्य प्रत्यय केवल नाम है, प्रत्यय नहीं। सामान्य प्रत्यय न तो मन में होते हैं और न ही मन से बाहर। जहाँ तक यह सामान्य और अमूर्त प्रत्ययों का निषेध करता है, बर्कले का नामवाद लॉक से अधिक मौलिक है। लॉक ने उन पर (प्रत्ययों पर) केवल प्रतिबंध आरोपित किये हैं।

11.3.2 ब्रह्माण्ड की प्रकृति

बर्कले भौतिक जगत का खण्डन करते हैं और इसे ज्ञानात्मक प्रपंच मानते हैं किन्तु वे आध्यात्मिक विश्व के अस्तित्व से इनकार नहीं करते। वे मानते हैं कि उन्होंने विषयीनिष्ठ प्रत्ययों की उपस्थिति से आध्यात्मिक विश्व के अस्तित्व को सिद्ध कर दिया है। बर्कले अपनी आत्मा के अस्तित्व के प्रति आश्वस्त होकर इसकी प्रकृति निर्धारित करने का प्रयास करते हैं। आत्मा प्रत्यय–जनक होने से सक्रिय और प्रत्यय–ग्रहण करने से अक्रिय भी है। इसकी क्रिया शीलता कल्पना में और स्मृति में प्रकट होती है, जिसकी सहायता से हम प्रत्यय उत्पन्न व

स्मृत करते हैं। आत्मा की निष्क्रियता, जैसा हमने ऊपर कहा है, इस तथ्य में प्रकट होती हैं कि आत्मा उन प्रत्ययों को ग्रहण करती है, जिन्हें उसने उत्पन्न नहीं किया हैं। फलतः, यह हमारी शक्ति के बाहर है कि कमरे की चीजें हमें इच्छानुसार दिखाई दे और न दिखाई दे।

आत्मा की यह अक्रियता बर्कले को अपने से अन्य सीमित आत्माओं के अस्तित्व को और ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने में सहायता प्रदान करती है। वे प्रश्न करते हैं कि उन प्रत्ययों का मूल क्या है जो हमारी आत्मा पर आरोपित है और जिसकी उत्पत्ति हमसे नहीं हुई है। उनके अनुसार, वे अन्य आत्माओं की इच्छा से उत्पन्न हैं चूँकि जैसे मैं देखता हूँ वैसे ही अन्य आत्माएँ भी देखती हैं। प्रत्ययों के उत्पादन में मेरी आत्मा के साथ–साथ अन्य आत्माएँ सहायक होती हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे प्रत्यय भी हैं जिसे हम अनुभूत तो करते हैं किन्तु वे मेरी आत्मा से जनित नहीं हैं, न ही किसी अन्य सीमित सत्ता से उत्पन्न माने जा सकते हैं– जैसे प्राकृतिक प्रपंचों की नियमितता। बिना किसी की इच्छा के अग्नि सदैव जलाती है। ऐसे प्रत्यय हेतु सभी सीमित आत्माओं से पृथक एक असीमित आत्मा (ईश्वर) की आवश्यकता होती है, जो प्राकृतिक पंपचों की व्यवस्था, संतुलन और स्थिरता बनाए रखता है।

इस प्रकार, ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करके बर्कले मानते हैं कि उन्होंने आधत्मिक परिघटनावाद के विरुध खड़ी सभी कठिनाइयों को हल कर दिया है। उदाहरण के लिए, जैसे कोई पूछता है कि यदि प्रत्ययों/वस्तुओं का अस्तित्व आत्मा की इच्छा पर निर्भर है तब क्या वस्तुएँ तब भी अस्तित्वमान रहती हैं जब हम कमरे या घर में नहीं होते। बर्कले इस उत्तर हां में देते हैं और कहते हैं कि जब सीमित आत्मा चीजें अनुभूत नहीं करती होती हैं तो उसे ईश्वर देखता है। अब, यदि कोई चित्र की आग और वास्तविक आग में अंतर करते हुए प्रश्न करता है कि क्यों चित्र की आग जलाती नहीं है और वास्तवकि आग जलाती है तो बर्कले का उत्तर होगा कि जन्मदाता ईश्वर ने वास्तविक आग में जलाने का प्रत्यय जोड़ा है जोकि चित्रात्मक आग में नहीं है।

संक्षेप में, इस अन्तर के साथ बर्कले का प्रपंचात्मक जगत जैसा लोग जानते हैं उससे अलग नहीं है। अन्तर केवल यह है कि जहां सामान्य अवधारणा यह है कि प्राकृतिक प्रपंच भौतिक

जगत के उत्पाद हैं वहीं बर्कले के अनुसार भौतिक जगत का अस्तित्व नहीं है। भौतिक जगत के अस्तित्व का मूल ईश्वर भौतिक जगत की वस्तुओं के संगत प्रत्यय को उत्पन्न एवं व्यक्त करने वाला, है। इस प्रकार, अब हम मेलब्रांश के प्रसंगवाद पर पहुँच जाते हैं; ईश्वर आत्मा में प्रत्यय उत्पन्न करता है। प्रत्यय आत्मा को प्रभावित करते हैं। स्थायी सम्बन्ध, जिससे ईश्वर हमारी आत्माओं के प्रत्यय निर्धारित करता है, तथाकथित प्रकृति के नियम है। यह वह भाषा हैं जिसके माध्यम से ईश्वर स्वयं को प्रकट करता है और हमें निर्देश देता है। इस प्रकार बर्कले विश्वास करते हैं कि उन्होंने वह कार्य सम्पन्न कर दिया जिसे उन्होंने आरम्भ किया थारू नास्तिकतावादियों के आक्रमण से ईश्वरवाद की प्रतिरक्षा तथा भौतिकवादी विश्व के अस्तित्व का खण्डन।

लेकिन क्या बर्कले ने अपना लक्ष्य प्राप्त किया? सीमित आत्माओं का प्रत्ययों से भिन्न अस्तित्व आध्यात्मिक द्रव्य के सम्प्रत्यय को जन्म देता है। आत्मा की सक्रियता और निष्क्रियता कारणता के प्रत्यय को आपादित करती है। ईश्वर के अस्तित्व की स्वीकृति कारणता और पदार्थ दोनों के सम्प्रत्यय को जन्म देती है। वस्तुतः, इन सभी सम्प्रत्ययों को तत्वमीमांसीय रूप से स्थापित किया जाना चाहिए था, जो बर्कले ने नहीं किया। अनुभववाद का पूर्ण परिघटनावाद की ओर विकास बर्कले में आधे रास्ते तक जाता है।

वह ह्यूम थे जिन्होंने अनुभववाद के तार्किक निष्कर्षों को निकाला और परिघटनावाद को न केवल भौतिक द्रव्य के प्रसंग में, जैसा कि बर्कले ने किया, वरन् आध्यात्मिक पदार्थ के संदर्भ में भी स्थापित किया।

बर्कले सामान्य को वैध नहीं मान सके। उन्होंने सामान्यों और स्वयंसिद्धों को अनावश्यक रूप से नकार दिया। उनके दर्शन की सबसे बड़ी कमजोरी यह थी कि उन्होंने बहुत कुछ, विशेष रूप से बाह्य विश्व, बिना व्याख्या के छोड़ दिया। उनका आधारभूत सिद्धांत–मन केवल अपने प्रत्यय जान सकता है– को अहमवादी अवस्था (Egocontric predicament) कहा जाता है। यह अज्ञात की कल्पना करने की अवस्था है। बर्कले के दर्शन से चिन्तन की दो धाराएं निकलती हैं; उनके कमजोर पक्ष सामान्यों का निषेध से डेविड ह्यूम का दर्शन प्रतिपादित होता है।

उनका सबल पक्ष–आत्मा की सर्वोच्चता, जर्मन प्रत्ययवाद; फ़िक्टे, शेलिंग, श्लाईमेकर और हेगेल की ओर जाता है।

11.4 डेविड ह्यूम

ह्यूम के अनुसार, अनुभवों के संगठित और संश्लेषित होने के ढंगों को दिग्दर्शित करके प्रथाएँ और परम्पराएँ मन को संरचना प्रदान करती हैं। सहज बुद्धि प्रत्यय भूतकालीन पीढ़ी के विभिन्न अनुभवों का संग्रह होते हैं। नयी पीढ़ी उन्हें अनुपूरित कर सकती है लेकिन उन्हें अनदेखा नहीं कर सकती। यद्यपि प्रथा और परम्परा अनुभव से श्रेष्ठ नहीं हैं। तब क्या पूर्णतः नए प्रकार के अनुभव (जैसे कि नये उपकरणों यथा इलेक्ट्रान सूक्ष्मदर्शी और एम.आर.आई. आदि से उत्पन्न नया अनुभविक ज्ञान) उत्पन्न होते हैं और तब क्या चिन्तन की प्रथागत आदत उनमें उपयुक्त रूपान्त्रण करती है। अधिकतर अनुभववादी तथ्य और मूल्य में स्पष्ट भेद करते हैं। मूल्यपरक निर्णय मन के 'अतार्किक' तत्वों से निगमित होते हैं। अनुभूति, संवेग या अभिवृत्ति, जिसमें अनुभविक वैधता की कमी होती है, इसके उदाहरण हैं। शुद्ध विवरणात्मक और सत्यापनीय कथन वह हैं जो अनुभव के अनुरूप होते हैं। कई अनुभववादी कहते हैं कि मूल्यात्मक कथन मात्र तथ्यों से निगमित नहीं हो सकते; वे तथ्यों की संवेगात्मक प्रतिक्रियाएँ है जो विभिन्न व्यक्तियों में भिन्न हो सकती हैं। अनुभवादी मूल्यपरक कथनों को तभी वर्णनात्मक मान सकते हैं जबकि मूल्यपरक दावों को व्यक्तियों की वास्तविक इच्छाओं अथवा वास्तविक अनुभवपरक आनन्द के स्तर पर लाया जा सके। यही कारण है कि बाद के अनुभवादी जैसे मिल और जेम्स नैतिकता के सिद्धांत के उपयोगितावादी सिद्धांत की और आकर्षित हो जाते हैं। अनुभववादी मन को मूलतः निष्क्रिय मानते हैं। उनके अनुसार, मन वास्तविक वस्तुओं से उत्पन्न संस्कारों को ग्रहण करता है। बुद्धि का मुख्य प्रकार्य अनुभविक प्रस्तुतियों में समानता और विभिन्नता की खोज करना है। इस प्रकार बुद्धि विभिन्न समानताओं को प्रकारों और साधारण सामान्यीकरणों में अपघटित कर सम्प्रत्ययों का निर्माण करती है जिससे आगे के अनुभव सुसंगठित हो सकें।

11.4.1 कारणता

यदि हम कारणता के प्रत्यय के मूल के सम्बन्ध में ह्यूम कहते हैं, हम पाते हैं कि यह वस्तु का आंतरिक गुण नहीं हो सकता। क्योंकि दो विभिन्न प्रकार कि वस्तुएं भी कारण और कार्य हो सकती है। इसलिए कारणता के स्थान पर हमें वस्तुओं के बीच के सम्बन्ध को देखना चाहिए। ध्यान से देखने पर वास्तव में हम यह पाते हैं कि कारण और कार्य एक दूसरे के समीप होते हैं। कारण सदैव कार्य से पूर्व होता है। परन्तु ज्ञान के लिये मात्र यही पर्याप्त नहीं है। यद्यपि प्रकृतिक रूप से अस्तित्व का कारणपरक होना आवश्यक नहीं है किन्तु फिर भी हमें अनुभव होता है कि कारण और कार्य के बीच एक अनिवार्य सम्बन्ध होना चाहिए। यदि ऐसा सोचने में कोई असंगति नहीं है कि चीजें बिना किसी कारण के अस्तित्व में या परिवर्तित होती है तो यह मानने में भी कोई असंगति नहीं है कि कोई घटना बिना किसी विशिष्ट कारण के अस्तित्वमान है। क्योंकि कई विभिन्न कार्य तार्किक रूप से एक विशेष कारण से उत्पन्न होते हैं, केवल अनुभव उनमें से एक वास्तविक कार्य की ओर ले जाता है।

यह विरोधाभासी लग सकता है कि अनुमान कार्य–कारण के अनिवार्य सम्बन्ध पर निर्भर नहीं होता है बल्कि अनिवार्य सम्बन्ध अनुमान पर आधृत है। हम कारणता को दो प्रकार से परिभाषित करते है; प्रथम; कारण कार्य के पूर्व एवं निकटवर्ती होता है और पूर्ववर्ती (कारण) के अनुरूप सभी वस्तुएं अनुवर्ती (कार्य) के अनुरूप सभी वस्तुओं के साथ पूर्वर्तिता और सामीप्यता से सम्बन्धित होती हैं। इस परिभाषा में अनिवार्य सम्बन्ध के बारे में कुछ नहीं कहा गया है और मन की क्रिया का कोई उल्लेख नहीं है। फलतः, दूसरी अधिक दार्शनिक भाषा के अनुसार; कारण कार्य के पूर्व एंव समीप होता है और दोनों कल्पना में संयुक्त कर लिये जाते हैं। यह प्रक्रिया कुछ इस प्रकार होती हैरू प्रथम (कारण) का प्रत्यय द्वितीय (कार्य) के प्रत्यय के निर्माण के लिये मन को नियत करता है और प्रथम का संस्कार द्वितीय का और अधिक जीवन्त प्रत्यय निर्मित करने के लिये मन को प्रेरित करता है।

ज्ञातव्य है कि दूसरी परिभाषा में मन को एक प्रत्यय के होने से दूसरा प्रत्यय बनाने के लिये नियत माना गया है। ह्यूम की कारणता के विश्लेषण की मौलिकता और शक्ति उनके द्वारा प्रयुक्त भाषा के कारण छिप गई है। परिणामतः, उनकी कारणता की व्याख्या संस्कार और

प्रत्यय की यान्त्रिकता के कारण सभी प्रकार की अस्पष्टता से ग्रसित हो गयी है। परंतु हम मनोतार्किक साधन से तीन प्रकार के अति महत्वपूर्ण सिद्धांत पृथक कर सकते हैं;

अ) कारण और प्रभाव दोनों का पृथक अस्तित्व हैं ओर वे एक दूसरे के बिना ग्रहण किये जा सकते हैं।

ब) कारणिक सम्बन्ध, सामीप्य, पूर्णवर्तीता और नित्य संयोग के रूप में विश्लेषित होने चाहिए।

स) यह एक अनिवार्य सत्य नहीं है कि प्रत्येक अस्तित्व का आरम्भ एक कारण से होता है।

इनमें से प्रत्येक सिद्धांत गंभीर दार्शनिक विवेचना की मांग करता है। कुछ की आलोचना काण्ट ने की है, और अन्य का खण्डन अथवा रूपान्तण अधिक आधुनिक काल के दार्शनिकों ने किया है। परंतु यह ह्यूम ही थे जिन्होंने कारणता और इसके सम्बन्ध की सारगर्भित विवेचना आरम्भ की।

ह्यूम की कारणता के सिद्धांत की विवेचना पर हम चकित हो सकते हैं कि उनकी परिभाषा में किस आधार पर 'प्रवृत्ति का उदय' प्रकट होता है। यद्यपि यदि हम 'सचेत रूप से किसी नयी प्रवृत्ति का उदय' को 'नयी प्रवृत्ति के उदय होने का अवलोकन' से बदल दें तो उनकी परिभाषा सत्य नहीं रह जाती। ह्यूम के मन–दर्शन और कारणता के विवरण से किसी क्रिया के 'गुप्त उदय' के लिये कोई स्थान नहीं बचता। वास्तव में, कारण रूप में संकल्प की अनिवार्यता की उनकी मांग न तो उनकी स्वतंत्र संकल्प की परिभाषा के और न ही उनके अपने कारणता के सिद्धांत के संगत है।

कारणता, आगमन और आत्मा के बारे में ह्यूम का संदेह तर्कशास्त्र के नियमों और व्यक्ति की गरिमा पर भी समान रूप से लागू होता है। तार्किक नियमों का सटीक स्तर अनुभववादियों को परेशान करता है। उन्हें तार्किक नियमों को वास्तविक चिन्तन प्रक्रिया के सामान्यीकरण के रूप में मानना पड़ता है जो प्रायः गलत होता है। परन्तु तर्क शास्त्रीय निश्चितता इससे कहीं अधिक गहरी प्रतीत होती है। तर्कशास्त्र के आधार पर संशय वैज्ञानिक तर्क प्रक्रिया को भी संदेह में

डालता है। चूंकि कारणता विश्व के यांत्रिक दृष्टिकोण के मूल में है इसलिये ह्यूम का संशयवाद इसे भी कटघरे में खड़ा करता है। समान रूप से ह्यूम का व्यक्तिगत आत्म सम्बंधि संशय व्यक्तिगत अधिकारों और सम्पूर्ण प्रथम–पुरूष दृष्टिकोण के लिये भी घातक सिद्ध होता है।

ह्यूम का अस्पष्ट दर्शन आधुनिक स्तर लिए है। यह संस्कारों का समूह, जो कहीं से भी एकत्रित नहीं हैं, मन की अंतर्वस्तु, जो स्वयं आधान नहीं है, को स्वीकार करता है। यहाँ हमारे समक्ष आधुनिक यथार्थवाद के विरोधियों की मन की परिभाषा 'परिस्थितियों का व्यापक प्रतिनिधित्व' की अबोधगम्यता उभर कर सामने आती है। ह्यूम कहते हैं कि हम केवल अपने प्रत्यक्षों (संस्कार और प्रत्यय) के बारे में ही पूर्णतः निश्चित हो सकते हैं। इन और ऐसे प्रत्यक्षों में कोई कारणता का सम्बन्ध नहीं है। वास्तव में, कहीं भी कारणता की उपस्थिति का ज्ञान नहीं होता है। यदि बाह्य जगत वास्तव में अस्तित्वमान है तो उसके अस्तित्व की सिद्धि का हमारे पास कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। उनका सैद्धांतिक अनुभववाद सम्पूर्ण तार्किक ज्ञान के विध्वंस के साथ समाप्त होता है। यह अनिवार्यतः संशयवाद को जन्म देता है और साथ ही विषयीनिष्ठतावाद और सापेक्षवाद को भी जन्म देता है। ये दोनों आधुनिक दर्शन के स्तंभ हैं।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणीः

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) बर्कले के ज्ञान के सिद्धांत का मूल्यांकन करो।

.....

.....

.....

.....

2) डेविड ह्यूम का कारणता का सिद्धांत क्या है?

.....

.....

.....

.....

11.5 सारांश

अनुभववाद ने विज्ञान की विधियों की मान्यताओं का पक्ष लिया और मन की पूरकता का सिद्धांत विकसित किया। विषमतापूर्वक, जहाँ वैज्ञानिकों ने प्रकृति की व्याख्या में महत्वपूर्ण योगदान दिये वहीं अनुभववादियों ने वैज्ञानिक चिंतन को ही संशय की दृष्टि से देखा। उदाहरणतः, ह्यूम ने इस पर संदेह किया कि क्या कारणता को स्थापित किया जा सकता है और आगमन को प्रमाणित किया जा सकता है। वे मानते हैं कि मानव स्वाभाविक रूप से साथ–साथ होने वाली घटनाओं को कारणता से जोड़ता है। कारणता में एक घटना दूसरी घटना द्वारा अनुकरित होती है न कि उत्पन्न करती है। समान रूप से, अनुभविक रूप से या तार्किक रूप से यह कभी सिद्ध नहीं किया जा सकता की भविष्य में भी भूतकाल में स्थापित संवेदनाओं के सयोग सदैव फलित होंगे। यह केवल सम्भावना हो सकती है निश्चितता नहीं। क्योंकि आत्मा का अनुभव ज्ञान से नहीं होता, इसलिये उन्होंने आत्मा, जो अनुभवों को एकत्रित करती है, के अस्तित्व पर भी संदेह किया। ह्यूम के संशयवाद ने पूरे अनुभववादी आंदोलन को शिखर पर पहुँचाया।

तीन कथन अनुभववाद को परिभाषित करते हैं; सभी ज्ञान अनुभव से आते हैं, अनुभव के पूर्व मन श्वेत पट्टिका के समान होता है, अतः सम्प्रत्यय अमूर्तन संवेदनों के सहचर्य के द्वारा उभरते हैं, और संवेदन सरल अथवा आणविक होते हैं या सरल अथवा आणविक के स्तर तक

अपघटित किये जा सकते हैं। सम्पूर्ण ज्ञान को अनुभव से उत्पन्न मान कर और यह मान कर कि अनुभव केवल बाह्य जगत को प्रतिबिम्बित करता है, अनुभववादी देर्कात के प्रथम व्यक्ति दृष्टिकोण और उनके इस विचार कि केवल व्यक्ति ही अपने स्वयं के सम्वेदनों को समझ सकता है को सुदृढ़ बनाते हैं। तथापि, वे बुद्धि के महत्व को कम करके देकार्त से पृथक हो जाते हैं। समान अनुभवों के सहचर्य से संप्रत्यय निगमित होते हैं। यदि कुछ सम्प्रत्यय, जैसे कारणता या आत्म, सीधे अनुभव–प्रसूत नहीं है तो उनका कोई अर्थपूर्ण उपयोग नहीं है। अनुभववादी मानते हैं कि मन की संरचना अनुभव से इसलिये निर्मित है क्योंकि अनुभव से पूर्व यह रिक्त होता है। विभिन्न संज्ञानात्मक विभाग विभिन्न अनुभवों का परिणाम होते हैं। विभिन्न संस्कृति और सभ्यताएँ इस आधार पर पृथक सम्प्रत्यय बनाती हैं क्योंकि वे भिन्न वातावरण में फलित होती हैं। संस्कृतियों के मध्य समानता की व्याख्या केवल सामान्य सांस्कृतिक प्रत्ययों के द्वारा उत्पन्न अनुभव से ही हो सकती है।

अत, यदि यह सामान्यताओं का जगत नहीं है तो बौद्धिक और यहां तक कि अन्तवयक्तिक बोध भी असम्भव हो जायेगा। तीसरा दावा– सरल, आण्विक प्रत्यय–अनुभव किसी प्रकार की जैविक सम्पूर्णता को धारण करते हैं का खण्डन करता है। अनुभवों के मध्य के सम्बन्ध को केवल भूतकालीन अनुभवों से तुलना करके बाह्य रूप से स्थापित किया जा सकता है। यद्यपि, अनुभव पर सुक्ष्म दृष्टि मूल अन्तरसम्बंधिता, विशेष रूप से जब अनुभव में कल्पना, इच्छा, भाव आदि सम्मिलित होते हैं, को प्रकट कर सकती है। इस अणुवादी विश्लेषण को प्राय सामाजिक सिद्धांत तक, व्यक्तियों की व्याख्या समाज के मूलभूत सामाजिक अणु के रूप में करके और सामाजिक सम्बंधों को स्पष्ट समझौतों के परिणाम के रूप में मान कर, विस्तारित किया जा सकता है। तथापि, यह व्यक्तिवादी स्थिति आधारभूत मानव अधिकारों को आधार प्रदान करती है किन्तु यह प्रायः अधिकारों की रक्षा के लिये संशक्त विधि संस्थानों की आवश्यकता की मांग करती है।

कॉन्टीनेन्टल दार्शनिक प्रायः कहते हैं कि अनुभववादी अनुभवों के आंतरिक सम्बंधों की देशिक एकता की अनदेखी करते हैं और स्वैच्छिक रूप से अनुभव के एक सीमित सम्प्रत्यय की कल्पना करते हैं। उदाहरणतः, संवृतिवादी अनुभवों में निर्देशात्मकता और विभिन्न सचेतन

अवस्थाओं में जटिल रूप से बुनी संरचना को खोजते हैं। ये सब तथ्य अनुभववादियों द्वारा कठिनाई से स्वीकार किये जाते हैं। वे सम्पूर्ण अनुभव की विस्तृत विवेचना, जिसमें संवेग, लक्ष्य, मूल्यन, और कल्पना सम्मिलित है, के साथ–साथ अन्तर–विषयी अनुभवात्मक एकता के स्रोत की खोज पर जोर देते हैं। ऐसी ऐकता ह्यूम के प्रथा के विचार में न्यूनतम स्तर पर पायी जाती है।

चूँकि अनुभववाद ने मानव की महानतम उपलब्धि विज्ञान की निश्चिता के सम्बन्ध में संशयवाद को उत्पन्न किया इसलिये कुछ यूरोपीय दार्शनिकों ने वैकल्पिक व्यवस्थित ज्ञान के सम्प्रयत्यय विकसित किए। हेगेल, मार्क्स, संवृत्तिवादीयों, संरचनावादियों और अन्य ने वैज्ञानिक प्रणाली का विकल्प खोजा जिसमें विस्तारित बौद्धिकता और परिघटनाओं के मध्य के संरचनात्मक सम्बंधों, जो न तो आकस्मिक होते हैं और न प्रत्ययात्मक, को प्रकट करने की आवश्कता थी। यूरोपीय दार्शनिकों ने अनुभववादीयों की इस दृष्टि कि प्रतीति यथार्थ का प्रतिनिधित्व करती है और इसलिये यथार्थ सत का सीधे ज्ञान नहीं हो सकता, का खण्डन किया। उन्होंने जोर दिया कि अनुभव यथार्थ सत् को ज्यों का त्यों या कम से कम इसका वास्तविक चित्र और परिप्रेक्ष्य प्रकट करता है।

11.6 कुंजी शब्द

अनुभववाद : समस्त ज्ञान इन्द्रियों से व्युत्पन्न अनुभव पर आधारित होता है। हमारा ज्ञान प्रत्यक्ष और निरीक्षण पर आधारित होता है। ज्ञान अनुभव के बिना सम्भव नहीं है।

11.7 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

कोलक, डेनियल, *द एक्सपिरियन्स ऑफ फिलॉसोफी*, बेलमॉट, वर्डसवर्क पब्लिशिंग कम्पनी, 1999.

केन्नी, ऐण्टोनी, *ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ वेस्टर्न फिलॉसोफी*, मालदेन एम.ए., लैकेवल पब्लिशिंग लिमि., 1998.

लॉक, जॉन, *एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेण्डिग*, फ्रोथ एडी., आक्सफोर्ड, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1975.

ह्यूम, डेविड, *ए ट्रिटाइज ऑफ ह्यूमन नेचर*, आक्सफोर्ड / न्यूयार्क, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000.

ह्यूम, डेविड, *एन ईन्क्वारी कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेण्डिग*, आक्सफोर्ड/न्यूयार्क, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999.

11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) अनुभववादी यह मानते हैं कि केवल संवेदना जनित ज्ञान की वैध है। ज्ञान के प्रमाणीकरण में अनुभव की इस महत्ता के कारण अनुभववादी अनुभव के लक्षणों, अनअवलोकित सत्ताओं से सम्बन्धित दावों के तात्पर्य, अनुभविक पुष्टिकरण के स्वरूप, और कुछ अन्य प्रकार के दावों जैसे कि तार्किक नियमों और भाषाविज्ञान के आधार पर स्वीकृत दावों, की गैर अनुभविक सम्भावना को लेकर विभिन्न प्रकार के विचार रखते हैं। उनकी स्थिति से सम्बन्धित निश्चित सिद्धांत के आधार पर अनुभववादी अनुभव से स्वतंत्र ज्ञान को केवल उसी अवस्था में स्वीकार कर सकते हैं जबकि ज्ञात विषय जगत से सम्बन्धित वस्तुगत तथ्य न हो बल्कि हमारे द्वारा वस्तुओं के अवधारणीकत करने के ढगों से सम्बन्धित हो। कछ अनुभववादी कहते हैं कि हमें भाषाई अभिव्यक्तियों अथवा क्षुद्रता का ज्ञान होता है, कुछ कहते हैं कि अनअनुभविक तत्वों को पर्याप्त रूप से ज्ञान कहा ही नहीं जा सकता, किन्तु क्या हमें प्रत्ययों को ज्ञानमीमांसीय आधार के बजाय उपयोगिता के आधार पर स्वीकृत होने के रूप में देखना चाहिए। कोई भी अनुभववादी प्रागनुभविक ज्ञान को स्वीकार नहीं कर सकता। उनके अनुसार हमारे पास कोई शुद्ध बौद्धिक अन्तःप्रज्ञात्मक ज्ञान नहीं होता बल्कि हम बाह्य जगत के ज्ञान के लिये पूर्ण रूप से अनुभव पर निर्भर होते हैं। अनुभववाद के कुछ प्रकार परिघटना के पीछे किसी वास्तविक तत्वमीमांसीय संरचना होने का विरोध करते हैं। कुछ अन्य प्रकार के अनुभववादी, अधिक

अज्ञेयवादी है और तर्क करते हैं कि यदि परिघटन के पीछे वास्तव में तत्वमीमांसीय संरचना हो तो या तो वह हमारे ज्ञान के परे है या फिर हम उसे अनुभव के आधार पर जान सकने की सीमा तक, न कि बौद्धिक अनुचिन्तन के द्वारा, ही जान सकते हैं।

2) लॉक तीन प्रकार के ज्ञान को मानते हैं; अन्तःप्रज्ञात्मक, प्रदर्शनात्मक और संवेदनात्मक। यह समझना महत्वपूर्ण है कि उसने यह दावा नहीं किया कि उसका दर्शन सभी निश्चितताओं को खोज सकता है, बल्कि उन्होंने यह कहा कि यह उन वस्तुओं को खोज सकता है जो निश्चित रूप से हमारे बोध से परे है। लॉक के लिए ऐसा ज्ञान सार्वधिक निश्चित होता है और ज्ञान को आधार प्रदान करता है। लॉक के अनुसार, समस्त प्रत्ययों को या सरल या जटिल में वर्गीकृत किया जा सकता है। जटिल प्रत्यय सरल प्रत्यय की अन्य प्रत्यय से तुलना करके बनाये जाते हैं। लॉक ने इस प्रश्न का उत्तर यह कहते हुए दिया कि प्रत्यय उस स्तर तक जगत की बाह्य वस्तुओं को प्रदर्शित करेगे जितना ईश्वर चाहेंगे। प्रदर्शनात्मक ज्ञान उस स्तर का ज्ञान है जिसे हम तार्किक चरणों, कतिपय निश्चितताओं की प्रक्रिया द्वारा प्रकाशित कर जान सकते हैं। ये प्रत्यय मन की विभिन्न तीन क्रियाओं द्वारा बनाते हैं, मिश्रण करना, तुलना करना और अमूर्तीकरण करना।

बोध प्रश्न 2

1) जार्ज बर्कले संभवतः सबसे अनोखे और अद्भुत आधुनिक दार्शनिक हैं। वह भौतिकवादी दर्शन, विशेष रूप से लॉक से असन्तुष्ट थे। बर्कले सहज बुद्धि पर वापिस आते हैं किन्तु बर्कले का सहज बुद्धि विचार न केवल भौतिकवादी संशयवाद को समाहित किये हुए हैं वरन् वह यह भी मानता है कि भौतिक जगत अस्तित्वमान ही नहीं है। बर्कले भौतिक तत्व के खण्डन में परामर्शात्मक तर्कों और अनुभवादी सिद्धांतों का प्रयोग करते हैं। तथापि, जब वह, वास्तव में अस्तित्वमान, की बात करते हैं तो वह जो शुरूआती दावा करते हैं वह उनके तार्किक मानकों पर खरा नहीं उतरता है। बर्कले का तर्क निम्न है;

1) हम यह स्थापित कर चूके हैं कि केवल प्रत्ययों का ही अस्तित्व है और यह कि सत् में प्रत्यय समाविष्ट है।

2) किसी प्रत्यय के अस्तित्वमान होने के लिये उसे किसी न किसी के द्वारा देखा जाना चाहिए।

3) किन्तु वास्तविक वस्तुएं तब भी होती हैं जब उन्हें कोई नहीं देख रहा होता।

4) इसलिये प्रत्यय को यदि कोई व्यक्ति नहीं देख रहा होता है तो उसे कोई और देख रहा होता है।

5) वह कोई और अनन्त मन ईश्वर है।

2) अपनी पुस्तक ए ट्रिटाइज ऑफ ह्यूमन नेचर में ह्यूम अपने पूर्व के दार्शनिकों द्वारा स्थापित कारणता की तत्वमीमांसीय व्याख्या का खण्डन करते हैं। उनके अनुसार, कारणता घटनाओं का नियत अनुक्रम है। जिसमें एक घटना दूसरी घटना का अनवरत अनुसरण करती है। उनकी कारणता की पहली परिभाषा निम्न है; कारण कार्य के पूर्व एवं निकटवर्ती होता है। मेलब्राश के अनुरूप सभी वस्तुएं अनुवर्ती के अनुरूप सभी वस्तुओं के साथ पूर्ववर्ती और समीप्यता से सम्बन्धित होती है। मेलब्राश से तर्क लेते हुए ह्यूम कहते हैं कि कारण कार्य के बीच स्थित किसी अनिवार्य सम्बन्ध का प्रत्यक्ष हमें नहीं होता है। अनुभववादी होने के कारण ह्यूम सभी ज्ञान की उत्पत्ति अनुभव से मानते हैं। वे कारण कार्य के बीच की अनिवार्यता को प्रदर्शनात्मक तर्कों के बीच की अनिवार्यता से पृथक मानते हैं। वे कहते हैं कि कारणता सम्बन्ध का पूर्वानुभविक प्रदर्शन सम्भव नहीं है क्योंकि कारण को बिना इसके कार्य के भी समझा जा सकता है और इसी प्रकार इसका उलट भी सत्य है। वे निष्कर्षतः यह कहते हैं कि कारणता सम्बन्ध की अनिवार्यता को अनुभव से भी सिद्ध नहीं किया जा सकता है।